



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

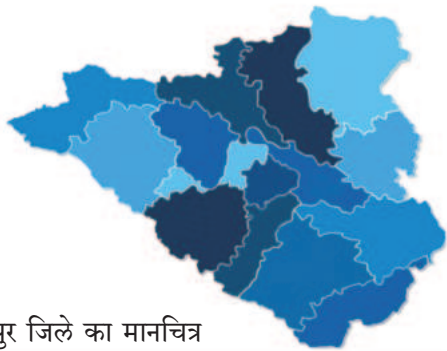


किरण

इकतालीसवां संस्करण 2023-24



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर



नागपुर जिले का मानचित्र



मुंबई - नागपुर द्रुत मार्ग जिसे समृद्धि महामार्ग के नाम से भी जाना जाता है। यह एक छह लेन चौड़ा द्रुत मार्ग है। इसका निर्माण भारत के दो शहर मुंबई और नागपुर को जोड़ने के उद्देश्य से और इनके मध्य यात्रा के समय को कम करने के उद्देश्य से किया गया है।



अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नागपुर (एम्स नागपुर) एक चिकित्सा अनुसंधान सार्वजनिक उच्च शिक्षा संस्थान है जो मल्टी-मॉडल इंटरनेशनल कार्गो हब और नागपुर, महाराष्ट्र, के हवाई अड्डे पर स्थित है। यह जुलाई 2014 में घोषित चार चरणों-IV में से एक है।



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय विमानतल, जिसे सोनेगाँव हवाई अड्डा भी कहा जाता है, यह एक नागरिक अंतरदेशीय और अंतरराष्ट्रीय विमानतल है, जो महाराष्ट्र राज्य के नागपुर शहर में स्थित है।



पेंच राष्ट्रीय उद्यान भारत का सबसे प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। जो विविध वन्य जीवन और शुष्क पर्णपाती जंगल की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश तक फैला हुआ है। यह नागपुर से 70 किमी की दूरी पर स्थित है। इसका नाम पेंच नदी के नाम पर रखा गया है जो पार्क को दो भागों में विभाजित करती है।



नागपुर से 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक ऐतिहासिक और प्रसिद्ध तीर्थस्थल 'रामटेक' है। यह स्थान प्राकृतिक, निसर्गरम्य वातावरण से परिपूर्ण है। रामटेक की सिंधुरागिरी पर्वत श्रृंखला की पहाड़ी पर स्थित प्रभु श्रीराम का मंदिर है और मान्यता है कि प्रभु श्रीराम अपने वनवास के दौरान यहाँ पर रुके थे, इसका उल्लेख वाल्मीकि के रामायण और पद्मपुराण में मिलता है।



गोसीखुर्द प्रकल्प, महाराष्ट्र राज्य के समीप स्थित वैनगंगा नदीपर निर्माण किया गया बांध है। जो जिल्हा भंडारा और तालुका पवनी के अंतर्गत आता है। यह नागपुर और चंद्रपूर जिले के अधिकांश खेती युक्त भूभाग को सिंचाई प्रदान करता है।

किरण परिवार

संरक्षक



श्री अक्षय मोहन खंडारे
वरिष्ठ उप महालेखाकार



सुश्री जया भगत
प्रधान महालेखाकार



डॉ. भुषण बी. भीरुड
वरिष्ठ उप महालेखाकार

प्रधान संपादक



सुश्री सारिका पाटील
वरिष्ठ लेखाधिकारी

प्रधान संपादक



श्री सी. एल. पिन्हेरो
वरिष्ठ लेखाधिकारी

संपादक



श्री प्रशांत त्रि. कपाले
प्रभारी हिन्दी अधिकारी

चयन समिति



श्री पी. एम. मोहिते
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



श्रीमती आशा बैद
सहायक लेखा अधिकारी



श्रीमती सुमन मिश्रा
सहायक लेखा अधिकारी

सह-संपादक



डॉ. नयना वि. पाटील
हिन्दी अधिकारी

संपादन समिति



श्री विष्णु उ. रामटेके
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
(i)



कुमारी प्रियंका
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अनुक्रमिका

विधा	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ
	संदेश		iii-x
कविता	प्रकृति की गोद में	श्री अक्षय मोहन खंडारे	1
कविता	उड़ान	श्रीमती सुमन मिश्रा	2
कविता	हम मगर कम ही इंसान बने	श्री सैय्यद इकबाल अली (से.नि.)	2
लेख	मलीन बस्ती	कुमारी प्रियंका	3
लेख	हमने सोचा न था	श्री प्रशांत त्रि. कपाले	5
लेख	रंगोली से सकारात्मकता	श्रीमती रुचिका कपाले	8
कविता	वनगमन	श्री विद्याकर पाठक	10
लेख	लाईफ सेटिस्फेक्शन, जॉब सेटिस्फेक्शन	श्री विरेन्द्र देवघरे (से.नि.)	11
लेख	विश्वास	श्री यशवंत खापरे	13
लेख	सत्यमवे जयते	श्री संतोष कुमार	15
लेख	कठिनाईयों एवं असफलताओं से कभी ना माने हार	श्री बाल बिहारी प्रजापति	18
कविता	हम कहाँ से कहाँ आ गए	श्री गणेश बी. खरबीकर	20
लेख	सकारात्मक चिंतन के लिए जरूरी बातें (टिप्स)	श्री मनिष कुमार	22
लेख	चंद्रयान - 3	श्री शक्ति सिंह	24
उपलब्धी	सर्वश्रेष्ठ अंपायर	श्री उल्हास गंधे	25
लेख	पंचायती राजव्यवस्था	श्री गौरव सिंह परिहार	26
लेख	कृत्रिम बुद्धिमता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	श्री प्रशांत पांडे	27
लेख	टुनटुना	श्री गणेश बी. खरबीकर	29
लेख	नागपुर प्रगति की ओर बढ़ते कदम	श्री सी. एल. पिन्हेरो	31
कविता	भीड़	श्रीमती रीचा	33
लेख	राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस)	श्री महेश सुभाष ईशी	34
लेख	भूटान पर्यटन	श्रीमती सविता प्रशांत कपाले	36
कविता	जीवन एक श्रृंगार है	श्री बाल बिहारी प्रजापति	41
कविता	अभी भी बाकी है	श्री आकाश कुमार	43
कविता	रेशम की डोर	श्री सैय्यद इकबाल अली (से.नि.)	43
लेख	उन्नति	श्री लालचंद फड्यानी (से.नि.)	44
कविता	मंजिल	श्री अर्थव गोसावी	45
लेख	किस्सा वेतन का	श्री प्रशांत त्रि. कपाले	46
लेख	समाधान	श्री अनिल वैष्णव	47
*	इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश (ई-पीपीओ)		49
*	का कार्यालय में शुभारंभ		
*	कार्यालय समाचार		50
*	ऑडिट सप्ताह अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन		53
*	राजभाषा समाचार		58
*	हिन्दी पखवाड़ा-2023 का सफल आयोजन		62
*	भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं निर्धारित लक्ष्य		66

अस्वीकरण : “पत्रिका में व्यक्त विचार, रचनाकारों के निजी विचार हैं व प्रकाशित रचना में प्रस्तुत तथ्य, आँकड़े व व्याख्या की प्रामाणिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं। प्रकाशित रचना से संपादक मंडल/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इससे उत्पन्न किसी भी वाद-विवाद की जिम्मेदारी ‘किरण परिवार’ अस्वीकार करता है। - - प्रधान संपादक एवं संपादक



सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

विदेश मंत्रालय और विदेश स्थित भारतीय मिशनों एवं केन्द्रों द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इन कार्यक्रमों में भाग ले रहे सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं।

अपनी सांस्कृतिक विविधता व विभिन्न भाषाओं की विरासत पर हर भारतवंशी को गर्व है। हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान और परंपरा को देश-दुनिया में पहुंचाने में हिन्दी की भूमिका अहम् है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान और भारतवंशियों को एकता के सूत्र में पिरोने में हिन्दी भाषा का योगदान उल्लेखनीय है।

यह देखना सुखद है कि अपनी सरलता, सहजता व साहित्यिक विरासत के साथ-साथ हिन्दी आज सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक की भाषा के रूप में भी युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। भारत की प्रगति के साथ ही हमारी पहचान और परंपराओं में दुनिया की रुचि बढ़ रही है। विदेशों में भी हिन्दी भाषा सीखने वाले लोगों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

पिछले वर्ष हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन में जिस उत्साह के साथ हिन्दी प्रेमियों ने इस मधुर भाषा की प्रगति के लिए कार्य करने का संकल्प दिखाया वह एक उज्ज्वल भविष्य का मार्ग दिखाता है। हमारी समृद्ध विरासत पर गर्व के भाव को और सशक्त करने व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोगों में एकता व एकजुटता को बढ़ाने में हिन्दी की अहम् भूमिका होगी।

मुझे विश्वास है कि यह विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम सभी भारतवंशियों को, विशेषकर युवाओं को हिन्दी से जुड़ने और इसे अपने विभिन्न कार्यों में अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

विश्व हिन्दी दिवस पर मैं इसे समृद्ध और सशक्त बनाने में सतत योगदान दे रहे लोगों का, विशेषकर विदेश मंत्रालय, भारतीय मिशनों और केन्द्रों के सभी साथियों का अभिनंदन करता हूं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 15, शक संवत् 1945
05 जनवरी, 2024



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



कार्यालयीन हिन्दी गृह-पत्रिका किरण के 41 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। विभागीय पत्रिकाएँ राजभाषा नीति के प्रचार और प्रसार के दृष्टिकोण से एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनशीलता तथा रचनात्मकता प्रदर्शित होती है, जो हिन्दी के सरल, सुलभ एवं सुगम्य प्रयोग को दृष्टांकित कर, उद्देश्य की परिपूर्णता को दर्शाती है।

भाषा, संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा हिन्दी विभिन्न भाषा-भाषियों तथा संस्कृतियों के मध्य सेतु का कार्य करती है। हिन्दी भाषा, अन्य देशी और विदेशी भाषाओं के शब्दों को सहज रूप से आत्मसात करने का सामर्थ्य रखती है। हिन्दी भाषा अपनी इसी विशेषता के कारण दिन-प्रतिदिन विश्व में अपना वर्चस्व बढ़ाने में सफल हो रही है।

पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में कार्यान्वित हो रही व्यापक और प्रगतिशील गतिविधियों की जानकारी सहज रूप से प्राप्त होती है। उदाहरण स्वरूप कार्यालय में पेंशनभोगियों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए “पेंशनर्स समाधान” और ई-पीपीओ जैसे लाभकारी उपक्रमों को कार्यान्वित किया गया है। साथ ही ई-जीपीफ और ई-डाक जैसी हितकारी योजनाओं को भी प्रारंभ करने के पथ पर अग्रसर है।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

जया भगत

जया भगत

प्रधान महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



‘किरण’ के इकतालीस वें (41 वें) अंक के प्रकाशन का साक्षी बनना मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हमारी कार्यालयीन पत्रिका ‘किरण’ के 41 वें अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

हमारे लिए हिन्दी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। इसलिए हम सभी को हिन्दी का सतत प्रयोग करना होगा तथा दूसरी भाषाओं, बोलियों से नए शब्दों को जोड़ते हुए शाब्दिक रूप से अधिक सरल, लचीला तथा समृद्ध बनाते रहना होगा ताकि ‘हिन्दी’ विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के साथ-साथ विश्व की सर्वोच्च शक्तिशाली भाषाओं की सूची में अपना स्थान पा सके।

हिन्दी का विकास एवं प्रसार करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। हमें इसे संवैधानिक दायित्व के साथ-साथ अपना व्यक्तिगत कर्तव्य भी समझना चाहिए।

मैं, किरण पत्रिका में योगदान के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक-मण्डल को बधाई देना चाहूँगा जिनके निरंतर प्रयास व लगन से ‘किरण’ पत्रिका 41 वें संस्करण तक पहुँच पाई और मुझे विश्वास है कि प्रत्येक संस्करण की भांति इस संस्करण की रचनाएँ भी पाठकों से खूब स्नेह और सौहार्द प्राप्त करेगी।

पुनश्च हार्दिक शुभकामनाएँ और धन्यवाद!

अक्षय मोहन खंडारे

वरिष्ठ उप महालेखाकार
एवं राजभाषा अधिकारी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



आप सभी को यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'किरण' अपने और एक पड़ाव से आगे बढ़कर इकतालीस वे (41 वें) संस्करण पर पहुँच गई हैं।

जिस प्रकार हिन्दी भाषा ने स्वतंत्रता आंदोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बांधने का अभूतपूर्व कार्य किया। उसी प्रकार, इस पत्रिका ने, कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी भाषा के रूप में, एक सूत्र में बांधने का कार्य किया है। हमारा यह प्रयास किस हद तक सफल हो रहा है इसका अनुमान हम आप सभी से निरंतर प्रत्येक संस्करण के लिए प्राप्त रचनाओं से लगा सकते हैं। इस प्रकार 'किरण' पत्रिका हमारे कार्यालय में हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने में एक सफल एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मैं, 'किरण' पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक-मण्डल को बधाई देता हूँ। साथ ही साथ पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

भूषण

डॉ. भूषण बी. भीरुड

वरिष्ठ उप महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश



हमारे कार्यालय की पत्रिका 'किरण' के 41 वें अंक को आपके समक्ष रखते हुए मुझे गर्व और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशन हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों का प्रतिफल है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की विशिष्ट पहचान होती है और देश की मौलिक सोच, राजकीय काम-काज और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायने में अपनी भाषा में ही की जा सकती है। भाषा की अभिव्यक्ति एक विस्तृत भूभाग में फैले समाज को संगठित रखने और समाज में एकता बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सरकारी कामकाज में संघ सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का अनुपालन करना हमारा परम कर्तव्य है और अनुपालन के लिए हम दृढ़ संकल्पित हैं। हमे सरकारी काम-काज में हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग भी करना चाहिए और अन्य भाषाओं के नए शब्दों के ग्रहण से संकोच नहीं करना चाहिए।

कार्यालयीन पत्रिका अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सृजनात्मकता, साहित्य रुचि और वैचारिक सकारात्मकता का प्रतीक है। हमे, इस पत्रिका से संबन्धित सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

'किरण' 41 वें अंक के प्रकाशन पर हम आप सभी का अभिनंदन करते हैं।

धन्यवाद!

सापेक्षित

सुश्री सारिका पाटील

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (कल्याण एवं राजभाषा)

सी. एल. पिन्हेरो

सी. एल. पिन्हेरो

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संपादकीय

मित्रों, आपकी अपनी हिन्दी पत्रिका 'किरण' का 41 वाँ अंक अब आपके समक्ष है। हम सबकी ये अभिव्यक्ति अपनी सुखद यात्रा के इकतालीसवें पड़ाव पर सकुशल पंहूच रही है। निर्विघ्न यात्रा के लिए आप सभी समान रूप से बधाई के पात्र हैं।

विश्व में किसी भी देश की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से ही होती है। प्रत्येक देश की अपनी एक विशेष राजभाषा, मातृभाषा और संस्कृति है, जिससे अन्य देशों में उसकी अपनी पहचान बनी रहती है। भाषा के माध्यम से ही दर्शन, साहित्य और काव्य में किसी विशिष्ट मानव समुदाय एवं राष्ट्र की अपनी पहचान प्रतिबिंबित होती है। भाषा वैश्विक समन्वय का सूत्र है और हमें आपस में जोड़ने की एक अटूट कड़ी है।

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग अपेक्षाकृत आंकड़ों से जुड़ा विभाग है परंतु भाषा के प्रति हमारी सजगता, तन्मयता एवं दायित्व को भी कम नहीं आंका जा सकता है। कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करते हुए अपनी प्रतिभा, अभिरुची और हिन्दी के प्रति प्रेम हमारे कार्यालय के पदधारियों को लेखक बनाने की क्षमता प्रदान कर रहा है, इसका यह अंक प्रमाण है।

कार्यालयीन पत्रिका की अपनी सीमाएं होती हैं परंतु रचनाकारों के सहयोग से ही इस पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हो रहा है। उन्हें मनःपूर्वक धन्यवाद ! हम उनके इस सहयोग की सराहना करते हैं और चाहते हैं कि इसमें अधिक से अधिक रचनाकार भाग लें एवं अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करें।

हमारे कार्यालय की प्रधान महालेखाकार महोदया एवं सभी वरिष्ठ उप महालेखाकार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा) को हमें निरंतर प्रोत्साहित करने हेतु आभार प्रकट करते हैं।

विगत अंक हेतु प्राप्त प्रतिक्रियाओं के लिए आभार प्रकट करते हुए हम आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध करते हैं कि अपनी प्रतिक्रियाएं भेजते रहे ताकि हमारी पत्रिका उत्कृष्टता के नए-नए क्षितिज छुएं।

शुभकामनाओं सहित।

नयना

डॉ. नयना विलास पाटील
हिन्दी अधिकारी

प्र.त्रि. कपाळे

प्रशांत त्रिंबक कपाले
प्रभारी हिन्दी अधिकारी (सेवानिवृत्त)



श्री अक्षय मोहन खंडारे
वरिष्ठ उप महालेखाकार



प्रकृति के गोद में

पंछी चहचहा रहे हैं,
कोमल पत्ते डोल रहे हैं।

शाम हौले-हौले अपना लबादा ओढ़ रही है।
केसरियाँ है आसमाँ,
धरती पर बिछी हरी घास की है चादर,

क्यारियों में महकते फूल
अपनी मस्ती में झुम रहे हैं।

टिड्डियों का दल,
साथी संग कोलाहल करता

शरारती चाँद अपनी,
खुबसुरती पर इतरा रहा।

दूर कही मंदिर में बजती घंटियाँ,
इन गुजरते लम्हों को जगा रही है।

इनमें मैं खुद को, ऐसा घिरा पाता हूँ,
जैसे गहरे सागर बीच कोई नाव हो

तारों भरे आसमाँ से,
जैसे मैं, तेजी से फिसला जा रहा हूँ।

स्वच्छंदता यहाँ और कुछ भी नहीं,
बस यही अनुभूती, सर्वोच्च की प्राप्ती है,

इसी में मैं, सहज हूँ।
इसी की खोज में रहता हूँ।





श्रीमती सुमन मिश्रा
सहायक लेखा अधिकारी

उड़ान

भरोगी जब तुम उड़ान
कई खैरख्वाह आयेंगे
रास्ते की मुश्किलों से
वाकिफ कराने।

कुछ आएँगे
तुम्हे समझाने कि,
काबिल नहीं हुई हो अभी
ऊँचाइयाँ नापने के।

हमराज भी आएँगे,
ये एहसास दिलाने
क्यों ज़ाया करती हो समय,
अभी जिंदगी के मक़ाँ और हैं।

हमदर्द होंगे कई,
जो पिछली शिकस्त और
चोटों का हवाला देंगे।

और फिर भी अड़ी रही जो तुम,
तो छलनी कर देंगे
सीना तुम्हारा विषबाणों से।

सुनो तुम घबराना नहीं
तुम धरा पर हो
मजबूती से,
या उड़ रही हो आसमान में

ये अंदाजा उन्हें लगाने दो
जिन्हें तुम्हारी उड़ान से डर है॥



श्री सैय्यद इकबाल अली
सेवानिवृत्त सहायक लेखा अधिकारी

हम मगर, कम ही इंसान बने ...

कोई हिंदू, कोई ईसाई, कोई मुसलमान बने
सब बने हम मगर, कम ही इंसान बने।

वैर के, घृणा के, हमे कितने हुनर आते है
पढ़ लिख कर भी हम उजड़* से नजर आते हैं
उसने सोचा था के हम प्रेम का पैगाम बने।

धर्म आए थे कि हम प्यार से जीना सीखे
स्नेह के दीप जलाएं मानवीयता को सिचे
धर्म के नाम पर हम कितने हैवान बने।

राम की भूमि, नानक की जमीन, बुद्ध की धरती
**दीपदंड नगर-नगर हिंसा की क्यों है जलती
फूंक दो क्रोध के रावण को, चलो राम बने।

भिन्न-भिन्न फूलों के खिलने से बने बागीचा
पुष्प बहुरंगी एकत्रित हो तो बने गुलदस्ता
एक ही रंग का क्यों मेरा हिंदोस्तान बने।

सब बने हम मगर कम ही इंसान बने
कोई हिंदू, कोई ईसाई, कोई मुसलमान बने

दीपदंड = मशाल**

उजड़ = अनपढ़*





कुमारी प्रियंका
कनिष्ठ अनुवादक

मलिन बस्ती

यह उन दिनों की बात है जब मैं स्नातक के प्रथम वर्ष के दौरान, पास ही की बस्ती में रहने वाले कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाया करती थी। उस दौरान मैंने, मलिन बस्तियों की उत्पत्ति, वहाँ रहने वाले लोगों की जीवन-शैली और अन्य बहुत कुछ काफी नजदीक से महसूस किया। जो आज मैं अपने पाठकों से सांझा करने जा रही हूँ।

गंदी बस्तियों को साफ करने वाले परामर्श डाटा समिति के अनुसार भारत के औद्योगिक नगरों में 7 से 50 प्रतिशत तक लोग गंदी बस्तियों में रहते हैं। अकेले कोलकता नगर में 6 लाख लोग गंदी बस्तियों में रहते हैं और देश में लगभग 115 लाख से भी अधिक श्रमिक गंदी बस्तियों में रहकर अपना गुजारा करते हैं। महाराष्ट्र राज्य के मुंबई में स्थित 'धारावी' पूरे विश्व की सबसे बड़ी और घनी बस्ती है।

मैंने मलिन बस्तियों को बहुत ही नजदीकी से देखा और अनुभव किया है। स्नातक के दौरान दो-तीन वर्षों तक कोलकाता के कालीघाट और रासबिहारी क्षेत्र में स्थित मलिन बस्तियों में ट्यूशन पढ़ाया करती थी। इन वर्षों के दौरान, मैंने मलिन बस्तियों की उत्पत्ति के पीछे अनेक कारणों को महसूस किया। निर्धनता, शहरों में बढ़ते औद्योगिकरण, जनसंख्या वृद्धि और अकाल, बाढ़, सूखा आदि जैसी प्राकृतिक आपदाएँ बस्तियों के निर्माण में हमेशा से प्रमुख कारण बनी रही हैं। इस प्रकार

शहरों के सीमांत क्षेत्रों में दिन-प्रतिदिन मलिन बस्तियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

इन बस्तियों में न तो बिजली की सुविधा होती है और न ही पीने के लिए शुद्ध और स्वच्छ जल उपलब्ध होते हैं। यहाँ सारे घर कच्चे होते हैं। वर्षा के समय पानी का जमाव, बदबू, मच्छर तो यहाँ रहने वालों के लिए आम बात हैं। जहाँ हम जैसे लोग पाँच मिनट भी नहीं ठहर सकते, वहाँ ये लोग पीढ़ी दर पीढ़ी बिता देते हैं। शिक्षा और स्वच्छता जैसी चीजों से ये लोग आज भी कोसों दूर हैं। यह सब केवल सोचने मात्र से ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मलिन बस्ती में रहने वाले लोग कम वेतन पर काम करते हैं। कम मजदूरी के कारण, वे अल्पपोषित एवं बीमारियों से ग्रस्त होते हैं। वे अपने बच्चों को उचित शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं देने में सक्षम नहीं होते हैं। गरीबी के कारण, ये लोग नशीली दवाओं के दुरुपयोग, अपराध, उदासीनता जैसी चीजों में लिप्त होते जाते हैं।

मैंने अपने जीवन के तीन वर्षों के दौरान मलिन बस्ती के बच्चों को शिक्षा देते समय बहुत कुछ अनुभव किया है। जैसे कि आए दिन का लड़ाई-झगड़ा होना, पुछने पर पता चलता था कि झगड़े का कारण कभी भूख, तो कभी पैसे की तंगी है। पैसे की तंगी से उचित इलाज के अभाव में बच्चे, जवान व बुजुर्ग असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। शायद ही ये लोग अपने बच्चों को किसी त्योहार पर नए कपड़े दिला पाते हैं।

इनके बच्चे भूख मिटाने के लिए पढ़ाई छोड़कर बोरी लेकर सुबह-सुबह कूड़ा-करकट बीनने निकल जाते हैं और फिर उसे बेचकर अपना पेट पालते हैं। बड़े होने पर, ये बच्चे कारखानों व होटलों में कम पैसों पर मजदूरी करते हैं। औरतें दूसरों के घर में बर्तन, कपड़े धोकर अपने परिवार का गुजारा करती हैं।

अगर हम इनकी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करें, तो यह कम आसान तो नहीं है लेकिन मुश्किल भी नहीं है। औसतन प्रति वर्ष देश में लगभग 20 लाख आवासों की मांग उत्पन्न होती है, पर इतनी बड़ी मांग को पूर्ण करना कोई आसान काम नहीं है। The Planning Commission Working Group On Social Welfare के अनुसार इन बस्तियों में रहने वाले लोगो की समस्याएँ इतनी हैं कि इनको खत्म करते-करते अगले एक दशक की अवधि भी कम पड़ सकता है।

लेकिन हम चाहे तो व्यक्तिगत रूप से और स्वेच्छा से आगे बढ़ कर इनकी अनेक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। हम कुछ कर सके या नहीं लेकिन एक शिक्षित नागरिक होने के नाते हम अपने खाली समय में बस्तियों में जाकर उन्हें शिक्षा और स्वच्छता के महत्व को समझा सकते हैं। अपनी पुरानी पुस्तके उन्हें देकर उन्हें निशुल्क शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। हमारे पास जो भी शिक्षा और कला का ज्ञान है, उन्हें देकर हम उन्हें आत्मनिर्भर बना सकते हैं। आर्थिक तंगी के कारण यहाँ रहने वाले बच्चे फटे-पुराने, मैले-कुचले कपड़े पहने रहते हैं। नए कपड़े न सही लेकिन अगर हम इन्हें अपने पुराने कपड़े ही दे तो इनके खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। शीत ऋतु में ऊनी कपड़े न होने से ये ठिठुरते रहते हैं। अगर हम अपने पुराने ऊनी कपड़े भी दे तो उन्हें कुछ राहत मिल सकती है।

समय नहीं है कि इन मलिन बस्तियों के बच्चों को अपने बच्चों की भांति जागरूक करें। जागरूकता के अभाव में, ये बच्चे मादक वस्तुओं का सेवन करने लगते हैं। कुछ बच्चे तो चंद पैसों के लालच में आकर गलत कामों या हिंसात्मक प्रवृत्ति वाले गिरह में फँस जाते हैं और अपना पूरा जीवन बर्बाद कर लेते हैं। अगर समय रहते इनको कोई समझाने वाले हो जिससे वे जीवन का थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकें, तो शायद ये भी एक सफल और अच्छे नागरिक बन सकते हैं। हम खाली समय में इनके पास जाकर जीवन के अच्छे-बुरे का ज्ञान देकर, इन्हें गलत कार्य करने से बचा सकते हैं।

अत्यंत गंदे वातावरण में रहने के कारण, ये लोग एक स्वस्थ जीवन का आनंद नहीं ले पाते। ये विभिन्न रोगों से ग्रस्त रहते हैं। कई दिनों तक बिना नहाए और गंदे कपड़े पहने रहने के कारण, ये विभिन्न रोगों से ग्रसित रहते हैं। और फिर पैसों की तंगी में इलाज न होने से मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। अगर हम समय रहते इन्हें स्वच्छता का महत्व बता दें तो ये अनेक बीमारियों के प्रकोप से बच सकते हैं।

वर्तमान समय में, केंद्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय सरकार अपने-अपने स्तर पर इन लोगो की समस्याओं का समाधान करने के लिए कई योजनाएँ चला रही हैं। अनेक गैर-सरकारी संस्थाएँ (NGO) भी इनकी सहायता करने सामने आ रही हैं। अगर हम सभी भी अपने-अपने स्तर पर इन्हें थोड़ा-बहुत भी सहयोग दे तो वे बहुत जल्द ही भारत के प्रत्येक नागरिक के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेंगे और महात्मा गाँधी जी का सर्वोदय विकास का सपना पूरा हो जाएगा।

❖❖❖

भाग-दौड़ भरी जिंदगी में आज किसी के पास



श्री प्रशांत त्रि. कपाले
प्रभारी हिंदी अधिकारी

... हमने सोचा न था

यह उन दिनों की बात है जब हम कॉलेज में पढ़ाई करते थे। यह 1983 की बात है। मैंने बी.कॉम. के प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था। यह कहानी, उन सभी सुंदर युवतीयों को समर्पित है जो कॉलेज के दिनों में मेरे दिल की धड़कन को बढ़ाने में अनायास मदद करती थीं। मैं उस समय स्टाफ सिलेक्शन कमिशन (SSC) की तैयारी कर रहा था। जुलाई माह में कॉलेज शुरू हुआ। और करीब ही की लाईब्ररी में सुबह-शाम पढ़ता था और दिन में कॉलेज जाया करता था। उस समय मेरे सामने दो ही उद्देश्य थे एक बी.कॉम की पढ़ाई और दूसरा उद्देश्य जल्द-से-जल्द नौकरी पाकर अपने पैरों पर खड़ा होना था। इस बीच SSC का नोटिफिकेशन आया। मैंने फॉर्म भर लिया और टायपिंग का क्लास भी लगवाया। साथ ही बैंकिंग परीक्षा की तैयारी भी ज़ोरों पर थी।

हमारा संयुक्त परिवार था। हमारा किराए का मकान था। जो छोटा ज़रूर था, परंतु उसमें एक बगीचा था, जिसमें स्थित आम का पेड़ प्रतिदिन नई ऊर्जा प्रदान करता था। मकान मालिक सु-स्वभावी थे। वे भी ऐसे ही संयुक्त परिवार में पले-बड़े हुए थे। वे दो भाई थे, उनके भाई का परिवार त्यौहार, शादी-ब्याह में भोपाल से उनके यहाँ आया करता था। उनकी तीन बेटियाँ थीं। सभी कॉलेज में पढ़ रही थीं। अंकल मध्यप्रदेश राज्य सरकार में भोपाल में कार्यरत थे। वे कभी कभार मेरी शिक्षा तथा गतिविधियों के बारे में जानकारी लेते थे। ग्रीष्म में कभी-कभार पूरा परिवार साथ बैठकर ताश खेला करते थे।

समय बितता गया मुझे बी कॉम के द्वितीय वर्ष के सितम्बर माह में इस कार्यालय में नौकरी मिल गई। फिर भी मैंने बैंकिंग परीक्षा की तैयारी जारी रखी। एक बार, मैं मध्यप्रदेश बैंकिंग बोर्ड की परीक्षा के लिए भोपाल गया जो गैस-त्रासदी के तुरंत बाद फरवरी 1984 में भोपाल में हुई थी जहाँ मैं अंकल के घर दो दिन तक रुका। हिन्दी भाषी प्रदेश के व्यक्ति काफी आवभगत करनेवाले होते हैं इसका मुझे परिचय हुआ। मई माह के दौरान मेरे भैया की शादी हो गयी जिससे हमें मकान छोटा पड़ने लगा। हमने मकान बदलने का निर्णय लिया। नया मकान जो सभी सुख-सुविधा की दृष्टि से संपूर्ण ज़रूर था परंतु पुराने मकान से काफी दूर था। मैं पुराने दोस्तों, पड़ोसियों से मिलने सप्ताह में 1-2 बार कभी जाया करता था।

एक दिन शाम को घर पहुँचते ही मैंने देखा कि अंकल घर पर आए हुए थे और वे उनकी द्वितीय कन्या के विवाह का कार्ड देकर चले गए और साथ ही उन्होंने सभी को शादी में आने के लिए कहा। हम सपरिवार शादी में शामिल हुए, पुरा परिवार काफी खुश था। तब मैंने यह महसूस किया कि परिवार में कितना बदलाव आया है। साथ ही उन्होंने उनकी छोटी बेटी 'दिशा' के भोपाल के पास स्टेट बैंक में सर्विस ज्वाइन करने की खुश-खबरी दी। अब वह काफी सुन्दर तथा आकर्षक भी दिख रही थी। गले में मोती की माला पहने हुए थी तथा मुझ से बाते करते करते माला के साथ खेल रही थी। अंकल जाते-जाते बोले, हम सप्ताह भर यहाँ हैं, गप्पे मारने आ जाना! मैंने सोचा अभी तो शादी प्रसंग में मुलाकात हुई है फिर क्या उनके घर जाना और मैं मिलने नहीं गया।

कुछ माह बाद अंकल और 'दिशा' घर आए और उनके पेंशन संबंधी काफी बातें हुई और कुछ समय के लिए बाहर गए। फिर हमने काफी देर तक बातें की उसने मुझसे मेरे भविष्य के बारे में, मेरे शौक, शिक्षा और मुझे किस तरह की लड़की पसंद है इत्यादी के बारे में पूछ लिया। मैंने सभी के जवाब तो दिए परंतु आखिरी सवाल का जवाब 'सोच कर बताता हूँ' कहते हुए मजाक में टाल दिया। फिर अंकल आए, जाते-जाते कह गए अगले माह में सेवानिवृत्ति है, सोचा था 'दिशा' का ब्याह भी सेवानिवृत्ति के पूर्व करना था वह अब बाकी रह गया। फिर मुझे भोपाल पर्यटन हेतु घूमने आने का निमंत्रण दिया। सेवानिवृत्ति के बाद अगले माह फिर वे सपरिवार नागपुर किसी कार्य आए थे, मुझे मिलने बुलाया था मैंने फिर सोचा कि कुछ दिनों पूर्व ही तो हम मिले थे इनसे जाकर मैं फिर क्या बातें करूँ मैंने जाना टाल दिया। कुछ माह बाद मेरे दोस्त (उसके चचेरे भाई) ने मुझसे पूछा कि मैं घर उनसे मिलने भी नहीं आया। मैंने मेरे व्यस्त होने का कारण दिया और कुछ बोल कर बात पलट दी। अफसोस, मुझे नहीं पता था उस घर में मेरे जीवन को 'दिशा' देने, कोई मेरा 'इंतजार' कर रही थी। नवंबर के एक शाम अंकल दिशा के शादी का निमंत्रण लेकर घर आए थे अर्थात् शादी भोपाल में ही थी। मैंने कुछ दिन पूर्व ही मेरे दक्षिण भारत के पर्यटन हेतु दूर बुक किया हुआ था। उस समय मुझे यह बात 'अब' समझ में आयी कि कुछ बातों को समझने के लिए हमें काफी देर लग जाती है और हम अंत तक समझ नहीं पाते।

मेरा कॉलेज का मित्र है, मूलतः वह दक्षिण क्षेत्र 'केरल' से है। पिताजी का स्थानांतरण नागपुर में होने के कारण कुछ वर्ष वे सहपरिवार नागपुर में थे। उनके पिताजी का स्थानांतरण फिर मुख्यालय में होने के कारण उसके अभिभावक केरल चले गये। इस दौरान हम दोनों की कॉलेज की पढ़ाई चल रही थी और

प्रतियोगी परीक्षाएँ भी दे रहे थे। इस कारण वह नागपुर में ही हॉस्टल में रहकर अपनी शिक्षा ले रहा था। मेरे साथ साथ ही वह कुछ प्रतियोगी परीक्षा भी दे रहा था। हम दोनों ही कुछ समय के अंतराल में सरकारी सेवा में अलग अलग कार्यालय में जॉइन हुए। वह पढ़ने में काफ़ी होशियार था अपनी प्रतिभा का फायदा लेकर वह अपनी नौकरी के साथ-साथ खाली समय में दसवीं से लेकर स्नातक तक ट्यूशन भी लेता था।

उसने अपने केरल तबादले के लिए काफ़ी प्रयास किये। एक दो बार दिल्ली भी जाकर आया। उसका स्वभाव भी मिलनसार होने के कारण कार्यालय में अल्पावधि में बहुत लोकप्रिय हुआ। एक बार स्वतंत्रता दिवस समारोह के पश्चात् उसने अपने तबादले के लिए कार्यालय प्रधान के समक्ष अपना पक्ष रखा। कार्यालय प्रधान ने उसके स्थानांतरण के लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया तथा उसे अगले हफ़्ते मिलने को कहा। अगले सप्ताह वह कार्यालय प्रमुख से मिलने भी गया था परंतु सचिवालय के सचिव व निजी सहायक ने उसे मिलने नहीं दिया। माह भर बाद एक दिन कार्यालय प्रधान के आवास पर जाकर मिलने का प्रयास किया, वहाँ भी उसे मिलने नहीं दिया। अप्रैल माह में माननीय महोदय का तबादला उत्तरपूर्व राज्य में हुआ, बने बनाए कार्य में विफलता मिली।

हताश होकर दोस्त ने अपना ट्यूशन का दायरा बढ़ाया। अब वह कार्यालयीन परीक्षाओं की भी ट्यूशन लिया करता था। उसी दौरान उसे ट्यूशन की छात्रा से प्यार हो गया "आमी तोमाके भालोभाशी" से शुरूवात हो गई अर्थात् फिर दक्षिण तट का पूर्व तट से मिलन हुआ। आखिर हमारे मित्र केरल जाने से चूँक गए। उसका परिवार भी बेटे की खुशी में शामिल था।

आज यह सब याद आने और लिखने का औचित्य यह है कि आज उसकी सेवानिवृत्ती का दिन है। आज उसकी पत्नी, बेटा और एक बेटी भी कार्यालय में पिताजी को लेने आए थे, उनके साथ उसके माता-पिता केरल से आए हुए हैं। पिता और माता पारंपरिक पोशाक में सफ़ेद लूंगी तथा सफ़ेद साड़ी, बालों में बड़ा सा गजरा लगाए हुए हैं। अपने बेटे को सेवानिवृत्ती पर लेने आए हैं। कार्यालय के गेट पर बड़ा माहौल बना था। दोस्त के कार्यालय छोड़ कर जाने का मुझे दुख जरूर था। किंतु हर किसी को सेवानिवृत्ती तो लगी रहती है।

मेरा एक अच्छा दोस्त है, जो मेरे साथ कॉलेज में था परन्तु दो साल पढ़ाई में आगे था। मैंने जल्दी ज्वाइन किया तथा वह मुझसे थोड़ा बड़ा होने के कारण उसने मेरे दो साल बाद ऑफिस ज्वाइन किया। आज उसकी भी सेवानिवृत्ती का दिन है। यह उन दिनों की बात है जब उसके शादी के चर्चे चल रहे थे, विवाह मंडल में उसका नाम उसके परिवार वालों ने दर्ज किया था। जाहिर है थोड़ी उम्र ज्यादा होने के कारण तथा पत्रिकागुण-मिलन, पत्रिका में मंगलग्रह का राशी स्थान होने के कारण शादी तय नहीं हो रही थी। कही गुण-मेल न जुड़ जाता तो कही कन्या को दोस्त पसंद नहीं आता या उसे कन्या पसंद नहीं आती।

मार्च का महीना था। किसी रिश्तेदार की ओर से 'अकोला' शहर से रिश्ता आया। जो सभी तरह से उचित था। परिवार में बातें हुईं। उस जमाने में ना तो मोबाईल था ना ही व्हाट्स-एप। केवल फोन था। शनिवार को अकोला जाना तय हुआ। हमारा दोस्त उनकी माता किसी दूर के रिश्तेदार के यहाँ कुछ देर के लिए रुके और लड़की देखने के लिए पुराने शहर से ऑटो से निकले। कुछ देर बाद किसी वाहन को ओवरटेक करते हुए उनका ऑटो पलट गया। तीनों को कुछ मामूली चोटें आयीं। जिस चौक पर ऑटो पलटा

था उसके सामने ही एक परिवार रहता था। दुर्घटना की आवाज सुन कर परिवार के सदस्य बाहर आये। उन्होंने देखा तीनों को खरोंच आयी है। वे दोस्त तथा परिवार को घर ले गए। प्राथमिक उपचार करवाया। चाय पिलायी और अकोला आने की वजह पुछी। बहुत सारी बातें हुईं। इतने में दोस्त के पिताजी ने लड़की वालों को फोन कर दुर्घटना की जानकारी दी तो उन्होंने कहा, ठीक है जब सकुशल/तंदुरुस्त हो जाए घर जाना।

जिस घर में उनका प्राथमिक उपचार कराया गया, उन्होंने फिर दोस्त के परिवार को भोजन कराया और आराम करने को कहा और शाम को गंतव्य स्थान के लिए रवाना होने को कहा।

दोपहर चाय के समय उन्होंने बात छोड़ी और कहा आप जिस कार्य के लिए आए हैं वह कार्य कल करने के पूर्व हम एक प्रस्ताव रखते हैं। मुझे कोई संतान नहीं है। मेरे भाई की कन्या की उम्र लगभग आपके बेटे से मिलती है, हमारी पत्रिका-गुणमेलन की कोई शर्त नहीं है। मात्र हमें अच्छे विचारों और संस्कारों वाला रिश्ता चाहिए, जो आपसे आज के दिन बात करने से पता चल ही गया है। दूसरे ही दिन दोनों परिवार अकोला के पास 'खामगाँव' गए और यह रिश्ता बन गया।

आज मेरे मित्र की पत्नी और उनका एक बेटा जो पूणे में सॉफ्टवेयर डेवेलोपर हैं नई चमचमाती कार में अपने पिताजी को सेवानिवृत्ती पर लेने आए हैं।

और मैं मेरे दोनों दोस्तों के पूर्ण जीवनक्रम को यादों में बसाये अनायास विचार कर रहा था की जिंदगी किस मोड़ पर ले जाएगी .. हमने सोचा ना था।





श्रीमती रुचिका कपाले
पुत्रवधु - श्री प्रशांत त्रि. कपाले

रंगोली से सकारात्मकता

बाबा के कहने पर आज फिर मैं बाबा के कार्यालय में रंगोली बनाने आयी हूँ। यहाँ मेरा, रंगोली का यह पाँचवा प्रयास है। रंगोली बनाना मेरा शौक है और मैं अपने इस शौक को पूरा करने में जुटी रहती हूँ। कार्यालय में छूट्टी का दिन भी है इस कारण मुझसे मिलने, पूछने कोई आने वाला नहीं था और मुझे अलग अलग सवालों के जवाब भी नहीं देने थे। इस कारण कार्यालय में शांत और कुछ अलग लग रहा है। मैंने आज तक इस कार्यालय में थीम बेस रंगोली ही बनायी है।

शांती भंग करने के लिए मैंने पुराने गाने का यू-ट्यूब चैनल चलाया और इतफ़ाक से एक पुराने ज़माने की फ़िल्म थी “जीवन ज्योती” का गाना चल रहा था “जिस द्वारे पे घर की बहू रंगोली सजाती है, उस द्वार घर के अंदर लक्ष्मी आती है” और फिर सोचने लगी इस गाने के बोल, इसके शब्द और गहराई बहुत कुछ जो आप तक पहुंचाने का उद्देश और प्रयास, इस लेख द्वारा कर रही हूँ।

भारतीय परंपरा में रंगों का विशेष महत्व है। वैज्ञानिक तौर पर भी साबित हो चुका है कि रंग विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक बेहतर औषधि के रूप में कार्य करते हैं। हिन्दू धर्म में आंगन या द्वार पर रंगोली बनाना बेहद शुभ माना जाता है और इसे घर की सुख-समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है। दीपावली के मौके पर इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। यही कारण है कि दशहरे से लेकर दीपावली तक हर दिन घरों में द्वार पर रंगोली सजाई जाती है। लेकिन इसका महत्व सिर्फ साज-सज्जा या धार्मिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक स्तर पर भी है। अक्सर त्यौहार पर देखा जाता है कि लोग रंगोली बनाते हैं जिसका

आध्यात्मिक महत्व है कि ये सकारात्मकता लाने का काम करती हैं। रंगोली के रंगों का प्रभाव व्यक्ति पर शारीरिक और मानसिक रूप से पड़ता है। इस कारण रंगोली को शुभ का प्रतीक माना जाता है। इसलिए कई क्षेत्रों में तो हर दिन रंगोली बनाई जाती है।

घर के बाहर रंगोली बनाने की परंपरा

घर में सकारात्मक ऊर्जा को आमंत्रित करने के लिए रंगोली पारंपरिक रूप से बनाई जाती है ताकि सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित किया जा सके और घर से सभी प्रकार की नकारात्मक तरंगों को दूर किया जा सके। रंगोली के रंग, पैटर्न और समरूपता हमेशा एक सकारात्मक दृश्य प्रभाव पैदा करते हैं और आसपास के वातावरण में सकारात्मक कंपन को उत्तेजित करते हैं।

जीवन के लिए वास्तुशास्त्र हमेशा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष जैसे पांच तत्वों के संतुलन पर जोर देता है। रंगोली, जो अक्सर चावल के आटे, रंगीन पाउडर और फूलों की पंखुड़ियों जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करके बनाई जाती है, पृथ्वी तत्व का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि घर के विशिष्ट क्षेत्रों में रंगोली को शामिल करने से स्थान की ऊर्जा संतुलित होती है और वास्तु सिद्धांतों के अनुरूप होती है। ... वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के प्रवेश द्वार को सकारात्मक ऊर्जा के द्वार के रूप में देखा जाता है। कलात्मक योजनाओं के साथ घर के प्रवेश द्वार को समृद्ध करना घर में समृद्ध आनंद और अनुकूलता को आमंत्रित करने के लिए स्वीकार करना है। यह सभी के लिए एक सकारात्मक प्रारंभिक एहसास कराता है।

रंगोली की कई योजनाओं में प्रतीक चिन्ह, ओम, कमल, मोर और फूल जैसे आशाजनक चित्र और थीम शामिल रहते हैं, जिनका गहरा पारलौकिक

और सामाजिक महत्व है। इन छवियों को सकारात्मक ऊर्जा में सुधार करने और घर में समृद्धि लाने के लिए स्वीकार किया जाता है। रंगोली में ऐसी छवियों को समेकित करना वास्तु मानकों के अनुरूप है और सामान्य सकारात्मक भावना में सुधार करता है। रंगोलियाँ आगंतुकों को आकर्षित करती हैं और अच्छी तरंगों का स्वागत करती हैं।

रंगोली के लिए आपको सबसे पहले शुभ रंगों का चयन करना होगा। उन रंगों को चुनें जो वास्तु नियमों के अनुसार शुभ माने जाते हैं। हमेशा ऐसे पारंपरिक रंगों का चयन करें जैसे लाल, पीला, नारंगी और सफेद। इन रंगों को हमेशा चुना जाता है। ये रंग सदैव सकारात्मकता, समृद्धि और संपूर्ण खुशी का प्रतीक हैं।

रंगोली में प्लेसमेंट का भी बहुत महत्व है। आपको रंगोली को अपने घर के प्रवेश द्वार पर या पूजा कक्ष में लगाना होगा। प्रवेश द्वार आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश को उजागर करता है। यह सभी जानते हैं कि पूजा कक्ष एक पवित्र स्थान है यहाँ आने पर हमें सुकून और शांति मिलती है और इसलिए इन स्थानों पर रंगोली से सकारात्मक ऊर्जा और परमात्मा के आशीर्वाद को प्राप्त किया जा सकता है।

दिवाली उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'रंगोली' है। कुछ भारतीय घरों में हर सुबह सूर्योदय से पहले अपने घरों के बाहर रंगोली या कोल्लम बनाने की लंबे समय से चली आ रही परंपरा है। हालाँकि यह एक खूबसूरत परंपरा है, लेकिन हर कोई इसे कायम नहीं रख सकता। इसलिए, हम में से अधिकांश लोग त्योहारों या शुभ अवसरों पर अपने घरों को रंगोली से सजाते हैं।

यह रंगोली शैली उन लोगों के लिए बहुत अच्छी है जो मानते हैं कि उनमें बहुत कम या कोई कलात्मक क्षमता नहीं है। इसमें ऐसे डिज़ाइन को चुनें जिसे बिंदुओं से जोड़कर बनाया जा सके। इसे नम फर्श पर, रंगोली पाउडर का उपयोग करके अपने डिज़ाइन के

लिए आवश्यक संख्या में बिंदु बनाएं। नम फर्श यह सुनिश्चित करेगा कि डिज़ाइन हिले नहीं या हवा इसे उड़ा न दे। अब, इन बिंदुओं को उचित रेखाओं और वक्रों के साथ जोड़ दें, और आपको अपने अंदर का कलाकार मिल जाएगा।

फूलों की रंगोली : ओणम परंपरा में फूलों की रंगोली के लिए बहुत अधिक जगह की आवश्यकता नहीं होती है। कई रंगों के कुछ फूल खरीदें। आप पूरे फूल या सिर्फ पंखुड़ियों का उपयोग कर सकते हैं। एक पेंसिल या चॉक के टुकड़े का उपयोग करके फर्श पर एक सरल डिज़ाइन बनाएं। डिज़ाइन को चमकीले और रंगीन फूलों या पंखुड़ियों से भरें। आप इसे कुछ लैंपों या दीयों से भी सजा सकते हैं।

'रंगोली' का कलाकृति के रूप में कलात्मकता और लालित्य आज भी रूप बदलकर शुभ अवसरों पर दिखाई पड़ता है। सम्पन्नता के विकास के साथ आजकल इसे सजाने के लिए शुभ अवसरों के आने की प्रतीक्षा नहीं की जाती बल्कि किसी भी महत्वपूर्ण अवसर को रंगोली सजाकर शुभ बना लिया जाता है। चाहे किसी चीज का लोकार्पण हो या होटलों के प्रचार-प्रसार की बात हो, रंगोली की सजावट आवश्यक समझी जाती है। इसके अतिरिक्त आजकल कलाकारों ने रंगोली प्रदर्शनी और रंगोली प्रतियोगिताएँ भी शुरू कर दी है। कुछ रंगोलियाँ ऐसी भी होती हैं जो देखने में एक कलाकृति की भाँति दिखाई देती हैं। इनमें आधुनिकता और परंपरा का समावेश आसानी से लक्षित किया जा सकता है। रंगोली बनाने की प्रतियोगिताएँ और रेकार्डों का भी अद्भुत क्रम शुरू हुआ है। गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकार्ड तक रंगोली पहुँचाने वाली प्रथम महिला विजयालक्ष्मी मोहन थीं, जिन्होंने सिंगापुर में 3 अगस्त 2003 को यह रेकार्ड बनाया।

रंगोली बनाने के फायदे

1. रंगोली बनाना एक कला है और जो लोग कलाप्रिय हैं वे इसे शौक से बनाते हैं। ऐसे में रंगोली बनाने का पहला बड़ा फायदा तो यह है कि आप इसे बनाते समय बेहद सकारात्मक महसूस करते हैं। यह प्रक्रिया आपके तनाव को दूर कर देती है।
2. रंगोली बनाते समय अंगुली और अंगूठा मिलकर ज्ञानमुद्रा बनाते हैं, जो मस्तिष्क को ऊर्जावान और सक्रिय बनाने के साथ-साथ बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
3. एक्यूप्रेसर के लिहाज से भी यह मुद्रा आपके स्वास्थ्य के लिए बेहद प्रभावी है। यह आपको हाई ब्लड प्रेशर से बचाती है और मानसिक व आत्मिक तौर पर शांति प्रदान करती है।
4. रंगों के सकारात्मक प्रभाव को विज्ञान और विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों ने माना है। जब आप रंगों के संपर्क में आते हैं, तो इनसे उत्सर्जित ऊर्जा आप पर प्रभाव डालती है, जिससे कई तरह की मानसिक और शारीरिक समस्याओं का इलाज संभव है।
5. विभिन्न रंगों और फूलों से बनाई गई रंगोली आपके घर और आसपास के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, जिससे मन प्रसन्न और वातावरण सकारात्मक होता है।

इस प्रकार यू-ट्यूब के अगले विडियो का गीत था 1962 में बनी “रंगोली” फ़िल्म से “रंगोली सजाओ रे..... रंगोली सजाओ रे। अरे, देखते ही देखते “रंगोली” के इस चिंतन में आज की हिन्दी पखवाड़ा 2023 की रंगोली कितने कम समय में और इतनी खूबसूरत कैसे बनी पता ही नहीं चला। यही है रंगोली से सकारात्मकता का सफ़र।



श्री विद्याकर पाठक, लेखापाल

प्राणबोझ “प्राण” को सौंपकर,
तात छाती थे पीट रहे,
बेबस, लाचार, हृदय-तल से;
सब दोष स्वयं को दे रहे।

क्या हाल पूछना माता का?
पुत्र-वियोग की, बात को सुन,
सुध-बुध वो, खो देती है

वनगमन

नयनों में भर सरयू का जल,
मौत-सी पीड़ा सहती है।
जब सिया-लखन को, खबर लगी,
जिद कर बैठे संग चलने की,
लाख मना करने पर भी,
एक न सुनी रघुनंदन की।
हाँहाकार मची अवध में,
काँप उठी अयोध्या नगरी,
उमड़ पड़ा सैलाब सरयू में,
रो पड़े सब नर और नारी,
खबर जब ये आई की,
“वनगमन” की हो रही तैयारी॥



श्री विरेन्द्र देवघरे
सेवानिवृत्त

लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन

लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन जीवन जीने की कला का एक भाग है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन से व्यक्ति को सम्मान, संपत्ति और समाधान मिलता है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन एक दूसरे पर निर्भर है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन का एक बहुत बड़ा कालखंड जॉब सॅटिस्फेक्शन में समाविष्ट है। आधुनिक काल में जीवन के तीन पड़ाव है। पहला पड़ाव जॉब शुरू होने से पहले तक, दूसरा पड़ाव जॉब मिलने के बाद और तिसरा पड़ाव निवृत्त होने के बाद का। माता-पिता अपना लाईफ सॅटिस्फेक्शन छोड़कर अपने बच्चों के जॉब के लिए जी तोड़ कोशिश करते हैं। युवक स्वयं के, परिवार के और रिटायर्ड लाईफ के सॅटिस्फेक्शन के लिए अच्छी जॉब ढूँढते हैं। किंतु वास्तविकता यह है कि व्यक्ति के लाईफ सॅटिस्फेक्शन की शुरुआत जॉब शुरू होने के बाद से ही होती है। व्यक्ति की अच्छी जॉब होगी तो वह अपना और अपने परिवार का आगे का जीवन आनंद, खुशी और समाधान से व्यतीत कर सकता है। लेकिन अगर व्यक्ति को जॉब सॅटिस्फेक्शन नहीं होगा तो वो लाईफ सॅटिस्फेक्शन का उपभोग नहीं ले सकेगा।

लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन सहजता से प्राप्त करने के लिए जीवन जीने की कला आत्मसात करना आवश्यक होता है। जीवन जीने की कला में कर्तव्य पर, सामाजिक और नैतिक आचरण का

समावेश किया गया है। जीवन जीने की कला का उद्देश्य जीवन में सुख, समृद्धि और संतुष्टि प्राप्त करना है। विद्वानों ने जीवन जीने की कला में क्या करना है, क्या नहीं करना है? और क्या टालना है? इसका एक प्रारूप बनाया है। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु तक नियम निर्धारित किए हैं। उन्होंने व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए दिनचर्या बनाई है। जीवन में अनेक दुख, दर्द और वेदनाएँ होती हैं। बहुत कठनाईयों, परेशानियों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनेकों स्पर्धा, संघर्ष और तनाव से गुजरना पड़ता है। असफलता, निराशा और वैफल्य से उभरना काफी मुश्किल होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन पर विजय पाना बहुत कठिन है। ऐसे परिस्थितियों में जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए जीवन जीने की कला बहुत उपयोगी होती है।

लाईफ सॅटिस्फेक्शन जीवन का पहला पड़ाव है। जॉब शुरू होने से पहले तक का लाईफ सॅटिस्फेक्शन व्यक्ति की दशा, दिशा और दृष्टिकोण पर निर्भर है। व्यक्ति के शिशुकाल की दशा यानी परिवार में मिले प्यार, अनुशासन और संस्कार से लाईफ सॅटिस्फेक्शन की शुरुआत होती है। व्यक्ति के बाल्यकाल को दिशा देनेवाली स्कूल में मिलने वाले आचार-विचार, शिक्षा और ज्ञान से लाईफ सॅटिस्फेक्शन में बढ़ोतरी होती है। व्यक्ति के युवा अवस्था में अनुभव की पाठशाला में विकसित दृष्टिकोण से व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा और

ध्येय से लाईफ सॅटिस्फेक्शन अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। आधुनिक युग में यह सब करने के लिए अनुकूल वातावरण नहीं है लेकिन सकारात्मक सोच से सफलता हासिल की जा सकती है। भारत की लगभग एक सौ चालिस करोड़ की जनसंख्या, गरीबी और अशिक्षा के कारण भारतीयों की लाईफ सॅटिस्फेक्शन की स्थिति बहुत ही निराशाजनक है। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2023 के अनुसार 137 देशों की लिस्ट में भारत को 125 वे स्थान पर रखा गया है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन जॉब शुरू होने तक परिवार पर निर्भर होता है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन जॉब शुरू होने तक खुद को ही तलाशने पड़ते हैं। लाईफ सॅटिस्फेक्शन, जॉब सॅटिस्फेक्शन के बिना अधूरा है।

जॉब सॅटिस्फेक्शन जीवन का दुसरा पड़ाव है। जॉब मिलने तक लाईफ सॅटिस्फेक्शन के लिए जो प्रयास किए थे उनका उपयोग किया तो जॉब सॅटिस्फेक्शन मिल सकता है। जॉब यानी सिर्फ नौकरी नहीं जॉब में उद्योग, व्यापार और सभी प्रकार के काम का समावेश होता है। विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों के जॉब सॅटिस्फेक्शन की समस्या अलग-अलग होती है। जॉब सॅटिस्फेक्शन यह कर्मचारी, प्रशासन और परिवार के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण घटक है। प्रशंसा, प्रोत्साहन और पुरस्कार से जॉब सॅटिस्फेक्शन में इजाफा होता है। अगर गृहणीयों के जॉब सॅटिस्फेक्शन का ध्यान रखा जाए तो परिवार के सभी सदस्यों की उन्नति हो सकती है। काम की कालावधि अधिक और कम वेतन से जॉब सॅटिस्फेक्शन में कमी होती है। कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार, भेदभाव, भाई-भतीजावाद, नकारात्मक सोच से जॉब सॅटिस्फेक्शन पर विपरीत परिणाम पड़ता है। जॉब सॅटिस्फेक्शन में बर्ताव, स्वभाव और आव-भाव का बहुत महत्व होता है। जॉब सॅटिस्फेक्शन का सीधा संबंध उत्पादकता से होता है। जॉब सॅटिस्फेक्शन

का परिणाम व्यक्ति, समाज और देश की प्रगति पर होता है।

लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन के बाद रिटायर्ड लाईफ सॅटिस्फेक्शन जीवन का तीसरा पड़ाव है। लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन के पहले और दुसरे पड़ाव में जो काम किया है उसके परिणाम रिटायर्ड होने के बाद देखने को मिलते हैं “यानी जैसा बोओगे वैसा पाओगे।” रिटायर्ड लाईफ सॅटिस्फेक्शन को जीवन की ‘सेकंड इनिंग’ माना जाता है। रिटायर्ड लाईफ सॅटिस्फेक्शन के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। रिटायर्ड व्यक्ति ने खुदको बुढ़ा, कमजोर और असहाय नहीं समझना चाहिए। अपने स्वास्थ्य, व्यवहार और कर्तव्यों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। आधुनिक सोच को अपनाना चाहिए। अपनी जीवन शैली में बदलाव करना चाहिए। समय का नियोजन करना चाहिए। रिटायर्ड होने के बाद पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारी बढ़ जाती है। आधुनिक युग में पारिवारिक कलह के कारण परिवार के ज्येष्ठ ‘वृद्धाश्रम’ और बच्चे ‘पालनाघर’ में रहते हैं। अगर अपने पोतों की परवरिश में योगदान दिया तो परिवार की एकता बनी रहती है। आज की भागदौड़ की जिंदगी में परिवार के जॉब करने वालों के पास समय नहीं होता, उनको काम में मदद करनी चाहिए। रिटायर्ड व्यक्ति के प्यार, अपनापन और सहयोग के परिणामस्वरूप परिवार भी आपकी सेवा करता है। परिवार के लाईफ सॅटिस्फेक्शन और जॉब सॅटिस्फेक्शन में ही रिटायर्ड लाईफ सॅटिस्फेक्शन समाहित है।





श्री यशवंत खापरे
सहायक पर्यवेक्षक

विश्वास

हर दिन सुबह और शाम बस में यात्रा करते हुए पूरा एक महिना गुजरने वाला था। अब तो बस के ड्राइवर, कंडक्टर और कुछ सहयात्रियों से मेरा परिचय हो गया था जो मेरी ही तरह इस बस में हर रोज यात्रा करते थे। बावजूद इसके, दो घंटों की यात्रा मुझे उबाऊ, बोझिल और बेरंग लगने लगी थी।

एक माह बाद जब मुझे इस दौड़-धूप, चहलपहल कभी ना रुकने वाली सपनों की नगरी, मुंबई के एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क की नौकरी मिली थी, तब उस वक्त सरकारी नौकरी मिलने से ज्यादा खुशी इस बात की थी कि नौकरी मुंबई जैसे विकसित महानगर में मिली है, जहाँ मुझे आधुनिक विचारधारा को मानने वाले लोग मिलेंगे, जिनसे मिलकर मैं कुछ नया सीख पाऊँगा और खुलकर जी पाऊँगा। मेरी जिंदगी खूबसूरत व गुलजार हो जाएँगी। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

हर छोटे शहर से आने वाला नौजवान शायद ऐसा ही सोचता है। उसे अपने छोटे-से शहर में ऐसा कुछ विशेष नहीं लगता जहाँ वो अपने सुनहरे सपनों को हकीकत में तब्दील कर सकें। मेरी भी सोच कुछ ऐसी ही थी, लेकिन यहाँ आने के बाद मैंने जो देखा और महसूस किया वह मेरी कल्पनाओं से बिल्कुल ही परे था। यहाँ हर कोई बस दौड़ ही रहा था। किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं था। कोई अपने सपनों के पीछे भाग रहा था तो कोई रोजी-रोटी के लिए। किसी को अपनों का

साथ चाहिए था तो कोई अकेलापन तलाश रहा था। कोई काम चाहता था तो कोई आराम। और तो और, पांच मिनट के लिए यदि ट्रेन या बस अपने स्टॉप पर रुकती तो लोगों का जमघट कुछ इस तरह से उमड़ आता मानो मुंबई की आधी से ज्यादा आबादी बस और ट्रेन के पीछे ही भाग रही है।

इस महानगर में अपने सपनों को साकार करने की तो अपार संभावनाएं थीं किंतु अपने सुख एवम् दुःख बाँटने के लिए कोई अपने ही नहीं थे। मैं भी अपने आप को बहुत अकेला महसूस कर रहा था यहाँ किसी के पास प्यार के दो मीठे बोल बोलने के लिए भी वक्त नहीं था। मैंने लोगों से घुलने मिलने और बात करने का प्रयत्न भी किया किंतु निराशा ही मिली। आज मुझे मेरी पहली सैलरी मिली थी। अपनी पहली कमाई से दादी के लिए नई छड़ी, माँ के लिए साड़ी और बाबुजी के लिए नया चश्मा खरीदने का विचार करके मैंने अपना वॉलेट संभालकर ऑफिस बैग में रखा था और अपनी निर्धारित बस में बैठ गया।

अभी मैं बस में बैठा ही था कि मेरे बगलवाली सीट पर एक बुजुर्ग व्यक्ति आ बैठे और मेरी सोच से विपरीत, बातचीत की पहल करते हुए मेरा नाम, मैं कहाँ का रहने वाला हूँ, कहाँ काम करता हूँ, जैसे सवाल की बौछार उन्होंने शुरू कर दी। कुछ सवालों के जवाब देने के पश्चात, मैं सतर्क हो गया और बातचित में अरुची दिखाने के लिए अपने ऑफिस बैग से लैपटॉप निकाल व्यस्त होने को ढोंग करने लगा। असल में मेरे दिमाग में

यह बात थी कि यह व्यक्ती मुझे बातों में उलझाकर मेरा पर्स ना उड़ा ले जाए। हर सवाल का मेरे द्वारा बेरुखी से जवाब देने पर वह बुजुर्ग थोड़ी देर बाद स्वयं ही चूप बैठ गये। मैं लैपटॉप पर ही लगा रहा और अपना स्टॉपेज आने पर उतर गया। घर आकर हाथ-मुँह धोने के पश्चात जब मैंने अपना ऑफिस बैग खोला तो मेरे होश ही उड़ गए, मेरा वॉलेट गायब था (मैंने पूरा बैग खंगाल लिया पर नहीं मिला।) मेरे महिने भर की तनख्वाह जा चुकी थी। मेरी आँखों में आंसु बहने लगे। उस बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति मेरा गुस्सा सातवे आसमान पर चढ़ा हुआ था क्योंकि मुझे यह समझ आ गया था कि मेरा वॉलेट उसी ने चुराया है।

पूरी रात मुझे नींद नहीं आयी, मन में बार-बार बस यह सवाल आ रहा था कि क्या महानगरों में लोगों के पास ईमान धर्म नहीं होता? कोई जज्बात नहीं होते... ? क्या यहाँ सबकुछ पैसा ही है, जिसके खातिर ये किसी की जेब भी काटने से नहीं कतराते है? सुबह होते ही बहुत सोचने के बाद मैंने इस उपनगरी (शहर) को अलविदा कहने का मन बना लिया और स्थानांतरण के लिए दफ्तर में आवेदन लिखकर उसे जेब में रखा, और दफ्तर के लिए निकल गया। अपने विभाग में पहुँचा तो मैंने देखा कल जो बस में मेरे सहयात्री थे, वही बुजुर्ग व्यक्ती मेरी मेज के आगे बैठे हुए है। उन्हें देखते ही मेरी आँखों में गुस्सा तैर गया और मैं तेज कदमों से उनकी ओर बढ़ा। लेकिन मैं, उनसे कुछ कहता इससे पहले ही वह विनम्रापूर्वक बोले-

‘बेटा, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। कल तुम्हारा यह वॉलेट बस में गिरा था। जब तक मेरी नजर पड़ी तब तक तुम बस से उतर चूके थे। मैंने वॉलेट खोलकर देखा तो इसमे काफी रुपये और तुम्हारा

विजिटिंग कार्ड मिला जिसमें ऑफिस का पता था, इसलिए मैं यहा चला आया।

उनके इतना कहते ही मेरी आँखे शर्म से झुक गई। मैंने उन्हें कितना गलत समझा, शायद ऑफिस बैग से लैपटॉप निकालते वक्त मेरा वॉलेट गिर गया होगा। अपनी गलती सुधारने के आशय से मैं उनके पैर छुने के लिए झुका तो उन्होंने मुझे गले से लगा लिया।

इस एक महीने में, पहली बार किसी ने मुझे इतनी आत्मीयता के साथ गले से लगाया था। वह मुझे वॉलेट लौटाकर चले गए और जाते हुए अपने घर का पता भी यह कहते हुए दे गए कि कभी समय मिले तो घर जरूर आना।

इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जिनमें ईमान भी है, धर्म भी है और जो दूसरों की परवाह भी करते हैं, फिर चाहे शहर छोटा हो या महानगर कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि ना तो कभी इंसानियत मरती है और ना ही ईमान।

अपनी इसी सोच के साथ स्थानांतरण के लिए लिखा हुआ अपना आवेदन पत्र मैंने फाड़ दिया और ऑफिस के काम में लग गया और अपने खुशहाल जीवन का आनंद लेने लगा और आज भी मैं उस बुजुर्ग के सिद्धांत पर चलने को कोशिश कर रहा हूँ।





श्री संतोष कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते की इस श्रृंखला में मैं आप लोगों के समक्ष मेरे एक और संस्मरण जो कि अन्याय पर न्याय की जीत की भावना से ओत-प्रोत है, प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। यह संस्मरण सन् 2016 का है, यह एक बिल्डर के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाकर अंततः जीत के विषय में है। नागपुर शहर मे मेरा आगमन अक्टूबर 2013 के अंतिम सप्ताह में हुआ तथा मैंने कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II में लेखापाल के रूप में अपना कार्यभार 1 नवंबर 2013 को संभाला। उसी वर्ष दिसम्बर माह में मुझे सी.पी.डब्ल्यू. डी. के टाईप-2 सरकारी आवास का आवंटन हो गया था। परंतु मेरे पुत्र की शैक्षणिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने पुत्र का नामांकन शहर के एक प्रतिष्ठित विद्यालय में किया उसके पश्चात जून 2014 को परिवार को मेरे गृह नगर से यहाँ स्थानांतरित किया। यह सरकारी आवास मेरे पूर्व कार्यक्षेत्र भारतीय नौसेना में मुझे आवंटित होने वाले आवास की तुलना में थोड़ा छोटा था। अतः मुश्किल से मेरा सामान इसमें व्यवस्थित हो पाया। नौसेना से सेवानिवृत्ति के पश्चात मिले लाभों की अच्छी खासी रकम मेरे पास उपलब्ध थी। अतः मैं एवं मेरी पत्नी ने अपनी जमापूँजी तथा बैंक से कर्ज लेकर एक फ्लैट खरीदने का निर्णय लिया।

अब प्रत्येक शनिवार और रविवार को फ्लैट ढूँढ़ने का कार्य प्रारंभ हुआ जिसमें पुराने, नए, बन रहे तथा तैयार फ्लैट शामिल थे। अततः हमारी खोज फरवरी 2015 में समाप्त हुई एवं हमे एक 3 बी.एच.के. फ्लैट जो कि फ्रेंडस कॉलोनी क्षेत्र में अवस्थित था एवं

हमारी जरूरत तथा बजट में पूरी तरह से अनुकूल था, पसंद आया। अतः हमने फटाफट बिल्डर से बातचीत की एवं एक तय रकम में प्रथम मंजिल का फ्लैट एक वांछित रकम देकर आरक्षित करा लिया। इस समय, इस चार मंजिल ईमारत का ढाँचा बस तैयार हुआ था तथा ईंटों के काम की शुरुवात होनी थी। अतः हमने बिल्डर से बिजली के पाईप्स, केबल कनेक्शन, टेलीफोन की लाईन, पाईपींग कार्य तथा अपनी अन्य जरूरतों के अनुसार बातचीत की एवं कुछ शर्तों के साथ सहमति बन गई। मैंने अपनी पत्नी के साथ प्रत्येक रविवार को कार्यस्थल का निरीक्षण करने का कार्यक्रम तय कर लिया ताकि फ्लैट के कार्य की समीक्षा हो सके। इस दौरान हमने पाया कि कुछ चीजों की गुणवत्ता तय शर्तों के अनुरूप नहीं थी जो कि बिल्डींग में आमतौर पर (जैसे की पुट्टी, दरवाजे आदि) उपयोग की जाती है। अतः इसे हमने बिल्डर के संज्ञान में लाया। कुछ बाते उसने मानी एवं कुछ को अनसुना कर दिया।

अब अंततः मार्च 2016 में बिल्डर ने हमे हमारा फ्लैट आवंटित कर दिया। इसके तुरंत बाद हमने विधिवत गृह-प्रवेश की पूजा कर इसमें मार्च के दूसरे सप्ताह में सी.पी.डब्ल्यू.डी. काटोल रोड कॉलोनी से शिफ्ट किया। इस ईमारत में आनेवाले हम दूसरे फ्लैट धारक थे एवं क्रमशः धीरे-धीरे 3-4 महिने के अंदर ही 20 से 25 फ्लैट धारक आकर रहने लगे। यहाँ शिफ्ट होने के बाद सबसे पहले मैंने टी.वी. केबल की पाईप लाईन पूर्व निर्धारित जगह पर नहीं पाई तो बिल्डर से बात की। उसने इसे गलती से छुट जाने की बात कही

एवं एक अस्थायी लाईन उपलब्ध करवायी। इसी क्रम में फ्लैट धारकों की एक समिति बनाई गई एवं उसमें कुल नौ सदस्य शामिल थे। जिसमें 'ए' विंग (मेरी इमारत-25 फ्लैट धारकों वाली तथा 'बी' विंग साथ वाली इमारत-9 फ्लैट) के फ्लैट धारक थे। इस समिति में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, उपसचिव, कोषाध्यक्ष के अलावा 4 और सदस्य (कुल 9) शामिल थे। मुझे कोषाध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया था।

धीरे-धीरे समय बीतता गया एवं बारिश के तुरंत बाद सितम्बर के महीने में मैंने पाया कि मेरे घर के छत की ओर खुलने वाले दरवाजों की कुंडियों में जंग लगने के निशान दिखे। घर में चुम्बक की मदद से मैंने यह सुनिश्चित किया कि यह कुंडियाँ लोहे की थीं। अतः इस विषय पर तुरंत मैंने बिल्डर को संपर्क किया एवं उससे अनुरोध किया कि इसे तत्काल बदल कर सभी दरवाजों में स्टील की कुंडियाँ लगाई जाएँ। परंतु बिल्डर ने मेरे इस अनुरोध को समय के साथ टाल दिया।

इसी के साथ मेरा इस फ्लैट में एक साल गुजर गया एवं अप्रैल के 2017 में अचानक से दो कुएँ जिसमें पीने के अलावा अन्य कार्यों हेतु जल की आपूर्ति होती थी का जल स्तर काफी गिर गया। जाँच के पश्चात यह बात भी सामने आई कि बिल्डर ने बोरिंग केवल 'बी' विंग के लिए कराई जबकि 'ए' विंग में भी नियमानुसार बोरिंग होनी थी। अतः इस विषय को लेकर मैंने कोषाध्यक्ष होने के बावजूद अध्यक्ष तथा सचिव को बिल्डर से बैठक करने का अनुरोध किया। परंतु आश्चर्यजनक रूप से काफी टालमटोल के बाद उन्होंने बिल्डर को बैठक के लिए बुलाया जिसमें बैठक के दौरान बिल्डर ने पहले तो बोरिंग करने से बिल्कुल मना कर दिया। लेकिन काफी दबाव देने पर अध्यक्ष तथा

सचिव ने बिल्डर के 70%-30% (70% बिल्डर तथा 30% समिति का खर्च) के प्रस्ताव को मान लिया। परंतु मैं बिल्डर के इस प्रस्ताव से बिल्कुल असहमत था और मैंने भरी सभा में बिल्डर को कहा कि आप कैसे इंसान है कि आपको लोगों को पानी ना मिलने की थोड़ी भी फ्रिक नहीं हैं जो कि बिल्डर होने के कारण आपकी नैतिक तथा कानूनी जिम्मेदारी है। बिल्डिंग से संबंधी किसी भी रचनात्मक खामियों के लिए बिल्डर 5 साल तक जिम्मेदार होगा (डीओडी के अनुसार)। परंतु मुझे सबसे ज्यादा निराशा इस से हुई कि समिति के अध्यक्ष तथा सचिव का झुकाव बिल्डर की ओर था। जिसकी वजह से मैं अनजान था।

अंततः मैंने इस अन्याय के विरुद्ध लड़ने का फैसला किया एवं आनेवाले रविवार को मैंने अध्यक्ष, सचिव को छोड़कर अन्य सभी सदस्यों की बैठक बुलाई। बिल्डर द्वारा किए जाने वाले अन्याय के बारे में तत्कालीन जिला कलेक्टर को अवगत कराया एवं उनसे मदद हेतु प्रार्थना की। हमें सोमवार को जिला कलेक्टर कार्यालय में उनसे मिलने का निर्देश दिया।

अतः रविवार की बैठक में मैंने डी.ओ.डी. में उल्लेखित इमारत में बिल्डर द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की एवं कुल 15 कार्यों की एक सूची बनाई जिसमें मेरे घर की कुंडियों तथा केबल के लाईन की बात भी शामिल थी, इसके पश्चात इस सूची को पत्र का प्रारूप देकर मैंने पहले तो वहाँ उपस्थित 7 सदस्यों के हस्ताक्षर करवाया एवं बाद में अध्यक्ष एवं सचिव के हस्ताक्षर भी इसमें करवाकर सोमवार को अपने साथ अपने सहकर्मी को लेकर कलेक्टर कार्यालय पहुँच गया। करीब 15-20 मिनट के

इंतजार के पश्चात उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ एवं उन्होंने धैर्य पूर्वक हमारी बातों को सुना तथा हमसे पत्र लेते हुए अपने अधिनस्थ उपकलेक्टर को इसकी जाँच करने का निर्देश दिया तथा हमें एक सप्ताह के बाद आने का निर्देश दिया। पुनः एक सप्ताह के बाद शुक्रवार के दिन हम फिर उनके समक्ष प्रस्तुत हुए एवं उन्होंने हमारी माँगों को जाँच के पश्चात न्यायोचित माना एवं उप कलेक्टर को आदेश दिया कि तुरंत बिल्डर एवं एन.आई.टी. चेयरमैन को पत्र लिखा जाए एवं बिल्डर को सारे कागजात के साथ वहाँ एन.आय.टी. में अगले शुक्रवार को उपस्थित होने का आदेश दिया। इस पत्र की एक प्रति हमारी समिति को तथा बिल्डर को भी भेजी गयी।

अगले शनिवार की सुबह अचानक बिल्डर अपने कारीगरों को लेकर हमारे सोसायटी के प्रांगण में घुमता नजर आया। इस दौरान सचिव ने मुझे जिला कलेक्टर से प्राप्त हुए पत्र के संदर्भ में जानकारी हेतु वह पत्र शुक्रवार को ही दिया था। बिल्डर ने अध्यक्ष तथा सचिव के साथ मुझे भी बुलवाया तथा उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों का ब्यौरा माँगा। अतः हमने जिला कलेक्टर को लिखी एक पत्र की प्रति उसे भी दे दी जो कि पहले ही उसे डाक द्वारा सूचनार्थ भेजा जा चुका था। इसी क्रम में मुझे बिल्डर की पत्नी का फोन आया कि भाई साहब घर पर आइए मिल-बैठकर बात होगी जिसका जवाब मैंने दो ठूक शब्दों में दिया कि आप हमारे पत्र में लिखे काम करवाएँ एवं यदि कोई बातचीत करनी है तो यहाँ सोसायटी के सदस्यों के साथ होगी। इस पर मुझे फोन पर ही धमकी दी जाने लगी जिसकी मैंने सोसायटी की अगली बैठक में सभी को जानकारी दी एवं यह कह दिया कि यदि मुझे या मेरे परिवार को कुछ होता है तो इसके लिए बिल्डर जिम्मेदार होगा।

इसके बाद बिल्डर की नागपुर सुधार प्रन्यास के तत्कालीन अध्यक्ष से मिलने की तारीख सोमवार गुजर गई एवं इसके साथ ही हमारी सोसायटी के कार्यों में तेजी आई। बिल्डर ने मेरे आवास में आकर मुझे 3-4 तरह की कुंडियों में से उचित कुंडी का चुनाव करने को कहा तथा मेरे केबल के लाईन की भी सही तरीके से पाईपींग की गई। साथ-ही-साथ 'ए' वींग के लिए नई बोरिंग की व्यवस्था की गई। यह कार्य मेरे तथा सोसायटी के एक अन्य सदस्य की देखरेख में संपन्न हुआ। उस रात करीब 12 बजे तक यह कार्य संपन्न हुआ था। तब तक मैं नीचे ही निगरानी कर रहा था। बोरिंग के अंतिम चरण में जब पानी की बौछार जमीन के सीने से चीरकर निकली तो इसे देखकर मुझे काफी हर्ष का अनुभव हुआ एवं "सत्यमेव जयते" एक बार फिर चरितार्थ हुआ।

इसी बीच जुलाई 21 के मेरे सहायक लेखा अधिकारी की परीक्षा (एस.ए.एस.) का परिणाम आया जिसमें मैं अपने दो और सहकर्मियों श्री राजकुमार गुप्ता तथा श्री रामप्रताप मीणा के साथ उत्तीर्ण घोषित किया गया एवं ईश्वर की कृपा से 14 अगस्त को कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) - मुंबई में मुझे कार्यभार ग्रहण करना था। अतः मैं अपना कार्यभार अन्य सदस्य को सौंपकर मुंबई के लिये रवाना हो गया। इस दौरान बिल्डर ने दो कार्य छोड़कर बाकी सारे कार्य करवा दिये। अतः इस संस्मरण से पुनः सिद्ध होता है कि अंततः सत्य की ही जीत होती है हालाँकि इसके लिए आपको संघर्षरत रहना होता है तथा धैर्य रखना होता है।





श्री बाल बिहारी प्रजापति
लेखापाल



कठिनाइयों एवं असफलताओं से “कभी न माने हार”

कहा गया है जीवन सुख-दुख का संगम है वैसे तो हर मनुष्य अपने जीवन में सुख की ही कामना करता है लेकिन उसके जन्म से पहले उसके पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों के अनुसार ही उसे जन्म मिलता है और जन्म लेते ही ईश्वर द्वारा उसके आने वाले जीवन में सुख-दुख के अंकुर डाल दिए जाते हैं।

बचपन तो माता-पिता के सिखाने में बीत जाता है लेकिन मनुष्य की असली परीक्षा उसकी शैक्षणिक अवस्था और उसके बाद समाज में अपने आप को स्थापित करने में होती है। शैक्षणिक अवस्था में उसे शब्द-ज्ञान सीखना और उसे जोड़-जोड़ कर पढ़ना किसी संघर्ष से कम नहीं होता लेकिन मनुष्य की उम्र की वह अवस्था उम्र से तिगुना सीखने की होती है, गुरु की छाया में रहते-रहते वह सीख ही जाता है।

कठिनाइयों का सिलसिला तो तब शुरू होता है जब समाज में मनुष्य को अपने आपको स्थापित करना होता है। जीवन में कुछ बड़ा करना होता है, तो उसके सपने बचपन से ही मनुष्य को देखने चाहिए और उन्हें पूरा करने का जज्बा भी होना चाहिए। हम जब समाचार पत्रों में पढ़ते हैं, या समाचार देखते हैं अक्सर खबरों में सुनने को मिलता है ‘रिक्शा चालक या मजदूर का बेटा जज बना या कलेक्टर बना’। उसके पीछे उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयों, परिश्रम और उसकी कड़ी मेहनत से हर मनुष्य को प्रेरणा लेनी चाहिए। इसके विपरीत जब मनुष्य समाज में स्थापित हो जाता है या होने की कोशिश करता है तब उसे विभिन्न प्रकार के

लोग जीवन में मिलते हैं कुछ लोग आपकी कामयाबी से खुश होंगे और कुछ लोग खुश होने का दिखावा करेंगे। इस स्थिति में मनुष्य को सामने वाले की मनोदशा को समझकर उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। कुछ हमसे ज्यादा ज्ञानी और अहं रखने वाले विद्वान मनुष्य मिलेंगे। ज्ञानी मनुष्य जो विनयशील होते हैं, वे विनम्र होकर आपको अपना ज्ञान सांझा करेंगे और अहं रखने वाले मनुष्य जो विद्वान होते हैं वे अपना ज्ञान अहं के साथ ही सांझा करेंगे। इसलिए हर काबिल मनुष्य को विनम्र ही होना चाहिए जिसके सिखाने की कला को लोग हमेशा याद रखें। विनम्रता ही विद्वान लोगों का गुण होना चाहिए। इन सब कठिनाइयों के बीच मनुष्य को सीखते और जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कहा गया है कि जितनी भी बड़ी-बड़ी हस्तियाँ हैं वे बड़ी-बड़ी मुसीबतों को झेलकर ही बड़े बने हैं।

ऐसे कुछ महान लोग हुए हैं जिन्होंने कठिन परिश्रम कर कठिनाइयों से लड़कर देश एवं विदेश में अपना नाम रोशन किया है। इनके कुछ उदाहरण निम्नवत हैं :-

धिरूभाई अंबानी कुछ ही पैसों के साथ मुंबई आए और रिलायंस के मालिक बन कर सारी दुनिया में अपना नाम रोशन किया। आज अंबानी बिजनेस ग्रुप दुनिया में शीर्ष तीसरे स्थान पर है।

तीन बार दसवीं फेल सचिन तेंदुलकर क्रिकेट की दुनिया में कड़ी मेहनत कर क्रिकेट के भगवान बन गये।

लता मंगेशकर के पिता का बचपन में ही निधन हो गया था। अपनी माँ, तीन बहनों और एक भाई की जिम्मेदारी को निभाते हुए वे गायन क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बन गई।

अमिताभ बच्चन ने भी लगातार 12 फिल्मों के असफल होने के बाद संजीदा अभिनय करने के बाद ही अपनी सदी के 'महानायक' का खिताब पाया।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति, मिसाईल मॅन डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम जी के जीवन में भी बहुत सी कठिनाइयाँ आयी और बहुत से संघर्षों का सामना करना पड़ा। लेकिन इन्होंने हार नहीं मानते हुए हर परिस्थिति का सामना किया और आज पूरी दुनिया इन्हें एक महान व्यक्ति के रूप में जानती है।

कुछ वर्ष पहले तक वर्ल्ड के सबसे अमीर इंसान बिल गेट्स को सभी जानते हैं, ये हार्वर्ड ड्रॉपआउट थे। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत में ट्रेफ-ओ-डेटा नामक एक बिजनेस की को-ओनरशिप की जो पूरी तरह विफल रही थी। हालांकि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में इनके स्किल और जुनून ने इस विफलता को प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट में बदल दिया। बिल गेट्स उस समय 31 वर्ष के थे और दुनिया के सबसे कम उम्र के अरबपति बने। इस असफलता के बारे में बिल गेट्स ने एक स्पीच में कहा था कि "सफलता का जश्न मनाना ठीक है लेकिन असफलता के सबक पर ध्यान देना अधिक महत्वपूर्ण है।"

अल्बर्ट आइंस्टीन, आइंस्टीन शब्द आज के समय में जीनियस का पर्याय है। क्या आपको पता है कि "रिलेटिविटी: द स्पेशल एंड द जेनरल थ्योरी" के जनक स्वयं अल्बर्ट आइंस्टीन नौ वर्ष की आयु तक धाराप्रवाह नहीं बोल सकते थे। उनके विद्रोही स्वभाव के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया और उन्हें ज्यूरिख पॉलिटेक्निक स्कूल में प्रवेश देने से मना कर दिया गया। हालांकि यह सभी असफलताएं उन्हें 1921 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार जीतने से नहीं रोक सकीं। आइंस्टीन का

मानना था कि "सफलता की प्रगति में विफलता रहती है।"

अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन असफलता के एक बड़े उदाहरण हैं। 1831 में व्यापार में असफल होने पर, 1836 में एक नर्वस ब्रेकडाउन से पीड़ित, 1856 में राष्ट्रपति पद की रेस से बाहर होने के बाद भी अब्राहम लिंकन अपने रास्ते पर अडिग रहे। लिंकन ने कहा था कि, "मेरी बड़ी चिंता यह नहीं है कि आप असफल हुए हैं या नहीं बल्कि यह है कि क्या आप अपनी असफलता से संतुष्ट हैं।" लिंकन को 1861 में संयुक्त राज्य अमेरिका के 16 वें राष्ट्रपति के रूप में चुना गया था। वे अमेरिका के सबसे पॉपुलर राष्ट्रपति माने जाते हैं।

फेमस हैरी पॉटर नावेल की लेखिका जे.के. रोलिंग, ऐपल की शुरुआत करने वाले स्टीव जॉब्स, बास्केटबॉल के दिग्गज प्लेयर माइकल जोर्डन, तीन ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित सबसे प्रभावशाली फिल्म निर्माताओं में से एक स्टीवन स्पीलबर्ग, मिकी माउस के निर्माता वॉल्ट डिजनी आदि बहुत से ऐसे महान व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन में कठिनाईयों एवं असफलताओं से कभी हार नहीं मानी।

अतः यह जीवन घने जंगल के समान है जिसमें बहुत से टेढ़े-मेढ़े रास्ते होते हैं। जिस तरह पानी की धारा उन रास्तों को पार करते हुए पत्थरों एवं पेड़ों से टकराते हुये नदी या तलाब में मिल जाती है वैसे ही हमें जीवन में आने वाली कठिनाईयों से सामना करना चाहिए। जिस तरह पेड़ कभी कभी बारिश में बाढ़ के पानी के कारण उखड़ जाते हैं, लेकिन कुछ समय के बाद उनमें नई शाखाएँ और फूल पत्ते आने लगते हैं, उसी तरह अगर कभी असफलता भी मिले तो क्या, फिर से जीवन में नई शुरुवात करनी चाहिए, देखना एक दिन तुम्हें सफलता जरूर मिलेगी।





श्री गणेश ल. खरवीकर
वरिष्ठ लेखापाल



हम कहाँ से कहाँ आ गए ...

जीवन के कुछ गूढ़ रहस्य
आप कभी नहीं समझ पायेंगे
पांचवीं तक स्लेट की बत्ती को
जीभ से चाटकर कैल्शियम की
कमी पूरी करना हमारी स्थाई आदत थी
लेकिन
इसमें पापबोध भी था कि कहीं
विद्यामाता नाराज न हो जायें...!!!
पढ़ाई के तनाव को हमने
पेन्सिल का पिछला हिस्सा
चबाकर मिटाया था...!!!

पुस्तक के बीच पौधे की पत्ती
और मोरपंख रखने से हम
होशियार हो जाएंगे ...
ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास था...!!!
कपड़े के थैले में किताब-कॉपियां
जमाने का विन्यास हमारा
रचनात्मक कौशल था!!!
हर साल जब नई कक्षा के बस्ते बंधते

तब कॉपी किताबों पर जिल्द चढ़ाने को
हमारे जीवन का वार्षिक उत्सव मानते थे ...!!!
माता- पिता को हमारी पढ़ाई की
कोई फ़िक्र नहीं थी, न हमारी पढ़ाई
उनकी जेब पर बोझ थी...
सालों साल बीत जाते पर माता - पिता के
कदम हमारे स्कूल में न पड़ते थे...!!!
एक दोस्त को साईकिल के
बीच वाले डंडे पर और दूसरे को
पीछे कैरियर पर बिठा कर
हमने कितने रास्ते नापे हैं!!!

यह अब याद नहीं बस कुछ
धुंधली सी स्मृतियाँ हैं।
स्कूल में पिटते हुए और
मुर्गा बनते हमारा अभिमान
हमें कभी परेशान नहीं करता था
दरअसल हम जानते ही नहीं थे
कि, अभिमान होता क्या है
पिटवाई हमारे दैनिक जीवन की
सहज सामान्य प्रक्रिया थी

पीटने वाला और पिटाई करने वाला दोनों खुश थे,
 पीटने वाला इसलिए कि हम कम पिटे
 पीटने वाला इसलिए खुश होता था
 कि हाथ साफ़ हुआ ...!!!
 हम अपने माता- पिता को कभी नहीं बता पाएँ
 कि हम उन्हें कितना प्यार करते हैं, क्योंकि
 हमें “आई लव यू” कहना आता ही नहीं था...!!!
 आज हम गिरते- संभलते, संघर्ष
 करते दुनिया का हिस्सा बन चुके हैं,
 कुछ मंजिल पा गये हैं तो
 कुछ न जाने कहाँ खो गए हैं....!!!
 हम दुनिया में कहीं भी हों
 लेकिन यह सच है,
 हमें हकीकतों ने पाला है,
 हम सच की दुनिया में थे....!!!
 कपड़ों को सिलवटों से बचाए रखना
 और रिश्तों को औपचारिकता से
 बनाए रखना हमें कभी आया ही नहीं ...
 इस मामले में हम सदा मूर्ख ही रहे ...!!!
 अपनी-अपनी परेशानियाँ झेलते हुए
 हम आज भी ख्वाब बुन रहे हैं,
 शायद ख्वाब बुनना ही
 हमें जिन्दा रखे है वरना
 जो जीवन हम जीकर आये हैं

उसके सामने यह वर्तमान कुछ भी नहीं ...!!!
 हम अच्छे थे या बुरे थे
 पर हम सब साथ थे काश
 वो समय फिर लौट आए...!!!
 “एक बार फिर अपने बचपन के पन्नों
 को पलटिये, सच में फिर से जी उठेंगे.....
 और अंत में.....
 हमारे पिताजी के समय में दादाजी गाते थे
 मेरा नाम करेगा रोशन
 जग में मेरा राज दुलारा
 हमारे जमाने में हमने गाया....
 पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा
 अब हमारे बच्चे गा रहे हैं -
 बापू सेहत के लिए
 तू तो हानिकारक है।
 वास्तव में हम
 कहाँ से कहाँ आ गए ...





श्री मनीष कुमार खरे
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



सकारात्मक चिंतन के लिये कुछ जरूरी बातें (टिप्स)

हमें कार्यालय में सकारात्मक चिंतन के लिए निम्नलिखित बातों का अनुपालन करने का प्रयत्न करना चाहिए -

- 1) आत्म निरीक्षण करें।
- 2) सजगता की स्थिती में रहें।
- 3) सभी सहकर्मियों को सम्मान दे और उनके गुणों का आदर करें।
- 4) अपने ज्ञान को बढ़ायें और प्रबुद्ध बनें।
- 5) कार्यालय में हमेशा समदर्शिता का चश्मा पहनें।
- 6) कार्यस्थल में हमारे मन को शांति का पाठ अच्छी तरह दें।
- 7) आत्मा की आवाज को सुनना सीखें।
- 8) जहर को अमृत बनाने की कला सीखें।
- 9) हमारे अवचेतन मन की साफ सफाई करते रहे।
- 10) नित्य प्रातः एक संकल्प लें।
- 11) सामाजिक कार्यों में भाग ले।
- 12) यह संकल्प ले कि वर्तमान पद प्रतिष्ठा का समाज और देश की भलाई के लिये ही उपयोग करूंगा।
- 13) दुष्ट व्यक्ति की उपेक्षा करें। उसको अनसुना करने का प्रयास करें।
- 14) स्टाफ को अपने मन की बातें कहने का मौका दें।
- 15) जिम्मेदार अधिकारी की कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए।
- 16) यूँ तो हमारे मन में अपार उर्जा है परंतु निरंतर कार्य करते-करते यह उबने लगता है, अतः मन को थोड़ा विराम दें।
- 17) “स्टाफ के सभी सदस्य अच्छे हैं, हाँ! हर एक की अपनी-अपनी सीमाएँ हो सकती हैं, ऐसा सोचकर अपने स्टाफ के साथ व्यवहार करें।
- 18) अपनी उपयोगिता के स्थल खोजें।
- 19) कामुक भावनाओं, वार्ताओं एवं गतिविधियों से बचें।
- 20) मन को समुद्र की तरह गहरा बनायें।
- 21) कार्यालय के प्रति निष्ठावान बने, अपने बॉस या अधिकारी के प्रति आपकी निष्ठा स्वयंमेव हो जायेगी।
- 22) पूर्व प्रशिक्षित मन को कार्यालय के वातावरण का भी प्रशिक्षण दें।
- 23) दायित्व बोध धारण करें।
- 24) निर्भिक और दृढ़ निश्चयी बनें।
- 25) आत्मानुशासन में रहें।

- 26) मन को सरल बनाये और मुख पर मुस्कान रखें।
- 27) हम सब बौने हैं, यह सत्य स्वीकार कर लें।
- 28) संसाधनों का दोहरा लाभ उठाये।
- 29) प्रतिक्रिया करने की आदत छोड़ दें।
- 30) अति वाचालता से बचें।
- 31) चाटुकारिता करना और करवाना दोनों से बचे।
- 32) चुगलखोरी से बचें।
- 33) अति महत्वकांक्षी होने से बचें।
- 34) संस्था के प्रति हमेशा शिकायती भाव रखना ठीक नहीं होता।
- 35) कार्यालय में बिना रीढ़ का होना ठीक नहीं।
- 36) वरिष्ठों की डाट फटकार को निचले स्टाफ सदस्यों तक प्रवाहित करने की आदत से बचें।
- 37) अपने स्टाफ पर बेवजह अविश्वास करना ठीक नहीं।
- 38) अस्वीकार्य के लिए तैयार रहना सीखें।
- 39) अच्छा कार्य करते समय किसी की आलोचना की परवाह करना छोड़ दे।
- 40) अधीनस्थों को कार्यशील बनाना हमारा ही कर्तव्य है।
- 41) “कर्मण्येवाधिकारास्ते माफलेषु कदाचन” का अनुपालन करें।
- 42) बॉस को सहने की आदत विकसित करें।
- 43) नेतृत्व करना पड़े तो सकारात्मक भूमिका ही निभाये।

- 44) अपने किसी गलत कार्य से अपनी संस्था का नाम बदनाम न करें।
- 45) याद रखें नकारात्मकता में विनाश के बीज होते हैं।
- 46) प्यार की भाषा बोलना सीखें और भाषा का बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयोग करें।
- 47) दिखावे से बचे, कामकाजी बने।
- 48) कार्यालयीन त्रुटियों के छोटे-छोटे मामलों में यथासंभव लिखा-पढ़ी से बचे।
- 49) किसी उच्च पदस्थ अधिकारी को अपना रोल मॉडल बनाये।
- 50) आत्म मंथन करना सीखें।
- 51) न टेन्शन लें और न टेन्शन दें।

कार्यालयीन जीवन के ये कुछ प्रतिकात्मक उदाहरण हैं। वास्तव में, हमारे कार्यालय जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं जिनका हमें सफलतापूर्वक सामना करना होता है। ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि हम ऐसी समस्त घटनाओं पर केवल सकारात्मक दृष्टिकोण ही अपनाये और नकारात्मक चिंतन करने से हर हाल में बचें। तभी हम अपने सकारात्मक चिंतन के मार्ग पर चल सकेंगे और अपने कार्यालय के कार्य परिवेश को आदर्श कार्य-स्थल बना सकेंगे।





श्री शक्ति सिंह, लेखापाल



चंद्रयान - 3 मिशन

अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की अगली छलांग

भारत लंबे समय से अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। 2008 में चंद्रयान-1 के सफल प्रक्षेपण से लेकर, जिसने चंद्रमा पर पानी के अणुओं की खोज की, 2013 में मंगलयान मिशन तक, जिसने भारत को मंगल ग्रह पर पहुँचाने वाला पहला एशियाई देश बना दिया, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने लगातार दुनिया को प्रभावित किया है। अब, विगत महीने में चंद्रयान-3 मिशन के सफल प्रक्षेपण के साथ, भारत ने अपने अंतरिक्ष अन्वेषण प्रयासों में एक और बड़ी छलांग लगा दी है। चंद्रयान-3 इसरो द्वारा नियोजित तीसरा चंद्र-अन्वेषण मिशन है। इसका उद्देश्य अपने पूर्ववर्ती मिशनों की सफलता को आगे बढ़ाना और चंद्रमा की सतह और उसके संसाधनों के बारे में, हमारी समझ को और बढ़ाना है। मिशन का प्राथमिक लक्ष्य चंद्रमा की सतह (दक्षिणी ध्रुव) पर एक रोवर को उतारना है जो इसकी संरचना, खनिज विज्ञान और संभावित जल वर्षा जमाव के बारे में महत्वपूर्ण डेटा एकत्रित करेगा।

यह मिशन चंद्रमा पर भविष्य के मानव मिशन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। यह चंद्रमा की सतह का विस्तार से अध्ययन करके मिशन चंद्रमा पर एक स्थायी उपस्थिति स्थापित करने में योगदान देगा और भविष्य के मानव मिशनों के लिए भी मार्ग प्रशस्त करेगा। चंद्रयान-3 उन संभावित संसाधनों की पहचान करने में मदद करेगा जिनका उपयोग 'इन सीटू' संसाधन उपयोग के लिए किया जा सकता है। जैसे कि पानी निकालना जिसका उपयोग ईंधन के रूप में किया जा सकता है और चंद्रमा पर मानव गतिविधियों का समर्थन किया जा सकता है।

वैज्ञानिक और तकनीकी लक्ष्यों के अलावा, चंद्रयान-3 का प्रतीकात्मक और भू-राजनीतिक महत्व भी बहुत है। भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम हमेशा राष्ट्रीय गौरव का स्रोत रहा है और इसने देश को वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में एक

प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है। जैसे कि अमेरिका, चीन और रूस जैसे अन्य देश अंतरिक्ष अन्वेषण में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहे हैं, भारत के चंद्रयान-3 जैसे मिशन देश को अपनी उपस्थिति स्थापित करने और अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रतिस्पर्धा क्षेत्र में दावा पेश करने के लिए ऐसे जटिल और महत्वाकांक्षी मिशनों से जुड़ी चुनौतियों और जोखिमों को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। चंद्रयान-2 मिशन को जिसका लक्ष्य 2019 में चंद्रमा की सतह पर एक रोवर उतारना था, कुछ असफलताओं का सामना करना पड़ा जब लैंडर अपने इच्छित पथ से भटक गया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जबकि मिशन का ऑर्बिटर घटक सफल रहा और महत्वपूर्ण डेटा संचालित करना जारी रखा, लैंडर की विफलता ने अंतरिक्ष मिशन के दौरान उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों और अप्रत्याशित वाधाओं को प्रदर्शित किया। 'इसरो' ने चंद्रयान-2 की असफलता से बहुत कुछ सीखा है और चंद्रयान-3 की सफलता सुनिश्चित करने के लिए लगन से काम कर रहा है।

निष्कर्ष : चंद्रयान-3 मिशन अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की लंबी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है और वैज्ञानिक उन्नति और तकनीकी विकास के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करने और चंद्रमा पर स्थायी उपस्थिति स्थापित करने के लक्ष्य के साथ, यह मिशन चंद्रमा की सतह के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने और भविष्य के मानव मिशनों के लिए दरवाजे खोलने का बड़ा वादा करता है। जबकि ऐसे जटिल मिशनों में चुनौतियाँ और जोखिम अंतर्निहित हैं, इसरो की विशेषज्ञता और दृढ़ संकल्प भारत के चंद्रयान-3 के साथ सफलता हासिल करने के लिए अच्छी स्थिति में है। यह मिशन निःसंदेह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा और वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में इसकी स्थिति को और मजबूत करेगा।





श्री उल्हास गंधे
वरिष्ठ लेखापाल

सर्वश्रेष्ठ अंपायर

बीसीसीआई के राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में अंपायरिंग

श्री उल्हास गंधे, वरिष्ठ लेखापाल कार्यालय में कार्यरत कार्मिक के रूप में एक सर्वश्रेष्ठ अंपायर है। विगत दस वर्षों से आप महालेखाकार रिक्रेशन क्लब टीम के सदस्य है और आपको गत 17 वर्षों से बीसीसीआई के राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में अंपायरिंग का प्रगाढ़ और अपार अनुभव प्राप्त है।

- आपने वर्ष 2006 में बीसीसीआई अंपायरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की।
- वर्ष 1996, 1997 और 1998 में आपने दिलीप और देवधर ट्रॉफी खेली।
- आपने वर्ष 1994 से 2004 तक विदर्भ क्रिकेट असोसिएशन के लिए 37 रणजी ट्रॉफी मैच खेले है।
- आप विगत 5 वर्षों से बीसीसीआई अंपायर्स के शीर्ष 10 की रैंकिंग में है।
- आपने वर्ष 2021 में सैयद मुश्ताक अली टी-20 सीनियर पुरुष फाइनल और वर्ष 2021-22 के सेमीफाइनल में अपने कर्तव्य का निर्वहन किया।
- आपने वर्ष 2019-20 में संयुक्त अरब अमीरात में महिला आईपीएल मैचों और फाइनल मैच में अंपायरिंग का दायित्व निभाया।
- आपने वर्ष 2018 में मुंबई में आयोजित प्रथम महिला आईपीएल मैच में अंपायरिंग की।
- आपने भारत बनाम बांग्लादेश, भारत बनाम न्यूजीलैंड, भारत बनाम इंग्लैंड, भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया जैसे 9 महिला अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय और 7 टी-20 मैचों में अंपायरिंग का कार्य निष्पादित किया।
- वर्ष 2018-19 और 2019-20 में आपने भारत 'ए' बनाम दक्षिण अफ्रीका 'ए' में अंपायरिंग का दायित्व निभाया।
- वर्ष 2013 में कोलकाता में आयोजित वेस्टइंडीज बनाम यूपीसीए मैच में आपने अंपायरिंग की भूमिका निभाई।
- वर्ष 2010 में दक्षिण अफ्रीका बनाम बोर्ड अध्यक्ष XI मैच में अंपायरिंग का दायित्व निर्वहन किया।
- भारत बनाम श्रीलंका टेस्ट मैच और भारत बनाम न्यूजीलैंड की एक दिवसीय श्रृंखला जैसे अंतरराष्ट्रीय मैचों में, चौथे अंपायर (आरक्षित अंपायर) के रूप में अपनी भूमिका निभाई।
- आपने वर्ष 2018-19 में इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के साथ बीसीसीआई अंपायर आदान-प्रदान कार्यक्रम पर इंग्लैंड में काउंटी मैचों में अंपायरिंग का दायित्व पूर्ण किया।
- 90, प्रथम श्रेणी के मैच और 122, टी 20 मैच दिलीप और देवधर ट्रॉफी सहित प्रथम श्रेणी के मैच और 76 वरिष्ठ एक दिवसीय (घरेलू) मैच में अंपायरिंग का कार्य निष्पादित किया।
- वर्ष 2014-15, 2018-2019, 2019-20, 2020-21, 2021-22 और 2022-23 में आईपीएल की अंपायरिंग (23 मैच क्रीडा-मैदान पर, 13 मैच श्रीडी (टीवी) पर अंपायर के रूप में और 32 मैच चौथे अंपायर के रूप में) का दायित्व पूर्ण किया।





श्री गौरव सिंह परिहार, लेखापाल



पंचायती राज व्यवस्था

पंचायती राज व्यवस्था एक राजनीतिक विकेंद्रीकरण प्रणाली है, जिसे भारत में स्थानीय निकायों को सशक्त बनाने और स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। पंचायती राज व्यवस्था को भारत के संविधान के 73 वें संशोधन अधिनियम, 1992 के तहत लागू किया गया था। इस संशोधन ने पंचायती राज प्रणाली की त्रि-स्तरीय संरचना की स्थापना की, जिसमें ग्राम पंचायत (ग्राम स्तर), पंचायत समिति (ब्लॉक स्तर) और जिला परिषद (जिला स्तर) शामिल हैं। पंचायती राज व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य सत्ता के विकेंद्रीकरण और निर्णय लेने की प्रक्रिया को बढ़ावा देना है। इसका उद्देश्य शासन को लोगों के करीब लाना है, जिससे वे निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। स्थानीय जनता को अपनी राय और चिंताओं को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करके, पंचायती राज प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि नीतियां और निर्णय उन लोगों के परामर्श से बनाए जाते हैं जिनसे वे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

पंचायती राज व्यवस्था का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक न्याय और समावेशी विकास पर जोर देना है। इस प्रणाली का उद्देश्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों को समान प्रतिनिधित्व और भागीदारी के अवसर प्रदान करके, उनके सामने आने वाली असमानताओं को दूर करना है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण के माध्यम से, पंचायती राज प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि इन समुदायों की अपने गाँवों के शासन में हिस्सेदारी है और वे अपने हितों की वकालत करने में सक्षम हैं। पंचायती राज व्यवस्था भी जमीनी स्तर के विकास को बढ़ावा देने में सहायक रही है। पंचायतें बुनियादी ढाँचे के विकास, बुनियादी सेवाओं के प्रावधान और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों सहित स्थानीय विकास

योजनाओं की योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं। प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि संसाधनों को उन क्षेत्रों में आवंटित किया जाए जहां उनकी सबसे अधिक आवश्यकता है और स्थानीय स्तर पर धन के प्रभावी उपयोग की अनुमति देता है।

इसके अतिरिक्त, पंचायती राज व्यवस्था ने भारत में लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में स्थानीय जनता को शामिल करके, यह नागरिक भागीदारी और जुड़ाव की संस्कृति को बढ़ावा देता है। यह प्रणाली व्यक्तियों को अपनी राय व्यक्त करने, अपने समुदायों के विकास में योगदान देने और अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाने के लिए एक मंच प्रदान करती है। शासन के इस निचले स्तर के दृष्टिकोण ने लोगों और सरकार के बीच संबंधों को फिर से परिभाषित किया है, जिससे यह नागरिकों की जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो गई है। हालाँकि, पंचायती राज व्यवस्था अपनी चुनौतियों से रहित नहीं है। अपने महान उद्देश्यों और उपलब्धियों के बावजूद, इसे अपर्याप्त वित्तीय संसाधनों, पंचायत सदस्यों के बीच क्षमता, तकनीकी विशेषज्ञता की कमी और राजनीतिक हस्तक्षेप जैसे मुद्दों का सामना करना पड़ा है। इन चुनौतियों ने कुछ क्षेत्रों में प्रणाली के प्रभावी कामकाज में बाधा उत्पन्न की है, जिससे सशक्तिकरण और समावेशी विकास के वांछित परिणाम बाधित हुए हैं।

निष्कर्षतः पंचायती राज व्यवस्था भारत में स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्था है। यह नागरिकों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए एक मंच प्रदान करती है और जमीनी स्तर पर बुनियादी सेवाओं और विकास कार्यक्रमों का प्रावधान सुनिश्चित करती है। हालाँकि, चुनौतियों का समाधान करने और इसकी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने और विकेंद्रीकृत और समावेशी शासन की दृष्टि को साकार करने के लिए प्रणाली के कामकाज को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।





श्री प्रशांत पांडे
सहायक लेखा अधिकारी



“कृत्रिम बुद्धिमत्ता” अर्थात् आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

परिचय:

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरी है जो धीरे-धीरे और लगातार न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए दैनिक अस्तित्व का एक अभिन्न अंग बन रही है। अपनी तीव्र प्रगति के साथ, एआई ने हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रवेश करना शुरू कर दिया है। संचार और मनोरंजन से लेकर स्वास्थ्य सेवा और परिवहन तक सब कुछ प्रभावित किया है। यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि एआई किस तरह से भारत और दुनिया भर में व्यक्तियों के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों पर उत्तरोत्तर कब्जा कर रहा है।

स्मार्ट डिवाइस और वर्चुअल असिस्टेंट:

स्मार्टफोन, स्मार्ट स्पीकर और पहनने योग्य गैजेट जैसे स्मार्ट उपकरणों का प्रसार, दैनिक जीवन में एआई के एकीकरण में आधारशिला रहा है। सिरी, गूगल असिस्टेंट और अमेजन के एलेक्सा जैसे आभासी सहायक साथी बन गए हैं, जो रिमाइंडर सेट करने से लेकर, इंटरनेट पर खोज करने और स्मार्ट घरेलू उपकरणों को नियंत्रित करने जैसे कार्यों में सहायता प्रदान करते हैं। भारत में, स्मार्टफोन के उपयोग में वृद्धि और कम लागत वाले डेटा प्लान की उपलब्धता के साथ, एआई-संचालित सेवाओं ने लाखों लोगों के

हाथों में अपनी जगह बना ली है, जिससे लोग प्रौद्योगिकी के साथ बातचीत करते हैं।

सोशल मीडिया और वैयक्तिकरण:

एआई एल्गोरिदम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लोगों द्वारा देखी जाने वाली सामग्री को चला रहे हैं, उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं और व्यवहार के आधार पर समाचार फीड, विज्ञापन और अनुशंसाओं को तैयार कर रहे हैं। एआई का प्रभाव गहरा है, जो जनता की राय, उपभोक्ता की पसंद और यहां तक कि राजनीतिक प्रवचन को भी प्रभावित करता है। भारत में, एक विशाल ऑनलाइन आबादी वाला देश होने के कारण एआई-संचालित सामग्री क्यूरेशन में सामाजिक कथाओं को महत्वपूर्ण रूप से आकार देने और सांस्कृतिक बदलावों को प्रभावित करने की क्षमता है।

स्वास्थ्य सेवा क्रांति:

एआई अधिक सटीक निदान, वैयक्तिकृत उपचार और दवा खोज को सक्षम करके स्वास्थ्य सेवा में क्रांति ला रहा है। एआई-संचालित टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म से लेकर डायग्नोस्टिक इमेजिंग विश्लेषण तक एआई का एकीकरण स्वास्थ्य देखभाल पहुँच और परिणामों को बढ़ा रहा है। भारत के ग्रामीण इलाकों में, एआई-संचालित मोबाइल ऐप स्वास्थ्य देखभाल की खाई को पाट रहे हैं, जिससे मरीजों को दूरस्थ परामर्श और रोग प्रबंधन मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

ई-कॉमर्स और ग्राहक अनुभव:

ऑनलाइन शॉपिंग अनुभवों को एआई एल्गोरिदम द्वारा बदल दिया गया है जो व्यक्तिगत उत्पाद सिफारिशें प्रदान करने और मूल्य निर्धारण रणनीतियों को अनुकूलित करने के लिए ग्राहक डेटा का विश्लेषण करता है। इससे न केवल लोगों के खरीदारी करने के तरीके में बदलाव आया है, बल्कि भारत जैसे देशों में ई-कॉमर्स उद्योगों के विकास में भी मदद मिली है, जहां ऑनलाइन रिटेल फलफूल रहा है।

परिवहन और शहरी नियोजन:

एआई-संचालित नेविगेशन और राइड-शेयरिंग एप्लिकेशन भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में दैनिक आवागमन का अभिन्न अंग बन गए हैं। यातायात अनुकूलन, मार्ग नियोजन और पूर्वानुमानित रखरखाव परिवहन प्रणालियों में क्रांति ला रहे हैं और भीड़भाड़ और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में योगदान दे रहे हैं।

शिक्षा और सीखना:

एआई-संचालित ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं एवं सामग्री को व्यक्तिगत सीखने की शैलियों और गति के अनुसार अनुकूलित करते हैं। भारत में, जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच चुनौतीपूर्ण हो सकती है, एआई-संचालित एडटेक समाधानों में शैक्षिक अंतराल को पाटने और व्यापक आबादी को सीखने के अवसर प्रदान करने की क्षमता है।

निष्कर्ष:

दैनिक जीवन में एआई का एकीकरण एक निरंतर चलने वाली घटना है जिसमें हमारे रहने, काम करने और हमारे आसपास की दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को नया आकार देने की अपार संभावनाएं हैं। जबकि एआई प्रौद्योगिकी में प्रगति कई लाभ लाती है, वे डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह और नौकरी विस्थापन की संभावना जैसे महत्वपूर्ण नैतिक और सामाजिक विचारों को भी बढ़ाते हैं। जैसे-जैसे एआई अपने प्रभाव का विकास और विस्तार कर रहा है, व्यक्तियों, सरकारों और संगठनों को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि दिन-प्रतिदिन के जीवन में इसका एकीकरण नैतिक समावेशी और समाज के सर्वोत्तम हितों के अनुरूप बना रहे।

स्वीकरण

सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं यह स्वीकार करना चाहूंगा कि एआई के महत्व को उजागर करने और एआई की शक्ति को दिखाने के लिए, मैंने कुछ ही समय में एआई की मदद से उपरोक्त की रचना की है। इंसानों में अब बुद्धिमत्ता आवश्यक है, लेकिन एआई के उपकरणों का सक्षमता से उपयोग कर, अपेक्षित और प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा रहे हैं।





श्री गणेश व. खरबीकर
वरिष्ठ लेखापाल

टुनटुना

राजू आज बहुत उदास था। आज उसके हाथ से मोबाईल गिरने के कारण उसकी स्क्रीन टूट गई। शोरूम वाले ने उसे कल तक ठीक करके देने के लिए बोला है। क्या करे समय ही व्यतीत नहीं हो रहा ... “राजू ओ राजू ... अन्दर से माँ ने आवाज लगाई तो राजू “आया माँ” ... कहकर उठकर चल दिया पिछले तीन-चार साल में शायद यह पहला अवसर था जब माँ की एक आवाज पर राजू ने जवाब दिया हो...

“बोलो माँ” ... “बेटा आज घर में सब्जी नहीं है सुबह पानी की मोटर ने पानी देर से खिंचा इसलिए मैं तेरी माँसी (बगल वाली आंटी) के साथ सब्जी लेने नहीं जा पाई”, ‘मेरा प्यारा बेटा’ ‘मेरा राजा बेटा’ मेरा एक काम कर दे ना बेटा.. मां ने लगभग मनुहार करते हुए कहा... खाली बैठने से अच्छा है चलो आज बाजार ही घूम आता हूँ.. मन ही मन राजू ने सोचा ‘अच्छा बताओ क्या लाना है...? माँ के मुखमंडल पर एक नई-सी चमक थी.. मां ने सब्जी की लिस्ट और थैला उसे थमा दिया।”

‘बाजार जा रहे हो बेटा, ठहरो मैं भी चलता हूँ’ दादा जी ने छड़ी उठाते हुए कहा “हाँ दादाजी चलिए... “बेटा मेरा ये चश्मा टूट गया है काफी दिन हो गए तुम्हारे पापा को तो ऑफिस से टाइम ही नहीं मिलता तुम ही ठीक करवाकर ला दो।” दादा जी ने उसकी तरफ बढ़ते हुए टूटा हुआ चश्मा उसे थमा दिया। राजू

और दादाजी स्कूटी पर बाजार चल दिए। दादा जी को नाई की दुकान पर छोड़कर राजू ने सब्जी ली और दादी जी के चश्मे का फ्रेम बदलवाया।

वह थोड़ी ही देर में फ्री हो चुका था। नाई की दुकान पर पहुँचा तो दादाजी का नम्बर अभी नहीं आया था। कटिंग करवानी थी उन्हें... “बेटा अभी मुझे आधा घण्टा और लग जाएगा, तुमको कोई और काम है तो कर आओ।” दादाजी ने कहा। उसे याद आया “अरे हाँ ... रमेश का घर यहीं बगल में ही तो है कितनी बार बोल चुका है कभी घर आ ना यार..” उसने मन ही मन सोचा।

राजू रमेश के घर पहुँचा तो वह घर पर ही था। आंटी से नमस्ते हुई और वे वही ड्राइंग रूम में बैठ गए, आंटी चाय ले आई खूब गपशप हुई। पता ही नहीं चला कब आधा घण्टा बीत गया। आज कितने दिनों बाद किसी दोस्त के घर आया था। “अच्छा रमेश चलता हूँ दादाजी वेट कर रहे होंगे”.. “आते रहा करो बेटा” आंटी ने भी कहा। नाई की दुकान पर पहुँचा तो दादाजी फ्री हो चुके थे।

वे दोनों घर की तरफ चल पड़े। रास्ते में दादाजी ने स्कूटी रुकवाकर कुल्फी वाले से कुल्फी खाई और उसे भी खिलाई। दादाजी ने उस कुल्फी वाले के बारे में बहुत सी बातें बताई। काफी पुराना था उस कुल्फी वाले का इतिहास। वाकई कुल्फी थी भी गजब की! भूल ही गया था उसका स्वाद, अगर पहले कभी खाई भी होगी तो याद नहीं..।

वे वहां से चलकर घर पहुंचे तो दोपहर के दो बज चुके थे दादाजी बोले “बेटा तुम जा रहे थे तो साथ चला गया नहीं तो गर्मी में हालत खराब हो जाती”, दादाजी ने स्कूटी से लगभग उतरते हुए कहा, कितना आनंद था उस पल में।

दादीजी के हाथ उसने जब चश्मा थमाया तो सैकड़ों आशीषों की पिटारी उपहार स्वरूप मिली। माँ ने भी फटाफट शिकंजी बनाकर पिलाई और पास बैठकर अपनी साड़ी से उसका पसीना पोछा शायद बहुत बड़ी खुशी दी थी राजू ने उन्हें आज सब्जी लाकर। थोड़ी देर में खाना तैयार हो गया। उसने खाना खाया और सो गया। शायद थोड़ा थक गया था आज बाजार जाकर..।

दो घण्टे की नींद के बाद उठा तो पापा ऑफिस से आ चुके थे। “कैसे हो बरखुरदार पापा ने पुछा तो राजू ने ठीक में सर हिला दिया “पार्क चलोगे मेरे साथ..? खाली घर बैठने से तो अच्छा है चलो आज पापा के साथ पार्क ही हो आता हूँ। यह सोचकर उसने हामी भर दी। आधे घण्टे बाद उन दोनों में पार्क में पढ़ाई, खेलकूद और ना जाने कितने विषयों पर बातचीत हुई। पार्क में पापा के दोस्तों से भी मिला शायद पहली बार ही मिल रहा था क्योंकि कभी मोबाईल से बाहर की दुनिया उसने देखी ही नहीं थी.. कुछ अलग सा महसूस कर रहा था आज वह खुद को। दो घण्टे पार्क में बिताकर घर लौटा तो आठ बजे चुके थे, खाना तैयार था, खाने की टेबल पर, सभी ने बैठकर खाना खाया। खूब हँसी मजाक हुआ। माँ और दादाजी ने राजू की खूब तारीफ की उन्होंने बताया कि आज उसने बाजार के काम निपटाकर उनकी कितनी मदद की..

‘क्यूं बरखुरदार आज तुम्हारे पास तुम्हारा “टुनटुना” नहीं है..?’ पापा अक्सर राजू के मोबाईल को टुनटुना ही कहते हैं क्योंकि वह बजता ही रहता है कभी व्हाट्स एप्प और कभी फेसबुक की नोटिफिकेशन की टोन

से। “पापा उसकी स्क्रीन क्रैक हो गई थी ठीक करने को दे रखा है... कल ठीक करके देगा, “तभी तो मैं सोचूँ आज हमारे बरखुरदार को हमारे पास बैठने का वक्त कहां से मिल गया’, राजू बस सुनता रहा। सच ही तो कह रहे थे पापा। शायद पिछले तीन चार साल में परिवार के इतने करीब वह ‘आज’ के अलावा शायद ही रहा था। खाना तो अक्सर वह अपने कमरे में ही खाता था। वो आवाज लगाते-लगाते थक जाते थे लेकिन शायद आज पहली बार था जब उसने हर किसी की पहली आवाज पर उनको जवाब दिया था.. “अच्छा चलो सो जाओ सुबह पांच बजे उठकर मेरे साथ पार्क में चलना। सुबह की हवा और भी सुहानी होती है।” पापा यह कहकर सोने चले गए। वह भी उठकर अपने कमरे में आ गया। मोबाईल पास नहीं था इसलिए बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई।

घुर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्र की आवाज से अचानक आंखें खुल गईं, देखा तो सुबह के आठ बज रहे हैं लेकिन “पापा ने तो सुबह पांच बजे उठने को कहा था और ये क्या फोन तो आज ठीक होकर मिलने वाला था फोन किसने लाकर रख दिया मेरे सिरहाने”, वह सोच रहा था।

“ओहहहहह तो क्या ये सब सपना था..? दिल ने खुद ही दिल से सवाल किया और दिल ने दिल को ही जवाब दिया.. हाँ यह सपना था। उसने एक झटके से ‘टुनटुने’ को टेबल पर रख दिया और माँ, पापा, दादाजी चिल्लाता हुआ नीचे की ओर दौड़ पड़ा नाश्ते की टेबल की तरफ जहां उसके अपने रिश्ते, उसकी खुशियां पलके बिछाए उसका बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे।

“टुनटुना” अब भी बज रहा था लेकिन वहां उसकी आवाज सुनने वाला कोई नहीं था क्योंकि उसका गुलाम आज आजाद हो चुका था।





श्री सी. एल. पिन्हेरो
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



नागपुर - प्रगति की ओर बढ़ते कदम

मुंबई की चकाचौंध रौशनी, नए-नए फैशन भीड़-भड़का, लोकल-ट्रेन का सफर और रोज की नई जिन्दगी को छोड़कर जब मेरा ट्रांसफर पदोन्नती पर जून 2020 में नागपुर में हुआ। मैंने सोचा एक उभरते नागपुर शहर की तस्वीर कैसी होगी? मुझे नागपुर को करीब से देखने का मौका मिल रहा है।

नागपुर मध्य भारत का एकमात्र शहर है जहाँ भारत का मध्य 'जिरो माईल्स' है। इस कारण इसे भारत की 'हृदय-स्थली' भी कहते हैं। मैंने पाया इस शहर की स्थापना 1703 में अर्थात् आज से 320 वर्ष पूर्व देवगढ़ (छिंदवाड़ा अभी मध्यप्रदेश) के शासक गोंडवंश के राजा बख्त बुलंदशाह ने की थी। यह शहर 1960 तक मध्य भारत की राजधानी था। इसके साथ मध्यप्रदेश जुड़ा हुआ था। यहाँ की मराठी भाषी आबादी को देखकर उसे महाराष्ट्र राज्य में शामिल कर लिया गया। नागपुर का पुराना नाम फनिपुर या फनिन्द्रपुर था। नागपुर यह नाम यहाँ बहने वाली नाग नदी के नाम से जाना जाता है।

नागपुर की विशेषता में कुछ आयाम जोड़ना चाहूँगा। नागपुर में संविधान के निर्माता डॉ. बाबासाहब भीमराव आंबेडकर जी ने करोड़ों लोगों को बौद्ध धर्म की शिक्षा दी थी। यहाँ शिक्षाभूमि पर 14 अक्तूबर और दशहरे के अवसर पर बड़ा मेला लगता है। राष्ट्रीय स्वयं

सेवक संघ (RSS) की स्थापना का केंद्र बिंदू भी नागपुर ही है। मुस्लिम संत बाबा ताजुद्दीन की दरगाह, टेकड़ी का गणपती मंदिर जो नागपुर रेलवे स्टेशन के पास स्थित है। इस तरह धार्मिक स्थलों का आकर्षण केंद्र बिन्दु भी नागपुर रहा है। हाल ही में यहाँ G-20, C-20 के समिट का आयोजन हुआ था जिसमें विश्व के 27 देशों के 357 प्रतिभागियों ने विश्व के देशों की प्रगति के लिए विचार-मंथन किया।

नागपुर शहर जो की जंगलो से घिरा है (महाराष्ट्र - मध्यप्रदेश - छत्तीसगढ़ - आंध्रप्रदेश के सीमा से लगकर है)। महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश झोन को मिलाकर वनों से जुड़ा है। इन वनों में शेर की बहुतायत रहने के कारण इसे टाईगर कैपिटल भी कहते हैं। यहाँ से पास ही में पेंच, बोर, केवलदेव नॅशनल पार्क, ताड़ोबा, उमरेड़ - कन्हांडला अभयारण्य भी नागपुर शहर के पड़ोसी है जिसके चलते यहाँ सैलानी, प्रकृति प्रेमी और वन्य-प्रेमीयों का साल भर तांता लगा रहता है। इन सबके चलते यहाँ होटल उद्योग भी अच्छा चलता है।

नागपुर, महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से सूरुर रहने के कारण यहाँ की आबादी का यह मुद्दा था की इस भूमि (विदर्भ क्षेत्र) का विकास नहीं हो रहा है। इस कारण यहाँ की जनता की मांग थी की विदर्भ क्षेत्र को अलग राज्य का दर्जा मिलना चाहिए ताकि यहाँ के संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग कर, इस भूमि को

विकसित और समृद्ध बनाया जाए। तभी कुछ दशको से इस भूमिका का विकास करने हेतु यहाँ के माननीय विधायको/लोकसभा के सदस्यों ने इसका बिड़ा उठाया और अब इसके अच्छे नतीजे सामने आ रहे हैं। मैं इसे आपके सन्मुख रखने जा रहा हूँ।

विदर्भ का पिछड़ापन दूर करने देश के शीर्षस्थ नेतृत्व ने यह निर्णय लिया कि देश का विकास होना है, तो रास्तों (मार्ग का) का विकास होना जरूरी है। सम्पूर्ण देश के साथ नागपुर शहर के रास्तों का विकास किया गया। शहर के रास्तों का सीमेंटीकरण हुआ है। साथ ही इस शहर में कई उड़ान पुल बनाकर यातायात को सुलभ किया गया है। एशिया का सबसे बड़ा तीन-स्तरीय डबलडेकट वायाडक्ट पुल महामेट्रो (महाराष्ट्र मेट्रो कोर्पोरेशन) द्वारा बनाया गया है। इसके नीचे महामार्ग (NH 361) है, प्रथम स्तर पर पुल के माध्यम से यातायात होता है तथा सबसे ऊपर के स्तर से खापरी स्टेशन (वर्धा रोड) से ऑटोमोटीव्ह चौक (कामठी रोड) स्टेशन बनाकर मेट्रो-ट्रेन चलाई जा रही है। नागपुर के यातायात को ठीक करने हेतु कई अंडरपास बनाए गए हैं और कई बन रहे हैं। रिंग रोड का विस्तार किया गया है। नागपुर से मुंबई के लिए समृद्धी महामार्ग बना है जिसके चलने से नागपुर-मुंबई के यातायात की दूरी (कुल दूरी 810 किलोमीटर से घटकर 701 हो गयी) कम होकर यात्रा के समय में 3 घंटे की कमी हो जाएगी। फिलहाल नागपुर से शिर्डी मार्ग पर 502 किलोमीटर तक यातायात चल रहा है। फिलहाल नागपुर के चारो ओर 43.8 किलोमीटर में मेट्रो रेल (महामेट्रो द्वारा) चलाई जा रही है। इसका निकट भविष्य में वर्ष 2031 तक विस्तार कर 82 किलोमीटर तक किया जाने का प्रस्ताव है।

महाराष्ट्र की शिक्षा की राजधानी पुणे की तुलना में नागपुर में भी कई शिक्षा संस्थान बन गए हैं। नागपुर में 4 विश्वविद्यालय तथा कई विश्वविद्यालय के शाखा केंद्र हैं जिसके माध्यम से शिक्षा के सभी क्षेत्रों की पढ़ाई यहाँ संभव हो रही है। नागपुर से जुड़े अन्य राज्य जैसे आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश के कई छात्र-छात्राएँ यहाँ पढ़ने आते हैं।

औद्योगिक विकास के लिए नागपुर के कई क्षेत्र के विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) के माध्यम से औद्योगिक तथा विपणन क्षेत्र बढ़ रहे हैं। नागपुर के आसपास बुटीबोरी, हिंगना, एम्आयडीसी औद्योगिक क्षेत्र हैं। नागपुर एक बड़ी व्यापार नगरी है, इसके नजदीक मिनरल, कोयला, कृषिउपज, फलों की मंडी है। नागपुर के आसपास कपास का भी उत्पादन होता है। कुछ दशकपूर्व नागपुर में कपड़ा मिल थी, जिस कारण नागपुर से कपास को देश के अन्य क्षेत्र में भेजा जाता है। नागपुर के आसपास के क्षेत्रों में संतरे की काफी उपज होती है। यहां से संतरा देश-विदेशों में भेजा जाता है। इसलिए नागपुर को 'ऑरेंज सिटी' भी कहते हैं। नागपुर के संतरों पर प्रक्रिया कर ज्यूस, जेली इत्यादी खाद्यान्न के उद्योग भी बढ़ रहे हैं।

नागपुर के सर्वांगीण विकास को देखते हुए इस शहर के आसपास की भूमि के भाव आसमान को छू रहे हैं। यहाँ अब बहुमंजिली इमारतों का निर्माण हो रहा है जिसके चलते देश के विभिन्न भागों के मजदूर, शिल्पी, अभियंता अपने रोजगार के लिए यहाँ बड़ी मात्रा में बस रहे हैं।

नागपुर रेल, बस और डॉ बाबासाहब आंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन के माध्यम से पूरे देश से जुड़ा हुआ है। नागपुर देश के करीब-करीब सभी हवाई-अड्डों से जुड़ा हुआ है या कहे तो यूं ही हम देश के किसी भी क्षेत्रों में विमान द्वारा कुछ घंटों में पहुँच सकते हैं।

आईए ना फिर, यहाँ आपको सबकुछ मिलेगा। एक विकसित शहर की ओर अग्रेषित नागपुर इस शहर में आपका स्वागत है।



श्रीमती रीचा
लेखापाल

भीड़

हाँ हूँ मैं भीड़ का हिस्सा, मुझ अकेले की कोई पहचान नहीं,

भीड़ से अलग कर दो मुझे, मेरा अपना कोई स्थान नहीं, मुझ से मिलना हो अगर, किसी जगह और तारिख का मोहताज़ नहीं,

नजरे घुमा के देखो अगर, सिर्फ हम ही हम, है यहीं।

हाथों में हल पकड़े खेतों के किसान है हम, वर्दी पहन कर सीमा पर खड़े जवान हैं हम, लाखों की भीड़ में रहकर वोट दे तो एक आम इंसान बन जाए, वोट जीत के हमारे नेता, भगवान बन जाये।

हम त्योहारों को मेले में बदल देते हैं, किसी को अपना ले तो मशहूर कर देते हैं।

हमारे आने से गाँव शहर बन जाता है,

हमारे होने से जश्न में, महफ़िल जम जाती है।

मन खुश नहीं है इतना, पर मुस्कुरा हम लेते हैं, जिंदगी जीने के बहाने हर जगह खोज लेते हैं, इस भीड़ से अलग जीने की कोशिश हर रोज कोई करता है, अगर ये भीड़ अलग हो जाए तो वो अकेला खड़ा मिलता है।

हाँ मैं भीड़ का हिस्सा, यही हमारी पहचान है, पूरी भीड़ खड़ी है मेरे साथ, इसमें कितना सम्मान है। मशहूर लोगों की नहीं, उनके पीछे-पीछे भीड़ की कहानी है ये, किसी की कामयाबी की नहीं, कामयाब बनने वाले की जुबानी है ये।

भीड़ एक शब्द नहीं, पहचान है ये हमारी, इस शब्द में दुनिया बसती है, जहाँ है हमारी।





श्री महेश सुभाष ईशी
संग्रहित - वरिष्ठ लेखापाल



राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) की जानकारी

केंद्र सरकार ने 2004 में राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (National Pension System) नामक एक नई पेंशन योजना शुरू की। यह एक योगदान पेंशन योजना है, जिसका अर्थ है कि पेंशन राशि कर्मचारी द्वारा किए गए योगदान की राशि और किए गए निवेश के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। इसके तहत मूल वेतन और महंगाई भत्ते (डीए) का 10 फीसदी अनिवार्य रूप से काटा जाता है और अब 14 फीसदी राशि सरकार पेंशन फंड में जोड़ती है।

एनपीएस के तहत, जो जनवरी 2004 के बाद सेवा में शामिल होने वाले कर्मचारियों को शामिल करता है, योगदान परिभाषित हैं लेकिन लाभ बाजार पर निर्भर करते हैं। केंद्र सरकार पहले ही संसद को सूचित कर चुकी है कि वह 1 जनवरी, 2004 के बाद भर्ती किए गए अपने कर्मचारियों के संबंध में ओपीएस (Old Pension Scheme) को बहाल करने के किसी भी प्रस्ताव पर विचार नहीं कर रही है।

हालांकि, केंद्र ने सरकारी कर्मचारियों के एक वर्ग को जिनके पद दिसंबर 2003 में एनपीएस की अधिसूचना से पहले विज्ञापित किए गए थे। ओपीएस के लिए स्थानांतरित करने हेतु एक बार के विकल्प की अनुमति दी है।

नई पेंशन स्कीम में क्या है ?

1. नई पेंशन स्कीम (NPS) में कर्मचारी की बेसिक सैलरी + डीए का 10 फीसद हिस्सा कटता है।

2. एनपीएस शेयर बाजार पर आधारित है।
3. इस स्कीम में रिटायरमेंट पर पेंशन पाने के लिए एनपीएस फंड का 40% निवेश करना होता है।
4. एनपीएस शेयर बाजार पर आधारित है, इसलिए यहां टैक्स का प्रावधान है।

नेशनल पेंशन स्कीम के खाते के प्रकार

National Pension Scheme में दो तरह के खाते होते हैं जो कि कुछ इस प्रकार हैं:-

- **टायर 1** – इस अकाउंट में जो भी पैसे जमा करवाए जाएंगे, वक्त से पहले निकाले नहीं जा सकते। यह अकाउंट खुलवाने के लिए आपको टायर टू का अकाउंट होल्डर होना अनिवार्य नहीं है। जब आप स्कीम से बाहर हो जाएंगे तब ही इसके पैसे, आप निकाल सकते हैं।
- **टायर 2** – इस अकाउंट को खोलने के लिए आपको टायर वन का अकाउंट होल्डर होना अनिवार्य है। आप इसमें अपनी इच्छा के अनुसार पैसे जमा कर सकते हैं या निकाल सकते हैं। यह अकाउंट सभी को खुलवाना अनिवार्य नहीं है।

National Pension Scheme पात्रता मापदंड

- आवेदक को भारतीय नागरिक होना जरूरी है।
- रेसिडेंट/नॉन-रेसिडेंट दोनों नागरिक स्कीम में निवेश कर सकते हैं।



- स्कीम में निवेश करने के लिए निवेशक की उम्र 18 से 60 साल के बीच होनी चाहिए।
- केवाईसी प्रक्रिया के बाद ही नागरिक इस योजना में शामिल हो सकता है।

NPS के लाभार्थी

निम्नलिखित लोग इस खाते में निवेश कर सकते हैं।

- केंद्रीय सरकार के कर्मचारी
- राज्य सरकार के कर्मचारी
- निजी क्षेत्र के कर्मचारी
- आम नागरिक

नेशनल पेंशन स्कीम में कहां निवेश किया जाएगा फंड ?

- इक्विटी
- कॉरपोरेट डेट
- गवर्नमेंट सिक्योरिटी
- अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड्स

निम्नलिखित दस्तावेज नेशनल पेंशन स्कीम में नामांकन कराने के लिए जरूरी है:-

- निवास प्रमाण पत्र
- आधार कार्ड
- जन्म प्रमाण पत्र या दसवीं कक्षा का प्रमाणपत्र
- सब्सक्राइबर रजिस्ट्रेशन फॉर्म

2018 में भारतीय कैबिनेट ने नेशनल पेंशन स्कीम में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं जो कुछ इस प्रकार है:-

- 60% राशि को कर मुक्त कर दिया गया है।
- अब कर्मचारियों को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है कि उनके द्वारा पेंशन में योगदान किया गया पैसा किस फंड में निवेश किया जाएगा।
- केंद्रीय कर्मचारी वर्ष में एक बार पेंशन फंड को अपनी मर्जी के अनुसार बदल सकते हैं।

नेशनल पेंशन स्कीम से विड्रॉल कैसे करें ?

- यदि आप National Pension Scheme से विड्रॉल करना चाहते हैं तो आपको विड्रॉल एप्लीकेशन पीओपी को सारे जरूरी दस्तावेजों के साथ सबमिट करनी होगी। विड्रॉल करने के लिए निम्नलिखित दस्तावेजों की जरूरत होगी।

- PRAN CARD/पी.आर.ए.एन. कार्ड
- आधार कार्ड की कॉपी
- निवास प्रमाण पत्र की कॉपी
- एक कैंसिल चेक

सहायता नंबर

यदि आप अभी भी किसी प्रकार की समस्या का सामना कर रहे हैं तो आप हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करके अपनी समस्या का समाधान कर सकते हैं। हेल्पलाइन नंबर 1800110069 है।





श्रीमती सविता प्रशांत कपाले

पत्नी - श्री प्रशांत कपाले

भूटान पर्यटन



हम पिछले साल अप्रैल में असम, मेघालय, अरुणाचल से वापस आए, लेकिन हम सोचने लगे कि इस साल फिर कहीं जाना चाहिए। पर्यटन का एक ही मापदंड है:- अच्छा स्वास्थ्य और जीवनसाथी भी वैसा ही होना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करने के लिए, उनकी संस्कृति, भाषा और उनके पहनावे को समझने और अनुभव करने के लिए हमें विभिन्न प्रकार के लोगों को “पढ़ने” में रुचि और जिज्ञासा होनी चाहिए। इसके साथ ही पर्यटन पर खर्च करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। ... हम दोनों पति-पत्नी तुरंत इस बात पर सहमत हो गए कि हमें कहीं ओर जाना चाहिए अब कहाँ जाना चाहिए? यूरोप, यू.एस पर्यटन बहुत महंगा होता है। फिर सोचा भूटान की यात्रा की जाए जिसमें खर्चा कम और भारत से बाहर जाने का मजा भी और वह भी कम बजट में पूर्ण होगा। ... जल्द ही यात्रा का दिन करीब आ गया। बैग पैक हो गए और विदेश जाने के लिए हम तैयार हो गए। हमें आज सुबह 7:30 बजे दिल्ली के लिए फ्लाइट पकड़नी थी, इसलिए हमें जल्दी जागना था। सब कुछ योजना के अनुसार पूरा हो गया और हम समय पर हवाई अड्डे पर पहुँच गए। यहाँ से दिल्ली और वहाँ से बागडोगरा। बागडोगरा शहर भूटान, नेपाल, बांग्लादेश के साथ-साथ दार्जिलिंग और गंगटोक का प्रवेश द्वार भी कहलाता है। ठीक साढ़े नौ बजे हमारी फ्लाइट दिल्ली उतरी। दिल्ली से बागडोगरा के लिए अगली उड़ान 3.00 बजे थी। दिल्ली के हवाई अड्डे पर हमें टर्मिनल बदलना था, बस द्वारा गाईड के माध्यम से हम टर्मिनल-2 पर पहुँचे। हमारी 1.00 बजे की फ्लाइट के लिए बोर्डिंग शुरू हो गई। हम सभी यात्री अपनी सीट ले

चुके थे। लेकिन समय बीतने के बाद भी विमान उड़ान नहीं भर रहा था। बहुत गर्मी थी। वातानुकूलित सयंत्र काम नहीं कर रहा था। सभी यात्री हवाई सुंदरियों पर चिल्लाने लगे। “कोई तकनीकी समस्या है, जल्द दुरुस्त करने का प्रयास हो रहा है” इसकी आवाज आई।

बागडोगरा जैसे सीमावर्ती क्षेत्र में इंडिगो एयर लाइन्स अपने जर्जर, पुराने विमानों का इस्तेमाल कर रही है। इस तरह हम 4.30 को बागडोगरा उतरे। बागडोगरा एयर बेस एयरपोर्ट है इस कारण यहाँ फोटो-वीडियो शूटिंग की अनुमति नहीं है। हम चालीस यात्री एक के बाद एक अलग-अलग विमानों से, कुछ पुणे की फ्लाइट से, कुछ मुंबई की फ्लाइट से, कुछ दिल्ली फ्लाइट से पाँच बजे तक बागडोगरा एयरपोर्ट पर एकजुटे हुए। वहाँ से गाईड ने हम सभी को दो टेम्पो ट्रेवलर और दो इनोवा कारों में बैठाया और हमारा काफिला तुरंत भूटान के फुन्तशिलिंग में “माचो पेमा” नामक होटल के लिए रवाना हो गया।

चूँकि यह लगभग 200 किमी की यात्रा थी, हम सड़क पर एक जगह टपरीनुमा छोटे से होटल में रुके और हमने समोसा, कचौरी, सेव, बिस्कुट जैसा हल्का नाश्ता किया। हमारी इनोवा का ड्राइवर ‘पंकज’ बहुत बातूनी था। बंगाल की राजनीति, क्षेत्र, यहाँ की समस्याएँ, घुसपैठ इत्यादी की बातें करते-करते भूटान सीमा कब आ गई पता ही नहीं चला। फुन्तशिलिंग (पास) भूटान सीमा पर एक बहुत बड़ा पैदल यात्री टर्मिनल है। पहला भूटानी गाँव यानी “फुन्तशिलिंग” आ गया। होटल के कमरे विशाल, आरामदायक और सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से भरपूर थे। होटल की सेवा निर्विवाद रूप से उत्कृष्ट थी। इस प्रकार, आज सुबह नागपुर से शुरू हुई हमारी यात्रा सीधे भारत

से बाहर एक छोटे से मित्र देश भूटान के पहले “फुन्तशिलिंग” गाँव में रुकी।

अगले दिन भूटान में आज की सुबह अद्भुत थी। होटल की खिड़की से सुंदर प्रकृति दिखाई दे रही थी। सुखद और प्रदूषण मुक्त हवा महसूस हो रही थी... साफ और सुंदर सड़कें लगभग सुनसान थीं। दो-चार मिनट बाद एक कार, दोपहिया वाहन और कुछ पैदल यात्री भी, अपने पारंपारिक लेकिन आकर्षक परिधानों में देखे गए.. जब कोई यातायात नहीं था तो पैदल यात्री फुटपाथ और ज़ेबरा क्रॉसिंग का उपयोग कर रहे थे। ट्रैफिक की कमी का मुख्य कारण यह है कि इस पूरे देश की आबादी सिर्फ सात लाख है.. हम 135 करोड़ की आबादी वाले देश के लोग और 35 लाख की आबादी वाले नागपुर शहर के लोग.. लगातार भीड़ और कतारों की हमें आदत है इस स्थिति में हमें शांतिपूर्ण वातावरण अच्छा लगता है... हमने आज सुबह थोड़ी सैर की जो बिल्कुल प्रसन्न... अवर्णनीय थी।

सुबह 7 बजे से 9 बजे तक नाश्ता.. डाइनिंग हॉल में नाश्ते का बुफे तैयार था... बुफे देखकर खुशी हुई... क्या बताऊं... मक्खन और फ्रूट जैम के साथ गर्मागर्म भुनी हुई ब्रेड... गर्मागर्म परांठे... बिल्कुल वैसे ही सूजी, रवा का स्वादिष्ट उपमा... साथ में दही, करी अचार... दूसरी तरफ आम का जूस, मिक्स फ्रूट जूस, चाय, कॉफी और अंत में तरबूज की स्लाइसेस और गुलाबजाम जैसी अलग मुलायम मिठाई... क्या खाएं और कितना खायें, चखकर मन बहुत खुश होता है। फिर हमारी इमीग्रेशन औपचारिकताएं, पासपोर्ट पर मोहरें, इस सरकारी काम में काफी समय बर्बाद करने के बाद हमारी असली यात्रा 12:30 बजे शुरू हुई.. हर गाड़ी में एक भूटानी गाइड था।

अगली यात्रा घाट रोड की थी.. लेकिन इसकी सुंदरता अद्भुत थी.. बादलों के सैकड़ों समूह, हमसे नीचे.. गहरी घाटियों में चुपचाप आराम कर रहे थे.. हम आसमान में बादलों को देखने के आदी हैं.. परन्तु घाटी में बादल

नीचे थे और हम पहाड़ी पर। मुझे आज अनायास ‘खामोशी’ फिल्म का मनीषा कोइराला पर फिल्माया गया हिन्दी गाना याद आया ‘आज मैं ऊपर, आसमां नीचे..... आज मैं आगे, ज़माना है पीछे। ‘पल-पल स्थिती बदलते रहती है धीरे-धीरे वातावरण बदल रहा है..’ यह दृश्य अद्भुत था.. कितनी तस्वीरें लेनी हैं, कितनी लेने के लिए वीडियो क्लिप चलाई जाए? ... मनोरम दृश्यों का आनंद लेते हुए कार में बैठी। गाइड भूटान के बारे में जानकारी दे रहा था... जानकारी भी दिलचस्प थी... भूटान में राजशाही है.. वर्तमान राजा को 5 वी (पांचवी पीढ़ी) कहा जाता है... पहले राजा की ताजपोशी 1907 में हुई थी ... आज यह पांचवी पीढ़ी है.. जब एक स्थापित राजा को यकीन हो जाता है कि उसका बेटा राज्य चलाने में सक्षम है, तो वह खुद ही सेवानिवृत्त हो जाता है और बेटे को राजा बना देता है.. और खुद एक सामान्य व्यक्ति का जीवन जीता है... भूटान में राजा होता है, लेकिन वहां लोकतंत्र है.. वहां राज्यसभा है, लोकसभा है... वहां प्रधानमंत्री है.. वहां विधायक व सांसद हैं... हर पांच साल में चुनाव होते हैं.. वहां नई सरकार चुनी जाती है... तो एक वंशानुगत राजा इस सरकार को कैसे प्रभावित कर सकता है? तो भले ही बीस जिले हों और उनके बीस विधायक निर्वाचित हों, पांच विधायक राजा द्वारा नियुक्त अलग-अलग विधायक होते हैं... कुल पच्चीस... यानी राजा द्वारा नियुक्त ये पांच विधायक निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं.. बीस जिलों में राजा के लिए एक सामान्य घर बनाया गया है... कोई शाही महल नहीं है... ‘थिम्पू’ भूटान की राजधानी है और राजा ज्यादातर समय वहीं रहते हैं...।

अगला पड़ाव एक पनबिजली परियोजना के लिए बनाया गया बांध है। ऊपर से देखने पर यह एक बेहतरीन जगह है नीचे एक गहरी घाटी में बना बांध है और उससे बना विशाल नीला जलाशय। भूटान में थर्मल पावर स्टेशन नहीं है... इसलिए प्रदूषण नहीं

होता.. चूंकि वहां चौबीसों घंटे पानी बहता रहता है, पनबिजली संयंत्र से उत्पन्न बिजली भूटान की जरूरतों को पूरा करती है... पर्यटन और बिजली भूटान सरकार के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है और पर्यटकों की बड़ी संख्या के कारण भूटानी लोगों के लिए रोजगार का एक बड़ा स्रोत भी है।

अगला पड़ाव एक झरने का अनुभव करना है... यह झरना ठीक सड़क पर है... जब आप कार से उतरेंगे तो झरना... झरने की चौड़ाई बहुत अधिक नहीं है, लेकिन ऊंचाई बहुत अधिक है... यदि तुम ऊपर देखने के लिए अपनी गर्दन ऊपर करो, टोपी नीचे गिरनी चाहिए... टोपी उतर गई... पानी की धारा ऊपर से गिर रही थी। पानी की बूंदें असंख्य कणों में बदल रही थीं, वे छोटे-छोटे कण आकाश में विलीन हो रहे थे। इसका आनंद लेने और थिम्पू की यात्रा शुरू करने के बाद अंधेरा होने लगा... बाहर की सुंदरता देखना संभव नहीं था.. इसलिए मुझे झपकी आने लगी... हम आठ बजे थिम्पू के पांच सितारा होटल “व्हाइट तारा” पहुंचे। ... होटल “व्हाइट तारा” में शाही व्यवस्था, सुखद रात्रिभोज, रात की अच्छी नींद, प्रसन्न मन के साथ सुबह भूटान के समय के अनुसार, 7 बजे नाश्ते में क्या लेंगे? यह सोचते हुए मैं डाइनिंग हॉल में दाखिल हुई... चाय-नाश्ते की शाही व्यवस्था देखकर मैं बहुत खुश हुई... मुझे लगा कि थिम्पू में मेरा प्रवास खत्म नहीं होना चाहिए।

इन सबका आनंद लेते हुए हमने अपनी यात्रा शुरू की... गाइड ने जानकारी देनी शुरू की.. भूटान में मातृसत्तात्मक व्यवस्था है... जब बेटे की शादी होती है तो वह अपने ससुराल में रहने चला जाता है... अब ससुराल ही उसका घर है। केवल एक अपवाद है... वह इकलौता बेटा होगा, तो तभी उसकी पत्नी ससुराल आएगी... यदि कोई भूटानी लड़की या लड़का किसी भारतीय या किसी विदेशी जीवनसाथी से शादी करता है, तो भूटान में रहने का उनका अधिकार समाप्त हो जाता है... उसे जीवनसाथी के देश में प्रवास करना

होगा... यहां सभी गाड़ियों के नंबर प्लेट लाल रंग के हैं.. उस पर सफेद अक्षर हैं.. अंग्रेजी में नंबर से पहले BP... BT... BG... अक्षर.. बीपी का मतलब है भूटान प्राइवेट... प्राइवेट व्हीकल... बीटी का मतलब है भूटान टैक्सी... बीजी का मतलब है भूटान सरकार... सरकारी कारों... और रॉयल कार पर रॉयल लिखा रहता है। जल्द ही हम “दोचूला पास” पर आ गए.. यह स्थान बहुत ऊंचा है... समुद्र तल से 3150 मीटर ऊपर... एक ऊंची पहाड़ी पर बीच में एक बड़ा स्तूप है.. और उसके चारों ओर 107 छोटे स्तूप हैं... कुल मिलाकर 108, इस स्तूप का निर्माण कब और क्यों हुआ? इसका इतिहास ये है कि साल 2003 में असम में बोडो और उल्फा संगठनों का आंदोलन जोरों पर चल रहा था... उन विद्रोहियों ने भूटान पर हमला कर दिया... तब भूटान के राजा ने अपनी शाही सेना के साथ उन विद्रोहियों को हरा दिया. इस विजय उत्सव को मनाने के लिए राजा ने ये 108 स्तूप बनवाए थे।

अगला पड़ाव था.. “पुनाखा घाटी”। पुनाखा घाटी दो नदियों का संगम है। एक नदी है, ‘पोचू’, दूसरी है, ‘मोचू’। स्त्री नदी है... ये नदियाँ तेज़ गति से चलने वाली हैं... इस पोचू-मोचू के संगम के बाद का नाम “पुनखांचु” है. यह पुनाखा गांव का नाम है और चू का अर्थ है नदी, अब तक आप जान चुके होंगे। यहां का प्रमुख आकर्षण मोचू में राफ्टिंग का मनमोहक अनुभव है। राफ्टिंग ऊपर से शुरू होती है... और चौदह किमी नीचे समाप्त...

हवाई नौकाएँ... प्रत्येक नाव में 6 लोग.. दो गाइडों के साथ... किराया प्रति नाव आठ हजार.. अब वह नाव चौदह किलोमीटर तक उफनती नदी की तलहटी में दुर्घटनाग्रस्त हो रही है? लेकिन कई साहसी यात्री तुरंत तैयार हो गए... उनकी राफ्टिंग यात्रा शुरू हो गई... हमने गाइड के निर्देशों को ध्यान से सुना और

अपनी राफ्टिंग शुरू की। यह एक शानदार अनुभव था। यात्रा के दौरान दस-बारह जगहों पर बहुत शोर होता है... वहां नाव ज्यादा झुक जाती है... पानी आ जाता है... कपड़े थोड़े गीले हो जाते हैं और यहाँ हमारी यात्रा समाप्त होती है। अगला स्थान था... पुनाखा किला... 16 वीं शताब्दी में भूटान के राजा द्वारा बनवाया गया एक शानदार किला... किला पोचू के ठीक किनारे पर है... वहां से हमारा सफर पोचू पर लटकते लोहे के पुल को देखने के लिए मुड़ा.. हमारी भाषा में लक्ष्मण झूला... यह एक अलग अनुभव है... पोचू के विशाल बहाव से ऊपर यह झूला... लगभग दो सौ मीटर लंबा.. इसे पार करके वापस आना... एक मजेदार अनुभव था।

अब 'थिम्पू' की वापसी यात्रा शुरू हो गई है... हमारी वापसी यात्रा भी उसी रास्ते पर थी... रात करीब 8 बजे जब हम दोबारा ऊँचे 'दोचूला दर्रे' पर पहुँचे तो फिर वही दृश्य... कार की रोशनी में सड़क दिखाई नहीं दे रही थी... क्योंकि हम बादल पार कर रहे थे बाद में ड्राइवर अच्छे से गाड़ी चलाता नजर आया तत्पश्चात हमने धीरे-धीरे कदम उठाया... थोड़ा नीचे आने के बाद वो बादल गायब हो गए... अद्भुत...

हम रात 8:30 बजे थिम्पू के होटल व्हाइटतारा पहुँचे... हम सभी थके हुए थे... हमें भूख भी लगी थी.. कमरे में फ्रेश होने के बाद हम डिनर के लिए डाइनिंग हॉल में इकट्ठा हुए.. एक साधारण कैजुअल मेनू था। हमे कल सुबह 'पारो' के लिए निकलना था। थिम्पू दर्शन यात्रा शुरू... भूटान की आर्थिक व्यवस्था के कारण यहां स्थानीय युवा लड़कियां बिजनेस में, वर्कर के तौर पर, होटल के रिसेप्शन से लेकर वेटर तक और सभी दुकानों में भी ज्यादा नजर आती हैं... यहां की युवा लड़कियां बहुत सुंदर, प्यारी हैं... इन लड़कियों के पास सुंदरता का एक अनूठा दिव्य उपहार है... और अद्वितीय गोरी त्वचा है... यहाँ महिलाएँ और पुरुष गर्व से अपनी पारंपरिक पोशाक पहनते हैं... महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक को "किरा" कहा जाता है... और पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक को "घो" कहा जाता है। पहनावे

के मामले में वे परंपरावादी विचारधारा संजोए है। इसीलिए ये लोग अपनी परंपराओं, अपनी वेशभूषाओं को बचाए रखते हैं और इसपर उन्हें गर्व भी है।

हमारी गाड़ियाँ 'थिम्पू' के उत्तर में एक ऊँची पहाड़ी पर रुकीं.. वहाँ एक नई विशाल, कांस्य बुद्ध प्रतिमा है.. विशाल का अर्थ है भव्य.. प्रतिमा लगभग 170 फीट ऊँची है.. वह भी पद्मासन में बैठे हुए... "बैठे हुए बुद्ध" उनकी भाषा... उससे भी बढ़कर एक ऊँचा चबूतरा... उस चबूतरे के अंदर एक बुद्ध विहार है। वहाँ से हम थिम्पू के "पारंपरिक कला और शिल्प प्रशिक्षण स्कूल" को देखने गए... वहाँ तेरह अलग-अलग कार्यशालाएं हैं। यहाँ प्रत्येक हॉल में उस कला के प्रशिक्षु अपनी पढ़ाई में तल्लीन हैं.. हम जैसे पर्यटकों को इन सभी हॉलों में निःशुल्क प्रवेश मिलता है... हम उन्हें परेशान किए बिना उनकी पढ़ाई की तस्वीरें ले सकते हैं।

इस संग्रहालय में, भूटान की प्राचीन वस्तुएँ अच्छी तरह से संरक्षित हैं.. पुराने पारंपरिक घर... उस घर की संरचना, खेती के उपकरण, पुराने बर्तन, पानी की चक्कियाँ.. और भी बहुत कुछ... आमतौर पर किसी भी संग्रहालय में वे या तो विलुप्त हो जाते हैं या नष्ट होते हैं। वह क्षेत्र जो वस्तुएँ खोज के कारण पुरानी हो गयी हैं उन्हें भी सहेजा जाता है, यहाँ से थिम्पू का प्राचीन किला... सचिवालय, विधानसभा... थिम्पू का उच्च न्यायालय... सुप्रीम कोर्ट आसानी से दिखाई देता है... भूटान की एक और विशेषता यह है कि अत्यधिक वर्षा वाला क्षेत्र होने के कारण हर इमारत पर एक बड़ा टिन का शेड लगा हुआ है। इसकी छत के ऊपर पेंट किया गया है... इस संबंध में घर का मालिक अपनी पसंद का कोई भी रंग नहीं दे सकता, वहाँ के सरकारी नियमों के अनुसार छत पर लाल (मैरून) या हरा रंग देना होता है... हम इसे हर जगह अनुभव करते हैं।

आज हमारी यात्रा का 5 वां दिन है... आज 'पारो' दर्शन कार्यक्रम की योजना बनाई गई... 'ऑडुम्ब्रा रिज़ॉर्ट' के शाही आवास का आनंद लेते हुए, सुबह ठीक 8:30 बजे हम डाइनिंग हॉल में एकत्र हुए... शाम को भूटान संस्कृति के दर्शन हेतु पारंपरिक नृत्य का कार्यक्रम रिसॉर्ट के नजदीक था... हवा ठंडी होने के कारण अलाव जला दिया गया था... फिर कार्यक्रम एक घंटे तक चला... भूटानी युवतियों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा में अपने लोक नृत्य प्रस्तुत किए... इसमें 'याक गीत था' ... यह अद्भुत और वास्तविकता के करीब था। 'याक जून वटवा' .. अंत में यह कलाकार और हम पर्यटक थे... सभी ने एक साथ, मराठी तडफदार गीत पर बहुत नृत्य किया... हम आठ बजे तक रिसॉर्ट में वापस आ गए। रात का समय... तो क्या... डिनर बुफे हमारा इंतज़ार कर रहा था...

हमारे अगले दिन का पहला पड़ाव था.. "टाइगर नेस्ट व्यू पॉइंट..."। एक बड़ी चट्टान से थोड़ा नीचे, उस काली चट्टान के बिल्कुल किनारे पर, एक 'मठ' बना हुआ है... पहाड़ के आधार से इसकी ऊँचाई एक हजार मीटर है... यानी करीब एक किलोमीटर है... यह आधार (प्वाइंटसे) से बड़ी होते हुए भी छोटी लगती है। ... अब वहां कैसे जाएं?... तो हाथ में ट्रेकिंग स्टिक लेकर पहाड़ के चारों ओर घूमकर पैदल ट्रेकिंग का आनंद लें.. पैदल चलने की दूरी करीब दस किलोमीटर है.. पहुंचने में करीब आठ घंटे लगेंगे.. जो लोग घोड़े पर सवार होकर जाना चाहते हैं उनके लिए घोड़े तैयार हैं.. लेकिन घोड़ों को केवल ऊपर ले जाया जाएगा और छोड़ दिया जाएगा... वे पैदल आते थे... घोड़े का किराया रु. तेरह सौ अलग से था।

अगला पड़ाव था 'पारो सरकारी संग्रहालय'... जिसमें एक प्राचीन छह मंजिला वाँच टावर को संग्रहालय में बदल दिया गया है.. यह गोलाकार छह मंजिला वाँच टावर ऊपरी ढलान पर बनाया गया है। एक खड़ी पहाड़ी पर से प्राचीन काल में पूरे पारो शहर की सुरक्षा इस छोटी मंजिल से की जाती थी। प्रत्येक गोलाकार फर्श पर काँच की

अलमारियाँ हैं, उनमें लैंप की व्यवस्था है, प्राचीन वस्तुओं को बहुत सावधानी से संरक्षित किया गया है... यहाँ तक कि 1500-2000 ईसा पूर्व की भी। हमेशा की तरह इसमें पुरानी प्राचीन मिट्टी के बर्तन, धातु के बर्तन... पुराने हथियार.. पुराने कपड़े... राजाओं की प्राचीन पोशाके... महिलाओं के आभूषण... जैसे चूड़ियाँ... अंगूठियाँ... विभिन्न प्रकार के आभूषण आदि हैं। आसानी से प्रवेश करने में एक घंटा लग जाता है। ... शुल्क रु. तीन सौ है... वहां से हमारा काफिला 'पारो का किला' देखने आया... भूटान में कुल बीस जिले हैं... जिले में बीस ही बीस किले हैं... अब इसका आधा हिस्सा सरकारी कार्यालय के रूप में और आधा बौद्ध धम्म सिखाने वाले स्कूल के रूप में उपयोग किया जाता है। किले का निर्माण भव्य है।

आज आराम के बाद का समय मार्केटिंग के लिए आरक्षित था... लेकिन उससे पहले हम सभी उत्साहपूर्वक यहाँ की पारंपरिक पोशाक पहनकर अपनी तस्वीरें लेने के लिए 'पंचू' नदी के किनारे की दुकानों पर गए... गाड़ियाँ बायीं ओर रुकी थीं और दुकान दायीं ओर... सड़क पार करने के लिए जेब्रा क्रॉसिंग.. भूटानी सभ्यता यहाँ दिखी.. जैसे ही हमने जेब्रा क्रॉसिंग पर कदम रखा, दोनों तरफ से आने वाली गाड़ियाँ एक के बाद एक रुक गईं। एक सुरक्षित दूरी पर, हमने उन्हें अपने पैर पीछे ले जाकर जाने का इशारा किया, फिर उन्होंने हंसते हुए पहले सड़क पार करने का इशारा किया... एक बार जब सारी भीड़ पूरी तरह से सड़क पार कर जाती है, तो गाड़ियाँ शुरू हो जाती हैं... कोई भी कार का हॉर्न नहीं बजा रहा है। कोई कार आगे वाली कार को ओवरटेक नहीं कर रही है.. कोई सिग्नल नहीं दिखता है... जेबरा क्रॉसिंग सिग्नल है.. सभी वाहन बहुत अनुशासित रहते हैं एक सुरक्षित दूरी पर ... इसलिए हमने जेबरा क्रॉसिंग से वीआईपी की तरह सड़क पार की... हमारे लिए दोनों तरफ खड़ी गाड़ियों को सराहना भरी नजरों से देखा और नियोजित दुकानों पर गए... उनकी पारंपरिक पोशाक

का किराया रु 300 प्रति व्यक्ति... मैंने “किरा” पहना.. और मेरे पति ने “घो” पहना.. बहुत मज़ा आया... बहुत बढ़िया फोटो सेशन हुआ, पंचू की काठी.. हम सभी अब बिलकुल भूटानी लग रहे थे..

अब कल से हमारी वापसी यात्रा पारो हवाई अड्डा से होगी जो एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है.. लेकिन यह दुनिया का सबसे खतरनाक हवाई अड्डा है.. क्योंकि इसके चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे, हरे-भरे पहाड़ हैं.. और बीच में जमीन की तरह एक अण्डाकार तश्तरी जैसा हवाई अड्डा है.. विमान को लैंडिंग के समय तेजी से नीचे लाया जाता है.. और उड़ान भरने के दौरान उड़ान बहुत तेज होती है। किनारे पर घाट रोड से गुजरते समय, हवाई अड्डे के एक दृश्य बिंदु से, रन-वे को बहुत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है.. हमारी गाड़ियाँ वहीं रुक गईं.. हमारे दाहिनी ओर से विमान पहाड़ की चोटी से नीचे आया और ‘शिताफी’ में उतरा, तुरंत उड़ान भरी और ऊँचे पहाड़ की ऊंचाई पर पहुँच गया। बाएं से और आगे चला गया.. पांच मिनट में यह दाईं ओर उतरा और बाईं ओर उड़ान भरी।

इसके बाद शुरू हुआ अगला सफर.. भूटान के बारे में खास जानकारी ये है कि यहां 10 वीं तक सभी बच्चों की पढ़ाई पूरी तरह से मुफ्त है। आगे आपको अपने खर्च पर प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करनी होगी। साथ ही देश की सुरक्षा के बारे में भी हमने पूछा.. भूटान की आबादी सिर्फ सात लाख है। देश की सेना और राजा की शाही (रॉयल) सेना को मिलाकर अधिकतम संख्या पंद्रह हजार है। एक तरफ भारत और दूसरी तरफ तिब्बत यानी चीन क्योंकि चीन अब तिब्बत को पूरी तरह से निगल चुका है। सवाल यह है की लाखों की सेना वाले साम्राज्यवादी चीन से भूटान कैसे सुरक्षित है? लेकिन भारत ‘भूटान’ की पूरी सुरक्षा का ख्याल रखता है। ‘भूटान-चीन’ सीमा पर हर जगह भारतीय सेना तैनात है। हर छह महीने में नई भारतीय तुकड़ी आती है। पुरानी तुकड़ी भारत लौट जाती है। भारत भूटान का मित्र है। ... भूटान की एक और उल्लेखनीय विशेषता है.. यहां कोई भिखारी नहीं है... पूरा समाज मेहनती है... और

विशेष रूप से यहां सड़क पर कोई फेरीवाला नहीं है... फुटपाथ पर कोई भी दुकानदार अपना सामान रखकर अतिक्रमण नहीं करता है... सब्जी बाजार परिसर पर एक प्रवेश द्वार है और कोई भी विक्रेता अपनी सब्जियों के साथ परिसर के बाहर बैठा नहीं पाया गया।

कल मार्केटिंग करने गए यात्रियों ने एक दुर्घटना देखी... दुर्घटना के बाद कोई फोन करने वाला नहीं था, कोई दुर्व्यवहार नहीं था.. दुर्घटनाग्रस्त वाहनों के मालिक सड़क किनारे चुपचाप खड़े थे, पुलिस, बीमा कंपनी को बुला रहे थे, उनका इंतजार कर रहे थे। इसके बाद हम धीरे-धीरे बादलों के बीच से नीचे आए.. लगभग 5 बजे हम ‘फुलसिलिंग’ लौट आए... फिर से आब्रजन कार्यालय... पासपोर्ट पर निकास टिकटें... ये औपचारिकताएं खत्म हो गईं... फिर हमें पैदल ही सीमा पार करनी होगी... और भूटान गेट से गाड़ियाँ आती हैं! ऐसे हमने भारत के पश्चिम में भूटान सीमा पार की। बंगाल का पहला गांव जयगांव में कदम रखा ...

आज 15 तारीख है.. 7 वां अंतिम और वापसी यात्रा का दिन... यहां से कोई मुंबई जाएगा, कोई पुणे जाएगा... कोई बेंगलुरु होते हुए नागपुर जाएगा, कोई चेन्नई होते हुए... हर फ्लाइट का समय अलग-अलग है... बागडोगरा हवाई अड्डा 175 किमी दूर है.. हम 6 लोगों की उड़ान बागडोगरा से दिल्ली, दिल्ली से नागपुर... दूर ऑपरेटर ने प्रत्येक उड़ान के लिए एक वाहन की व्यवस्था की थी..

हम शाम 4.30 बजे नागपुर हवाई अड्डे पर लौट आए... पूरी यात्रा भूटान जैसे ठंडे क्षेत्र में... वापसी की उड़ानें, हवाई अड्डे, वातानुकूलित व्यवस्था लेकिन जैसे ही हम नागपुर हवाई अड्डे से बाहर निकले और नागपुर के बयालीस डिग्री तापमान की गर्मी हमारे शरीर को झुलसा रही थी। ये हमारा नागपुर है... यकीन हो गया... मन को शांति मिली.. आखिर अपना ‘नागपुर’ है भाई..





श्री बाल बिहारी प्रजापति
लेखापाल

जीवन एक श्रृंगार है ...

“जीवन एक श्रृंगार है”

जब आता शिशु
जननी के गर्भ में...
होता, उसका श्रृंगार है।
नख से शिख तक
बढ़ता उसका रंग रूप
जन्म लेते - लेते
होता, उसका श्रृंगार है।
जीवन एक श्रृंगार है..

कदमों से भूमि को छूता...
धूल, मिट्टी, पवन, फूलों से
प्रकृति के हर कण से।
प्रकृति करती, उसका श्रृंगार है
जीवन एक श्रृंगार है..

पकड़ता कलम हाथ में...
किताबों में पढ़ता अ, ब, स
पढ़ते - पढ़ते, बढ़ते - बढ़ते
पाठशाला से दुनियाँ को
देखते - देखते
होता उसका श्रृंगार है
जीवन एक श्रृंगार है..

जीवन की तलाश में...
दुनिया को खोजने निकलता
तो कभी हारकर बैठ जाता

तो कभी जीतने के
साहस में बढ़ता आगे
औहदे से लगते ही
रंगों की दुनियां में
जाने को होता बेताब है
जीवन एक श्रृंगार है..

जब आती उसकी अर्धांगिनी...
लड़ते - झगड़ते, हँसते - हँसाते
प्यार से जन्म लेता प्यार है
सुत - सुता के
लालन-पालन से
होता उसका श्रृंगार है...
जीवन एक श्रृंगार है...

अब सुता विदा हो गई...
अगर सुत निकला सपूत
तो हँसकर जीना है
अगर निकला कपूत तो मरना है
उम्र के अंतिम पढ़ाव में
मरते - मरते मृत्यु शैया पर
होता उसका श्रृंगार है
जीवन एक श्रृंगार है...





श्री आकाश कुमार
लेखापाल

अभी भी बाकी है

अरमान बिखर रहें तो क्या हुआ,
उम्मीद अभी भी बाकी है ...
रुके नहीं अभी कदम मेरे
रास्ते अभी भी बाकी है ...

सीखने की कोई उम्र नहीं होती
यह सोच हमेशा मुस्कान देती है,
ख्वाइशों की पोटली में मेरी
जीत अभी भी बाकी है ...

ये हार नहीं मेरी
इसने मुझे मेरी, गलतियों से मिलाया है,
दोहराऊ न अपनी गलती
इसने ही मुझे सिखाया है
पर सिखना अभी भी बाकी है ...
मेहनत न करूँ मैं तो,
ईश्वर भी जीत दिला नहीं सकता,
उनकी कृपा भी मेहनत से ही आती है,
सपनों को हकिकत बनाने की
उड़ान अभी भी बाकी है ...

भुलकर जमाने की बातें,
अब खुद की आवाज को सुनना है,
रास्ते मेरे हैं, मेरे रहेंगे,
मुझे बस अपनी मंजिल की ओर
चलना है; क्योंकि
मंजिल अभी भी बाकी है ...

क्यों बदलूँ मैं खुद को,
जब ईश्वर ने मुझे बनाया है,
उनके विचारों को बदलना है,
जिन्होंने मुझे गलत ठहराया है;

मुस्कान अभी भी जिंदगी जीना सिखाती है
रूठी हुई जिंदगी से उम्मीद की किरण जगाती है,
अंधेरे ने मुझे यकीन दिलाया कि
सवेरा अभी भी बाकी है ...
सवेरा अभी भी बाकी है ...



रेशम की डोर



सैयद इकबाल अली
सेवानिवृत्त सहायक लेखा अधिकारी

प्रेम का, स्नेह का, प्यार का अनुबंध है
आ घर, भैया मेरे, के आज रक्षाबंधन है।
तुम्हे हम स्मरण करें, तुम न आओ नामुमकिन
दुध का नाता है अपना, खून का संबंध है
तक रहे हैं कब से नयन चंद्रमा के प्रकाश को
सूना सूना दिल मेरा सूना आंगन है।
खीर पूरी, मालपुआ और ढेर सारा प्यार
बैठी हूँ सजा के थाली, जो तुझे पसंद है
रेशमी डोरी में मैंने बांधा है अहसास को
तुम न भूलोगे मुझे, ये एक सौगंध है।





श्री लालचंद फवानी

वरिष्ठ लेखा अधिकारी. (सेवानिवृत्त)

‘उन्नति’

शहर की मुख्य सड़क। सड़क के किनारे कुछ ठेलेवाले, ठेल पर फल, सब्जी, खिलौने, कपड़े इत्यादि बेच रहे हैं। इतने में एक ठेले वाले को सब-इंस्पेक्टर लछूराम मोटर-साईकिल पर आता हुआ दिखाई देता है। तो वह ठेलेवाला अपने पास खड़े दूसरे ठेले वाले को कहता है, “लो आ गया कुत्ता”। यह बात ठेलों की तरफ आते हुए लछूराम सुन लेता है। वह पास आकर उस ठेले वाले से कहता है, “क्यों बे, कुत्ता किसे कह रहा था।” ठेले वाला डर कर कहता है, “हुजूर, आपको नहीं इस खिलौने वाले को कह रहा था।” फिर मन में कहता है, “वैसे आपको कुत्ता कहना तो कुत्ते का अपमान है।”

लछूराम उस ठेले वाले से कहता है, “ठीक है, ठीक है अब ज्यादा बकवास मत कर, चल जल्दी से हफ्ता निकाल।” ठेले वाला उसे सौ-सौ के 2 नोट देता है। लछूराम नोट लेकर ठेले वाले से कहता है, “अगले हफ्ते से ये 2 सौ रुपए नहीं चलेंगे। अगले वक्त तीन सौ रुपए देना होगा, रेट बढ़ गया है।” यह कहते हुए वह आगे बढ़ जाता है और अन्य ठेले वालों से भी हफ्ता वसूल कर वहाँ से चला जाता है।

शहर के जाने-माने सेठ माखनलाल। शहर के सबसे धनवान व्यक्ति। ये सिल्क का धोती-कुर्ता, आँखों पर सुनहरी फ्रेम का चश्मा! पॉलिश किया हुआ लेदर शू। गोल मटोल शरीर के व्यक्ति। शहर में उनके

बड़े-बड़े कारोबार हैं। वैसे तो सभी उनसे व उनके कारोबार से वाकिफ हैं पर उनके कुछ करीबी लोग ही जानते हैं कि वे काला बाजारी, हेरा-फेरी, स्मगलिंग आदि काम भी करते हैं इन्हीं तरीकों से उन्होंने बहुत धन कमाया है। शहर में उनकी सबसे बड़ी हवेली है। उनकी जान-पहचान बड़े नेताओं, पुलिस अफसरों एवं वकीलों से है। उनके पास 8-10 कारें हैं। उन्हीं में से एक कार में वे किसी कार्य के लिए जा रहे हैं। वे पीछे की सीट पर बैठे होते हैं। कार ड्राइवर चला रहा होता है। मुख्य सड़क से गुजरते समय अचानक कार का संतुलन बिगड़ जाता है तथा कार तीव्र गति में होने के कारण ड्राइवर कार को नियंत्रित नहीं कर पाता है। कार मुख्य सड़क पर खड़े ठेलों को टकरा जाती है। इस टक्कर से दो ठेले पलट जाते हैं तथा खिलौने, फल वगैरह टूट जाते हैं। इससे उन ठेले वालों का नुकसान हो जाता है। कार को भी मार लगती है और कार सामने से दब जाती है। सेठजी कार से बाहर निकल आते हैं। उन्हें देखकर ठेले वाला सेठजी के पास आकर कहता है, “सेठजी हमारा बहुत नुकसान हो गया है। हमारा सामान टूट-फूट गया है। हम गरीब लोग हैं। हमारे छोटे-छोटे बाल-बच्चे हैं। हमारे पास पैसा भी नहीं है कि और सामान खरीद कर बेच सकें। अतः कृपया हमें कुछ पैसे देंगे तो मेहरबानी होगी। हम धंधे के लिए कुछ सामान खरीद पाएंगे।” यह सुनकर सेठ माखनलाल आग बगूला हो जाता है। वह ठेले वालों को डाँट कर कहता है, “एक तो तुम लोग सड़क घेर-कर यूँ खड़े हो जाते है। इस वजह से मेरी कार की टक्कर हो गई। मेरी इतनी कीमती कार पर खरोचे आ

गई। जानते हो कितना खर्च आएँगा। तुम्हारी गलती है और उल्टा तुम मुझसे ही पैसे मांग रहे हो।

ठेले वाला कहता है, “सेठजी हमारी मजबूरी तो देखो। हम गरीब लोग हैं। आप तो धनवान हो।” यह सुनकर सेठ और ज्यादा चीढ़ जाता है, और कहता है, “ज्यादा होशियार मत बनो। कोई पैसे नहीं मिलेगा। मैं देखता हूँ आगे से तुम यहाँ सड़क पर कैसे खड़े होते हो। तुम्हारा यहाँ इस सड़क पर खड़ा होना बंद नहीं करा दिया तो कहना।” यह कह कर सेठजी अपनी कार में बैठकर वहाँ से चले जाते हैं।”

कुछ देर बाद सेठजी काम से निपट कर घर पहुँचते हैं, वे किसी बड़े नेता को फोन लगाते हैं। इसके कुछ देर बाद पुलिस का कोई बड़ा अफसर सेठजी के घर आता है। सेठजी और अफसर में कुछ बात होती है। तत्पश्चात पुलिस अफसर लछूराम से कहता है, “कल से मुख्य सड़क पर खड़े होने वाले ठेले वहाँ नहीं दिखने चाहिए।” इस पर लछूराम अफसर से कहता है, “सर, वे ठेले वाले तो हमें हर महिने पैसा टाईम पर दे देते हैं। फिर उन्हें क्यों हटाना है। अफसर कहता है कि उनको हटाने के लिए शहर के सेठजी ने कहा है। तुम्हें तो मालूम ही है सेठजी सोने के अंडे देने वाली मुर्गी है और ठेले वाले चंद रुपये देते हैं, तो बोलो सोने के अंडे देने वाली मुर्गी का सुनना पड़ेगा या नहीं। यह सुनकर लछूराम मुस्कराते हुए कहता है, “वो तो एकदम सही है। ठीक है, मैं अभी जाकर उन ठेले वालों को वहाँ से हटा देता हूँ।”

अफसर उसे कहता है, “शाबास, तुम बहुत समझदार हो। जहाँ तुम जैसे अफसर होंगे वह देश जरूर उन्नति करेगा।”



श्री अथर्व गोसावी
एम.टी.एस.

मंजिल

रुक मत, डर मत

दुनिया की फिकर, कर मत।

रुक मत, डर मत

दुनिया की फिकर, कर मत।

एक दिन आएगा, तू दुनिया को झुकाएगा

खुद पर भरोसा रख, तू भवंडर से भी निकल आएगा।

एक दिन आएगा, तू चीते की रफ्तार पाएगा

इन दुनियावालों को तू, पीछे छोड़ आएगा।

ये जो हँस रही है दुनिया, तू उनको दिखलाएगा

तू उनको भी पीछे छोड़ आएगा।

एक दिन आएगा तू अपनी मंजिल पाएँगा

इन दुनियावालों को पीछे छोड़ आएगा।

रुक मत, डर मत,

दुनिया की फिकर, कर मत।।





श्री प्रशांत त्रिवंक कपाले
प्रभारी हिंदी अधिकारी

किस्सा ... वेतन का

सुबह सुबह करीब 5.30 बजे स्टेट बैंक का मेसेज आया अगस्त माह का वेतन जमा हुआ साथ ही शेष उपलब्ध राशि.....। एक बार नींद खुलने के बाद फिर सोने का औचित्य नहीं था। मैंने पाया आज 2023 में कितना बदल गया है सब कुछ। वेतन, सुबह सुबह मिल जाता है इसकी सूचना बैंक तथा कार्यालय के वेतन-पंजी अनुभाग से पुष्टी के द्वारा भी की जाती है। मुझे याद है जब मैंने 1983 में कार्यालय ज्वाइन किया था, मेरा प्रथम वेतन था रु 741 रुपये 45 पैसे और रेडीओ पर गाना आता था। 'खुश है जमाना आज पहली तारीख है।'

फिर 1986 का वेतन आयोग आया और वेतन बढ़ गया। मुझे याद है, मेरे कार्यालय के वेतन पंजी अनुभाग में 10 तारीख के आसपास वेतन पर्ची बनाने का कार्य आरम्भ होता था। 20 से 22 तारीख तक वेतन बन जाता था। फिर वेतन पंजी से पी ए ओ, कैश ब्रांच होते-होते माह के अंतिम दिन वेतन मिलता था। दोपहर के 12 बजे के आसपास रोकड़िया बैंक से पैसे लाने जाते थे। कैश काउंटर में अनुभाग अधिकारी/पर्यवेक्षक कैश के लिए नम्बर लगाते थे। फिर अनुभाग का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी डाकघर से रेवेन्यू स्टैम्प लाने जाता था। कैश काउंटर पर कतार में खड़े रहकर अनुभाग अधिकारी/पर्यवेक्षक वेतन लाते थे। फिर अनुभाग के वरिष्ठ कर्मचारी पैसे की जाँच कर अलग-अलग कर्मचारी के अनुसार वेतन के रुपयों की राशि की गड्डी बनाते थे। कोई सहयोगी वेतन पर्ची पर स्टैम्प लगाकर वेतन पर्ची पर कर्मियों का हस्ताक्षर लेते थे। फिर प्राप्त राशि और वितरण की जाने वाली राशि का मिलान किया जाता था। फिर वेतन प्राप्त करने वाले उस कर्मि को बुलाकर वेतन हस्तांतरित किया जाता था। सभी का वेतन वितरित करने के बाद छुट्टी पर रहने वाले कर्मि का प्राधिकार पत्र

लगाकर या अनुपस्थित कर्मि का वेतन लौटाया जाता था। रोकड़िया से प्राप्त राशि और वितरित राशि का मिलान किया जाता था। वेतन के दिन कार्यालय के कैंटीन द्वारा विशेष व्यंजन बिक्री हेतु बनाया जाता था। इस दिन कार्यालय के बाहर बिक्री हेतु खाद्य पदार्थ तथा विविध वस्तुएँ मिलती थी।

किसी एक माह का किस्सा मुझे आपके साथ साँझ करने का बहुत मन हो रहा है। हमारे कार्यालय की पुरानी इमारत से पर्यवेक्षक वेतन का वितरण कर नई इमारत में वेतन पर्ची लौटाने आए थे। फिर कुछ पाँच छह मित्र मिलने के कारण कार्यालय के बाहर पान ठेले पर पान खाने के लिए रुके थे। उनके हाथ पीछे थे और उनके हाथ में वेतन पर्ची थी। उसी समय एक गोमाता वहाँ से गुजर रही थी, उसने एक झपटे से पर्यवेक्षक के हाथ से वेतन पर्ची मुँह से खिच कर खाते हुए निगल ली। सबकुछ इतनी गती से हुआ कोई कुछ नहीं कर सका। फिर क्या हड़कम्प मच गया। अनुभाग में जाकर सभी 10 कर्मियों को रोका गया। वेतन पंजी अनुभाग से नई वेतन पर्ची बनाकर, पी.ए.ओ. अनुभाग से प्रमाणित कर सभी कर्मियों के पुनः हस्ताक्षर लिये गये और वेतन पर्ची को कैशियर को करीब-करीब शाम को 6 बजे लौटाया गया। फिर एक दौर ऐसा भी आया कि बैंक के द्वारा वेतन प्राप्त करने का। बैंक में खाता खोला गया। शुरुवात में इसका विरोध ज़रूर हुआ परंतु धीरे-धीरे सभी ने अपना ज़िरो बैलेंस (शून्य शेष) बैंक खाता खोला और अब सभी का वेतन बैंक के माध्यम से हो रहा है और भुगतान गूगल पे, फ़ोन पे और भीम ऐप के डिजिटल माध्यम से कैश लेस तथा ऑनलाइन। भारत आज विश्व के पाँच शीर्ष डिजिटल व्यवहार करने वाले देश में से प्रथम क्रमांक में है। कितना बदल गया प्राप्ति और भुगतान का माध्यम, क्या मैं इसे प्रगती कहूँ?





श्री अनिल वैष्णव
सहायक लेखा अधिकारी



समाधान

बहुत दिनों से स्कूटी का उपयोग नहीं होने से, विचार आया कि इसे ओएलएक्स (OLX) पर बेच दें. कीमत रुपए 30,000/- डाल दी। इस दौरान बहुत ऑफर आए 15 से 28 हजार तक। इसमें एक का 29 हजार का प्रस्ताव आया... उसे भी प्रतीक्षा में रखा।

कल सुबह फोन आया और उन्होंने कहा - 'साहब नमस्कार' ... आपकी गाड़ी का विज्ञापन देखा। मुझे गाड़ी पसंद आई है। परन्तु 30 हजार इकठ्ठा करने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु 24 ही इकठ्ठा कर पाया हूँ। बेटा इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में है। उसने बहुत मेहनत की है। कभी पैदल, कभी साइकल, कभी बस और कभी किसी के साथ। सोचा अंतिम वर्ष तो वह अपनी गाड़ी से जाए। आप कृपया स्कूटी मुझे ही दीजिएगा नई गाड़ी मेरी हैसियत से बहुत ज्यादा है। थोड़ा समय दीजिए मैं पैसों का इंतजाम करता हूँ। मोबाइल बेचकर कुछ पैसे मिलेंगे परन्तु हाथ जोड़कर निवेदन है साहब, गाड़ी मुझे ही दीजिएगा। मैंने औपचारिकता में मात्र 'ठीक है' बोलकर फोन रख दिया। कुछ विचार मन में आए। फिर पुनः फोन किया और कहा 'आप अपना मोबाइल मत बेचिए, कल सुबह केवल 24 हजार लेकर आइए, गाड़ी आप ही ले जाइए, वह भी मात्र 24 हजार में ही'। मेरे पास 29 हजार का प्रस्ताव होने पर भी 24 में किसी अपरिचित व्यक्ति को मैं स्कूटी देने जा रहा था। सोचा उस परिवार में आज कितनी खुशी का माहौल हुआ होगा। कल उनके घर स्कूटी आएगी और इससे मुझे ज्यादा नुकसान भी नहीं हो रहा था। ईश्वर ने बहुत दिया है और सबसे बड़ा धन तो 'समाधान' है जो मुझे कूट-कूटकर दिया है। अगली सुबह उसने कम से कम

6-7 बार फोन किया.... 'साहब कितने बजे आऊ, आपका समय तो नहीं खराब होगा, पक्का लेने आऊ, बेटे को लेकर या अकेले आऊ'.... पर गाड़ी किसी और को मत दीजिएगा। वह 2000, 500, 200, 100 और 50 के नोटों का संग्रह लेकर आया, मगर साथ में उनका बेटा नहीं एक लड़की थी। नोट देखकर ऐसा लगा, पता नहीं कहां-कहां से निकालकर या मांग कर या इकठ्ठा कर, यह पैसे लाया है।

वह लड़की एकदम आतुरता और कृतज्ञता से स्कूटी को देख रही थी। मैंने दोनों चाबियाँ दी... हेलमेट और कागज दिए। लड़की गाड़ी पर विनम्रतापूर्वक हाथ फेर रही थी। फिर स्कूटी पर बैठ गई, उसकी खुशी देखते ही बनती थी।

उसने पैसे गिनने के लिए कहा, मैंने कहाँ आप गिनकर ही लाये हैं, कोई दिक्कत नहीं। जब जाने लगे, तो मैंने उन्हें 500 का एक नोट वापस करते हुए कहा, घर जाते-जाते मिठाई लेते जाइएगा। सोच यह थी कि कहीं तेल के पैसे हैं या नहीं? और इसमें तो मिठाई और तेल दोनों आ जाएंगे। आँखों में कृतज्ञता के आँसू लिये उसने मुझसे अनुमति मांगी... मैंने जाते हुए उससे पुछा कि ये बिटियाँ कौन हैं? तो उत्तर दिया कि 'यही तो मेरा बेटा है'।

उसने विदा ली और अपनी स्कूटी ले गया। जाते समय बहुत ही आतुरता और विनम्रता से झुककर अभिवादन किया। बार-बार आभार व्यक्त किया।

दोस्तों..... जीवन में कुछ व्यवहार करते समय नफा-नुकसान नहीं देखना चाहिए। अपने माध्यम से किसी को क्या सच में, कुछ आनंद प्राप्त हुआ है यह देखना भी जरूरी है। (सोशल मिडिया से साभार)





दिनांक 23 नवम्बर 2023 को पेंशनर्स समाधान कार्यक्रम पर इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेशों (ई-पीपीओ) के शुभारंभ के अवसर पर मध्य में प्रधान महालेखाकार महोदया, बाएँ ओर वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), दाएँ ओर वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन व हकदारी) सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश (ई-पीपीओ) का कार्यालय में शुभारंभ

इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेशों के शुभारंभ से नागपुर विभाग से सेवानिवृत्त होने वाले राज्य सरकार के कर्मचारियों को सुविधा मिलेगी।

नागपुर क्षेत्र में, पेंशन भोगियों की सुविधा को बढ़ाने के उद्देश्य से, प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर के द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश (ई-पीपीओ) शुरू की गई हैं। इस डिजिटल पहल का उद्देश्य खजाना अधिकारी द्वारा पेंशन भोगियों को पेंशन के आबंटन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित, सुचारु और तीव्र करना है।

वर्तमान में, पेंशन मामलों को अंतिम रूप दिए जाने के बाद, पेंशन पेपर प्राधिकार को मुद्रित करने के लिए कई पृष्ठ और कई गुना पूर्व-मुद्रित स्टेशनरी का उपयोग किया जाता है। इन पेपर प्राधिकार को प्रधान महालेखाकार के कार्यालय में सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित किए जाने के बाद स्पीड पोस्ट द्वारा भेजा जाता है। अक्सर पेंशन प्राधिकार, पेंशन भोगी, खजाना अधिकारी और प्राधिकृत प्राधिकरण को प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II महाराष्ट्र, नागपुर के कार्यालय द्वारा प्रेषण की तारीख से 10 से 15 दिनों के अंतराल के बाद प्राप्त करते हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार के लोक सेवा वितरण प्रयास के रूप में, पेंशन भोगियों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए, ई-पीपीओ के तत्वावधान में अब एक अधिक कुशल, पारदर्शी, सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल चैनल अपनाया गया है। पेंशन प्राधिकृत करने के दिन से ही, सभी हितधारकों द्वारा प्राधिकारों को प्राप्त किया जाएगा और पेंशनभोगी के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से किसी भी समय और किसी भी स्थान पर आसानी से सुलभ होगा।

मार्गदर्शक के रूप में, 01 दिसंबर 2023 से, नागपुर जिले से सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारियों के लिए ई-पीपीओ लॉन्च किया गया है। माननीय प्रधान महालेखाकार सुश्री जया भगत द्वारा इस पेंशनभोगी-अनुकूल पहल का उद्घाटन 23 नवंबर, 2023 को शाम 4 बजे प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, सिविल लाइंस, नागपुर के कार्यालय में आयोजित किया गया।

ई-पीपीओ की प्रमुख विशेषताएं:

1. पेंशन भुगतान आदेश डिजिटल रूप से जारी किए जाएंगे।
2. तीव्र प्रक्रिया और तत्काल प्रेषण
3. पेंशन भोगियों को पेंशन संबंधी सूचना एस.एम.एस. सुविधा द्वारा उनके मोबाईल पर तुरंत दी जाएगी।
4. महाराष्ट्र सरकार की महाकोष वेबसाइट के माध्यम से ई-पीपीओ तक आसानी से पहुंच बनाई जाएगी।

भविष्य में प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर, कार्यालय नागपुर संभाग के अन्य जिलों (नागपुर जिले के अलावा) और अमरावती, औरंगाबाद संभागों के अंतर्गत आने वाले जिलों से सेवानिवृत्त होने वाले सभी महाराष्ट्र सरकार के कर्मचारियों के लिए इलेक्ट्रॉनिक पेंशन भुगतान आदेश जारी करने के लिए प्रतिबद्ध है। ऑनलाइन ई-पीपीओ पहल का यह विस्तार, प्रधान महालेखाकार कार्यालय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आनेवाले मराठवाड़ा और विदर्भ के पेंशन भोगियों को तनाव मुक्त रूप से प्राधिकार की प्राप्ति और उनके विधिवत अधिकृत पेंशन भुगतान आदेशों तक ऑनलाइन और आसानी से पहुंचने जैसे दोहरे लाभ मिल रहे हैं।



कार्यालय समाचार

ऑनलाइन कार्यशाला :

खजाना विविध अनुभाग द्वारा कार्यालय में दिनांक 04/10/2023 को ऑनलाइन कार्यशाला संपन्न हुई। इस कार्यशाला में संयुक्त निदेशक, लेखा व कोषागार, औरंगाबाद तथा औरंगाबाद विभाग के 08 खजाना अधिकारी एवं संबंधित आहरण व संवितरण अधिकारी उपस्थित थे।

औरंगाबाद कार्यशाला में इस कार्यालय से निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित थे।

1. श्रीमती के. वि. टेम्बुर्ने, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
2. श्री पी. बी. श्रीराम, सहायक लेखा अधिकारी
3. श्री गोविंद जी, सहायक लेखा अधिकारी
4. श्रीमती रोशनी भारद्वाज, सहायक लेखा अधिकारी

उपरोक्त कार्यशाला में लंबित डीसी बिलों का निपटान, लंबित उपयोगिता प्रमाण पत्र का निपटान, पीएलए के खातों के मिलान आदि विषयों में उद्बोधन किया गया। इस दौरान लंबित बिलों के निपटान में आने वाली कठिनाइयों पर भी चर्चा की गई। सभी आहरण व संवितरण अधिकारी द्वारा लंबित बिलों का शीघ्रता शीघ्र निपटान करने का आश्वासन दिया गया।

इस कार्यशाला का लाभ लंबित डीसी बिल तथा उपयोगिता प्रमाणपत्रों के बिलों के निपटान के लिए उपयोगी साबित हुआ तथा सितंबर, 2023 को समाप्त के.आर.ए. में उपयोगिता प्रमाणपत्रों का निपटान तथा संक्षिप्त बिलों का निपटान क्रमशः 33.93% एवं 8.46% दर्ज किया गया।

इसी प्रकार 01/04/2023 से 30/09/2023 तक का खजाना निरीक्षण ब्यौरा निम्नानुसार है।

वर्ष 2023-24 में कुल 19 कोषागार तथा 175 उप-कोषागारों का निरीक्षण करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2023-24 का निरीक्षण कार्यक्रम दिनांक 08/05/2023 से आरंभ हुआ है।

कोषागार निरीक्षण वर्ष 2023-24 के दौरान निम्नलिखित निष्कर्षों को दर्ज किया गया है।

- वर्ष 2023-24 के निरीक्षण के दौरान अभी तक 11 लाख से अधिक की अतिप्रदान निवृत्ति उपदान राशि को कोषागार अधिकारियों के समक्ष रखा गया है जिसकी वसुली करके सभी राशि शासन के खाते में जमा करने की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है।
- राज्य सरकार के पेंशन भोगीयों की 1 करोड़ रूपए से अधिक अवितरित पेंशन (Undisbursed Pension) जो बैंको के द्वारा सरकारी खाते में जमा नहीं की गई है उसकी भी जानकारी संबंधित कोषागार अधिकारियों को दी गई है। जिस पर उचित कार्यवाही के बाद उसे पुनः शासन के खाते में जमा किया जाएगा।
- आज जहाँ पूरे देश में 7 वें वेतन आयोग का लाभ सभी कर्मचारियों और निवृत्ति वेतन भोगी को प्राप्त हो रहा है वही लगभग 2168 (डेटा के अनुसार अभी तक प्राप्त) निवृत्ति वेतन भोगी ऐसे भी हैं जिन्हें अभी भी पुराने पेंशन

संशोधन का लाभ अप्राप्त है। इस बारे में कोषागार निरीक्षण के दौरान कोषागार अधिकारियों को सूचित किया गया है ताकि उन्हें नए वेतन आयोग के समान वेतन वृद्धि का लाभ प्राप्त हो सके, इस हेतु मार्गदर्शन किया गया।

- निरीक्षण के दौरान पेंशन और निधि से संबंधित कई मुद्दे सामने आए जैसे कि पेंशन आदि के भुगतान में हुई देरी जिसको नियमित समय पर पूरा करने का निर्देश संबंधित कोषागार अधिकारियों को दिया गया।
- निरीक्षण के दौरान कई ऐसे स्वीय प्राप्ति लेखा (PLA) थे जिनका कोई भी लेनदेन कई वर्षों से बंद था और करोड़ों की राशि, शासन के खाते से अलग पड़ी थी जिसकी जानकारी संबंधित कोषागार अधिकारियों को दी गयी और उचित कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया जिससे वह राशि वापस शासन के खाते में जा सके।
- शासन के लेखा से संबंधित और भी कई मुद्दे संबंधित कोषागार अधिकारियों के समक्ष रखे गए जिसके सुधार के लिए उचित मार्गदर्शन कोषागार अधिकारियों को दिया गया।

* * *

ऑनलाइन पेंशन अदालत :

इसके अतिरिक्त पेंशन विंग ने पहली बार वर्धा और गोंदिया कोषागार के लिए ऑनलाइन पेंशन अदालत को संयुक्त निदेशक लेखा और कोषागार के कार्यालय में, कलेक्टर कार्यालय, नागपुर परिसर में दिनांक 11/09/2023 तथा 12/09/2023 को आयोजित किया। अदालत को अच्छी तरह से प्रतिसाद मिला क्योंकि इसमें कोषागार अधिकारियों और संवितरण अधिकारियों ने भाग लिया। स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक प्रचार वर्धा और गोंदिया जिलों के संबंधित कलेक्टरों द्वारा किया गया।

निम्नलिखित अधिकारियों ने ऑनलाइन अदालत में भाग लिया:-

1. उप महालेखाकार डॉ. भूषण भिरुड
2. श्रीमती सुगंधी अनंत नारायण, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
3. श्री जी. एम. पौनिकर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
4. श्री डी. एम. कोटुरवार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
5. श्री एस. एम. तलनिकर, सहायक लेखा अधिकारी
6. श्री के. ए. शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी
7. श्री पी. पी. केदारपवार, सहायक लेखा अधिकारी
8. श्री पी. वी. पांडे, सहायक लेखा अधिकारी
9. श्रीमती आशा बैद, सहायक लेखा अधिकारी
10. श्री आशीष खोत, लेखापाल

ऑनलाइन पेंशन अदालत का उद्घाटन माननीय उप महालेखाकार डॉ भूषण भिरुड, द्वारा किया गया। वर्धा कोषागार के लिए 11/09/2023 को सुबह 10.00 बजे और 12.09.2023 को गोंदिया कोषागार के लिए

सुबह 10.00 बजे उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक लेखा और कोषागार, नागपुर, कोषागार अधिकारी, वर्धा और कोषागार अधिकारी गोंदिया और संवितरण अधिकारीगण उपस्थित थे। संवितरण अधिकारीगण और कोषागार अधिकारी ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर को मार्गदर्शन करने और पेंशनरों की समस्याओं को हल करने में पहल करने के लिए धन्यवाद दिया। उप महालेखाकार ने ऑनलाइन पेंशन अदालत के संचालन में तकनीकी सहायता का समर्थन करने के लिए कलेक्टर, नागपुर, जेडीएटी, नागपुर को धन्यवाद दिया। उद्घाटन संबोधन के पश्चात, पेंशन अधिवक्ता ने संवितरण अधिकारीगण के लिए कार्यशाला के प्रथम सत्र की शुरुआत की।

1. प्रारंभ में, संवितरण अधिकारी के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। पेंशन मामलों को प्रस्तुत करने के निर्देश, इस कार्यालय द्वारा लिए गए निष्कर्षों पर अनुपालन प्रस्तुत करने के संबंध में श्रीमती सुगंधी अनंत नारायण, वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने मार्गदर्शन किया। उन्होंने इस कार्यालय में पेंशन मामलों को प्रस्तुत करते हुए विभिन्न जी.आर. के माध्यम से, शासन के प्रशासनिक विभागों द्वारा जारी निर्देशों का पालन करने पर भी बल दिया। पेंशन मामलों को प्रस्तुत करते समय संवितरण अधिकारीगण द्वारा की जानेवाली आम गलतियों एवं उसके परिणामस्वरूप मूल में प्रस्ताव वापस करने के लिए आने वाली कठिनाईयों को संवितरण अधिकारीगण के संज्ञान में लाया गया। पेंशन मामलों से निपटने के लिए एवं अदालत के आदेशों की अवमानना से बचने के लिए निर्देश जारी किए गए।

2. इसके पश्चात, पेंशनरों की शिकायतों को सम्मिलित किया गया। वर्धा जिले के लिए 36 लौटाए मामलों की सूची और गोंदिया जिले के लिए 51 लौटाए मामलों को पहले ही कोषागार अधिकारियों को भेज दिया गया था। वर्धा जिले में लगभग 20 पेंशन भोगी और 10 संवितरण अधिकारीगण और गोंदिया जिले के 25 पेंशन भोगी और 9 संवितरण अधिकारियों ने पेंशन अदालत में भाग लिया। उनकी शिकायतों पर चर्चा कर उन्हें मार्गदर्शन किया गया। वर्धा के कुल 5 पेंशन मामलों और गोंदिया के 6 मामलों अदालत के दौरान निपटाए गए। शेष मामलों में संवितरण अधिकारियों को इस कार्यालय द्वारा लिए गए निष्कर्षों पर उचित अनुपालन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। इन सभी शिकायतों में यह देखा गया कि इन कार्यालयों में मामले पेंडेसी की आवश्यक प्रक्रिया के पूर्ण होने के कारण लंबित थे जहाँ औपचारिकताएं जैसे कि दो पत्नी मामले, संरक्षकता के मामले जहाँ माता-पिता की मृत्यु हो जाती है, विकलांग पेंशन मामलों के लिए चिकित्सा प्रमाणपत्र, स्कूल मान्यता प्रमाणपत्र की आवश्यकता एवं सरकार से सहायता प्राप्त स्कूलों को 100% अनुदान प्रमाणपत्र आदि सम्मिलित थे।

कलेक्टर नागपुर, जेडीएटी नागपुर, ट्रेजरी अधिकारियों और संवितरण अधिकारीगण के सहयोग से ऑनलाइन पेंशन अदालत का सफलतापूर्वक समापन हुआ।



“लेखापरीक्षा सप्ताह के उपलक्ष में पेंशन और जीपीएफ संबंधी कार्यशालाओं का सफल आयोजन”

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 16 नवंबर को ‘लेखापरीक्षा दिवस’ के रूप में मनाया जाता है। लेखापरीक्षा दिवस के उपरांत ‘ऑडिट सप्ताह’ के अनुपालन में प्रधान महालेखाकार कार्यालय, नागपुर की ओर से अमरावती जिला पुलिस विभाग के लिए पेंशन कार्यशाला दिनांक 02/11/2023 को पुलिस आयुक्त अमरावती कार्यालय में और दिनांक 03/11/2023 को बचत भवन में पेंशन अदालत का आयोजन किया गया। जिसमें पुलिस आयुक्त अमरावती, कलेक्टर अमरावती, जेडीएटी नागपुर, कोषागार अधिकारी और डीडीओ सम्मिलित थे।

तदोपरान्त कार्यालय की ओर से नागपुर पुलिस विभाग के लिए भी दिनांक 21 नवंबर 2023 को पुलिस आयुक्त कार्यालय, नागपुर तथा 28 नवंबर 2023 को औरंगाबाद डिवीजन के पुलिस विभाग के लिए पुलिस आयुक्त कार्यालय, औरंगाबाद के सहयोग से पेंशनभोगियों और डीडीओ एवं जीपीएफ अभिदाताओं के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इन कार्यशालाओं में, अपूर्ण पेंशन व जीपीएफ आवेदन, कार्यालय द्वारा ली गई आपत्तियों पर डीडीओ/पीएसए से देरी से अनुपालन, नियमित तथा पारिवारिक पेंशन मामलों के साथ-साथ शारीरिक रूप से विकलांग पेंशन मामलों जैसे विभिन्न कारक जिसके कारण सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन लाभ प्राधिकृत करने में देरी होती है, इस पर विशेष रूप से मार्गदर्शन किया गया।

इसी क्रम में दिनांक 21 नवंबर 2023 को संयुक्त निदेशक, लेखा व कोषागार, नागपुर के संयुक्त उपक्रम के तहत संयुक्त निदेशक लेखा व कोषागार नागपुर कार्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का लाभ लंबित डीसी बिल तथा उपयोगिता प्रमाणपत्रों के बिलों के निपटान आदि के लिए उपयोगी साबित हुआ।

कार्यालय के हितधारक जैसे कि पेंशनर, डीडीओ, जीपीएफ-अभिदाता (कार्यरत और सेवानिवृत्त) और पेंशनर आदि ने कार्यशालाओं का भरपूर लाभ उठाकर इसे सफल बनाया।



मा. प्रधान महालेखाकार पुलिस आयुक्त कार्यालय, नागपुर में पेंशन कार्यशाला में संबोधित करते हुए।



अधिकारी एवं कर्मचारीगण अमरावती जिला पुलिस विभाग में पेंशन कार्यशाला का संचालन करते हुए।

ऑडिट सप्ताह अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन

कार्यालय में दिनांक 16 नवंबर 2023 से 24 नवंबर 2023 तक 'ऑडिट सप्ताह' आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पेंशनर्स के लिए 'पेंशनर्स समाधान' कार्यक्रम का आयोजन, कार्यालय के कॉन्फेरेंस हॉल में सुबह माननीय प्रधान महालेखाकार महोदया के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ जिसमें पेंशनर्स की विविध समस्याओं का निराकरण करने संबंधी जानकारी पेंशनर्स को वीडियो कॉल के माध्यम से दी गई। साथ ही पेंशनर्स को उनकी समस्याओं का निराकरण करने के लिए कार्यालय का टोल फ्री नंबर भी प्रदान किया गया।



पेंशन समाधान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदया



दीप प्रज्ज्वलीत करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदया सहित वरिष्ठ उप महालेखाकार



पेंशनर्स समाधान कार्यक्रम के अवसर पर वीडियो कॉल के माध्यम से संपर्क करते हुए



मा. प्रधान महालेखाकार प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए।

इसी श्रृंखला में दूसरा कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक पेंशन पेमेंट ऑर्डर 'पेंशन आपल्या दारी' का अनावरण शाम को बहुउद्देशीय सभागृह में किया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदया के साथ लेखा व कोषागारे नागपुर की सहसंचालक श्रीमती ज्योती भोंडे प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में सेवानिवृत्त हुए पेंशनरो को ई-पीपीओ की पीडीएफ फाईल प्रधान महालेखाकार महोदया के शुभ हस्ते प्रदान की गई तथा 1 दिसंबर 2023 से शुरू हो रही ई-पीपीओ प्रणाली की संपूर्ण जानकारी दी गई जिसमें अब पेंशनरो को घर बैठे ई-पीपीओ के लाभ प्राप्त होंगे। कार्यक्रम में स्वयं पेंशनरो ने अपना मनोगत व्यक्त किया गया जिसमें उन्होंने

कार्यालय की इस नई कार्यप्रणाली की भरपूर प्रशंसा की। उक्त दोनों कार्यक्रमों का कव्हेरेज मुंबई दूरदर्शन के सहाय्री चॅनेल पर प्रसारित किया गया।



ऑडिट सप्ताह अंतर्गत मुख्य द्वार पर की गई सजावट।



मा. प्रधान महालेखाकार 'पेंशन आपल्या दारी' कार्यक्रम पर दीप प्रज्वलीत करते हुए।



वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा मा. प्रधान महालेखाकार का स्वागत।



लेखा व कोषागारे नागपुर की सहसंचालक श्रीमती ज्योती भोंडे प्रमुख अतिथि का स्वागत करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन व हकदारी)



मा. प्रधान महालेखाकार पेंशनर को पी.पी.ओ. प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए।



मा. प्रधान महालेखाकार पेंशनर को ई-पी.पी.ओ.की पीडीएफ प्रदान करते हुए।



मा. प्रधान महालेखाकार पेंशनर को ई-पी.पी.ओ.का पीडीएफ प्रदान करते हुए।



मा. प्रधान महालेखाकार द्वारा ई-पी.पी.ओ. का ऑनलाइन शुभारंभ।

चित्रकला प्रतियोगिता

ऑडिट सप्ताह के अंतर्गत ही दिनांक 22 नवंबर, 2023 को बच्चों के लिए 'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें विविध स्कूलों के 6 साल से 19 साल तक की आयु के कुल 102 बच्चों ने बड़े उत्साह और स्फूर्तता से भाग लिया। विजेता बच्चों को क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान की महानिदेशक महोदया सुश्री लता मलिकार्जुन, प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री जया भगत तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर के महालेखाकार महोदय श्री आर. टी. वेंकटासामी के शुभ हस्ते नगद पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।



निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 24 नवंबर 2023 को कार्यालय के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन बहुउद्देशीय सभागृह में किया गया जिसमें कुल 44 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – 2023

कार्यालय में दिनांक 21 जून 2023 को जनार्दन स्वामी योग अभ्यास मंडल से प्राणायाम पर व्याख्यान और प्रात्यक्षिक हेतु श्रीमती सीमा मुलतानी, श्री रमेश मुलतानी तथा श्री रमेश त्रिवेदी को आमंत्रित किया गया। इस आयोजन में उपस्थित प्रशिक्षकों ने 'योग का अपने जीवन में महत्व क्या है?' यह समझाते हुए कार्यालय के लगभग 200 से अधिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रात्यक्षिक दिखाया जिसका लाभ सभागृह में उपस्थित सभी ने उठाया। इस समारोह में वरिष्ठ उप महालेखाकार व राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय खंडारे, उप महालेखाकार श्री भूषण भिरुड सहित प्रभारी कल्याण अधिकारी श्री कार्लटन पिन्हेरो और सेवानिवृत्त कल्याण अधिकारी श्री अशोक चानोरे ने भी भाग लिया।



मा. श्री रमेशजी मुलतानी योग दिवस पर योगाभ्यास कराते हुए।



योग दिवस पर योगाभ्यास करते हुए वरिष्ठ अधिकारीगण

मेडिकल कैंप

इंदिरा गांधी शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय व रुग्णालय, नागपुर द्वारा कार्यालय के बहुउद्देशीय सभागृह में दिनांक 23 जून 2023 को 'मोटापा' इस विषय पर मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। असोसिएट प्रोफेसर डॉ. तिलोतमा के साथ कुल 12 तज्ञ डॉक्टरों के मार्गदर्शन में मोटापे से संबंधित उपचार के लिए बी.पी. (उच्च एवं निम्न रक्तचाप), मधुमेह एवं अन्य व्याधियों पर कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का तज्ञ डॉक्टरों ने विविध बीमारियों तथा अपने कद और वजन



वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा असोसिएट प्रोफेसर डॉ. तिलोतमा का सजावटी पौधा देकर स्वागत करते हुए।



कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण हेतु मेडिकल कैंप का आयोजन।



मेडिकल कैंप के दौरान जाँच करते हुए कार्मिक



मध्य में वरिष्ठ उप महालेखाकार के साथ उपस्थित सभी तज्ञ

के अनुसार रोज किस तरह का आहार लिया जाए, जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रहे, इस संबंध में उचित मार्गदर्शन किया। कार्यालय के 100 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस मेडिकल कैंप का लाभ उठाया। इस आरोग्य संबंधित कैप में वरिष्ठ उप महालेखाकार व राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय खंडारे, उप महालेखाकार श्री भूषण भिरुड सहित प्रभारी कल्याण अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अंगदान दिवस और शपथ ग्रहण समारोह

मुख्यालय के निर्देशानुसार 3 अगस्त 2023 को राष्ट्रीय अंगदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अंगदान संबंधी प्रेरक तथा अंगदान का महत्व दर्शाते चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन कार्यालय के बहुउद्देशीय सभागृह में किया गया। इस प्रदर्शनी को कार्यालय के लगभग सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भेट दी और इस अंगदान दिवस को सफल बनाया। साथ ही इस कार्यक्रम के साथ कार्यालय के सभी कार्मिकों को शपथ भी दिलाई गई।



“अंगदान दिवस” के अवसर पर शपथ लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण, साथ ही चित्रों के माध्यम से विभिन्न अंगों को दान करने के निर्देश।

15 अगस्त 2023 को देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में, 15 अगस्त 2023 को सुबह ध्वजारोहण के बाद कार्यालयीन कर्मचारियों द्वारा विविध देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति की गई। इसमें कुमारी पूनम निमजे, श्रीमती अपर्णा सिंह, श्रीमती प्रीति धनगड़, श्रीमती अमृता गुप्ता, श्री राम खंगन, श्री रमेश अय्यर, श्री राधेश्याम लांबट सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में कार्यालयीन कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक देशभक्ति से ओत-प्रोत सुमधुर गीत प्रस्तुत किए गए जिसका आनंद सभागृह में उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने लिया। कार्यक्रम का मंच संचालन कल्याण सहायक श्री मोहम्मद सलीम ने किया।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन-वर्ष 2023-24 का आयोजन

प्रधान महालेखाकार(लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर के कार्यालय में परंपरा अनुसार इस वर्ष भी दिनांक 06 मार्च 2024 से 08 मार्च 2024 तक स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्नेह सम्मेलन का उद्घाटन प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री जया भगत एवं मुख्य अतिथि श्रीमती रुपाली कोंडेवार-मोरे (सुप्रसिद्ध सिने तारिका एवं नाटक कलाकार) द्वारा किया गया। स्नेह सम्मेलन में प्रश्न-मंच, हिंदी नाटक, फैशन-शो, ऑर्केस्ट्रा तथा अन्य विविध मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विविध खेलों एवं प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। दिनांक 08 मार्च 2024 को प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि सुश्री लता मलिकार्जुन, महानिदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, नागपुर एवं प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री जया भगत द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। दिनांक 08 मार्च 2024 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री जया भगत की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें डॉ. स्वाति सारडा ने महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन किया।



वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2023-24 के उद्घाटन समारोह में मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि श्रीमती रुपाली कोंडेवार-मोरे, सुप्रसिद्ध सिने तारिका एवं नाटक कलाकार, विशेष अतिथि सुश्री लता मलिकार्जुन, महानिदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, नागपुर और संरक्षक सुश्री जया भगत, प्रधान महालेखाकार सहित श्रीमती सारीका पाटिल, कल्याण अधिकारी



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में कार्यालय के प्रांगण में प्रधान महालेखाकार सुश्री जया भगत सहित महिला अधिकारी व कर्मचारीगण



कार्यालय के बहुउद्देशीय सभागृह में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में डॉ. स्वाति सारडा ने स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन किया जिसमें मा. प्रधान महालेखाकार एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार, सहित अधिकारी व कर्मचारीगण ने भाग लिया।

राजभाषा समाचार

भारत सरकार की राजभाषा नीति के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सतत कार्य किए जाते हैं। सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु अधिकारियों और कर्मचारियों को जहाँ एक ओर प्रोत्साहित किया जाता है वहीं उन्हें राजभाषा संबंधित नियमों, नीतियों, अधिनियमों, धाराओं से पूर्णरूप से अवगत करा कर, उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। वर्तमान में, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम अनुसार दिए गए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किए गए सतत प्रयासों के फलस्वरूप ही कार्यालय द्वारा 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से किए गए हिंदी के पत्राचार का निर्धारित समेकित 90% प्रतिशत से अधिक लक्ष्य प्राप्त किया गया है।

कार्यालय में राजभाषा नीति के प्रमुख निदेशों को ध्यान में रखते हुए तथा वार्षिक कार्यक्रम के प्रमुख मदों के अनुपालन को सुनिश्चित करते हुए निम्नवत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की गई है।

1) कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन



जून-2023 और सितंबर-2023 को समाप्त तिमाही में कुल 2 बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट की मदवार समीक्षा की गई। प्रधान महालेखाकार महोदया ने कार्यालय से 'क' 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से किए गए हिंदी के पत्राचार का समेकित 90% प्रतिशत से अधिक के लक्ष्य को प्राप्त करने पर संतोष व्यक्त करते हुए इस पर उत्तरोत्तर वृद्धि करने के निर्देश दिए।

2) हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कार्यालय में हिंदी कार्यशालाओं को आयोजित करने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना, हिंदी में किए जाने वाले कार्य की गुणवत्ता को उन्नत करना और उन्हें हिंदी के कार्य में दक्ष बनाना। इसके साथ ही कार्यालयीन व्यावहारिक कठिनाइयों को भी दूर करना और भारत सरकार की राजभाषा नीति संबंधित समय-समय पर जारी अद्यतन सूचनाओं से अवगत कराना। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्यालय में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है ताकि कार्मिक राजभाषा नीति के नियमों/अधिनियमों का अनुपालन कर अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।



व्याख्यान देते हुए श्री अनिल त्रिपाठी, सहायक निदेशक (राजभाषा) आयकर विभाग, नागपुर



श्रीमती तृती टेम्भुर्ने, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर प्रशिक्षण देते हुए।



आंतरिक संकाय प्रभारी हिन्दी अधिकारी श्री प्रशांत त्रि. कपाले



आंतरिक संकाय वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री विष्णु उमाकांत रामटेके

राजभाषा विभाग के नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक पूर्ण कार्य दिवस की है जिसमें न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करना है जिसका पूर्ण-रूपेण पालन किया जाता है।

कार्यालय द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष 2023-2024 में 4 कार्यशालाएं आयोजित की गईं। जिसमें लगभग 20 से 25 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसके अंतर्गत 75 मिनट के चार सत्रों आयोजन किया गया। प्रथम हिंदी कार्यशाला में संकाय सदस्यों के रूप में श्री विष्णांत रामटेके, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक और श्री अनिल सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक। द्वितीय हिंदी कार्यशाला में संकाय सदस्यों के रूप में श्री अनिल त्रिपाठी, सहायक निदेशक (राजभाषा) आयकर विभाग, नागपुर और श्रीमती तृप्ती टेम्भुर्ने, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर, बाह्य संकाय के रूप में आमंत्रित थे। आंतरिक संकाय के रूप में श्री प्रशांत कपाले, प्रभारी हिंदी अधिकारी और श्री विष्णांत उ. रामटेके, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक थे। उक्त सभी संकायों ने व्याख्यान देते हुए बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया। तृतीय और चतुर्थ हिंदी कार्यशाला में श्री तेजवीर सिंह, हिंदी अनुवादक, निदेशक लेखा (डाक) का कार्यालय नागपुर ने बाह्य संकाय तथा श्री विष्णांत उ. रामटेके, वरिष्ठ अनुवादक एवं कुमारी प्रियंका, कनिष्ठ अनुवादक ने आंतरिक संकाय के रूप में मार्गदर्शन किया।

3) हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संचालित पारंगत पाठ्यक्रम का आयोजन:

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना उपसंस्थान, नागपुर द्वारा समय-समय पर जारी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार नियमित रूप से अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है। इस वर्ष 2023-2024 में कार्यालय से कुल 12 कर्मिकों को पारंगत के लिए नामित किया गया जिसमें से 7 अधिकारी एवं 5 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण की।

4) राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी संकल्प का अनुपालन

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी संकल्प के सन्दर्भ में मुख्यालय के निर्देशानुसार सभी कर्मिकों को आदेश दिए गए हैं कि महामहिम राष्ट्रपति जी के आदेश का सत्ता से अनुपालन किया जाए। संकल्प में उल्लेखित सभी मर्दों के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं और वर्तमान में निम्न मर्दों पर अनुपालना की जा रही है और आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

- क) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागजात को द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है।
- ख) राजभाषा नियम, 1978 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर शत-प्रतिशत हिंदी में दिया जाना अनिवार्य है।
- ग) वेब साइट द्विभाषी होनी चाहिए और इसे अद्यतन करते समय हिंदी के पृष्ठों को भी अनिवार्य रूप से अपलोड किया जाए।

5) वार्षिक कार्यक्रम 2023-2024 की अनुपालना

वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालना हेतु कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों में, विस्तृत विचार-विमर्श व आवश्यक निर्णय लिए जाने हेतु कार्य सूची में मुख्य बिन्दुओं को सम्मिलित किया गया और प्रत्येक बिंदु पर समिति के सदस्यों द्वारा क्रमबद्ध रूप से चर्चा की गई। विचार-विमर्श के दौरान प्रस्तुत सुझावों पर माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा आदेश जारी किए गए। इसके साथ ही प्रत्येक अनुभाग में वार्षिक कार्यक्रम का परिचालन किया गया। वार्षिक कार्यक्रम 2023-2024 के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जाँच बिंदु स्थापित कर अनुदेश दिए गए जिसका पूर्णरूपेण अनुपालन किया जा रहा है।

7) हिंदी दिवस समारोह-2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

हिंदी दिवस समारोह-2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 14-15 सितम्बर, 2023 को पुणे (महाराष्ट्र) में किया गया। जिसमें कार्यालय से वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय एम. खंडारे और प्रभारी हिन्दी अधिकारी श्री प्रशांत टी कपाले उपस्थित थे।

आप सभी को यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग की श्रेणी में 2022-2023 का 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' का प्रथम पुरस्कार, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को प्रदान किया गया।



8) एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 23 नवंबर, 2023 को मुंबई में मध्य एवं पश्चिमी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय से प्रभारी हिन्दी अधिकारी श्री प्रशांत टी कपाले ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उत्कृष्ट कार्य करने के लिए केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, सरकारी उपक्रमों और बैंकों के अधिकारी तथा कर्मचारियों को उपस्थित

मान्यवरों के हस्ते सम्मान चिन्ह और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के समापन के अवसर पर राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुली आर्या और संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जॉली सहित केंद्र सरकार और केन्द्रीय कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।



9) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(नराकास), नागपुर (कार्यालय-2)

नराकास द्वारा प्रति छमाही में 2 बैठकों का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी और राजभाषा संबंधित अधिकारी व कर्मचारी अनिवार्य रूप से अपनी सहभागिता दर्ज करते हैं जिसमें छमाही हिन्दी प्रगति रिपोर्ट पर गहन विचार-विमर्श कर हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता है साथ ही वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित मापदंडों/लक्ष्यों को भी प्राप्त करने हेतु दिशा निर्देश दिए जाते हैं। दिनांक 13/06/2023 को आयोजित छमाही बैठक में वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) व

राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय मो. खंडारे सहित वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री विष्णांत उ. रामटेके और कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री अनिल सिंह ने भाग लिया।

नागपुर स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2) के सदस्य कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार और हिन्दी से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जोड़ने के लिए दिनांक 28/12/2022 से 23/01/2023 के मध्य 10 हिन्दी प्रतियोगिताएं एवं 01 राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह से एवं बढ़-चढ़कर भाग लिया। जिसमें कार्यालय से स्लोगन प्रतियोगिता में सहायक लेखा अधिकारी श्री टी. के. बालकृष्णन को प्रोत्साहन-1 पुरस्कार, स्व-रचित काव्यपाठ प्रतियोगिता में लेखापाल श्री बाल बिहारी प्रजापति को तृतीय पुरस्कार और हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता में लेखापाल श्री गौरव सिंह परिहार को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।



पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री गौरव सिंह परिहार, लेखापाल



इसके अतिरिक्त दिनांक 07 नवंबर, 2023 को आयोजित पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बाल बिहारी प्रजापति, लेखापाल राजभाषा कार्यशाला में कार्यालय के वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री विष्णांत उ. रामटेके और कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक कु प्रियंका ने भाग लिया।

9) कार्यालयीन गृह-पत्रिका 'किरण' का प्रकाशन

कार्यालय की राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार संबंधी गतिविधियों के साथ-साथ अन्य कार्यालयीन, सांस्कृतिक और रोचक प्रकार की विविध गतिविधियों को 'किरण' पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए सामग्री आमंत्रण, एकत्रीकरण, सामग्री का चयन, सामग्री को जांचना-सुधारना, संयोजन, संपादन, मुद्रण सम्बन्धी अनेक कार्य, मुद्रण की अद्यतन तकनीक को अपनाना, कागज, रंगों का तालमेल एवं चयन-संयोजन इत्यादि के साथ-साथ अधिकारियों सहित राजभाषा विभाग के समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सहित अन्य कार्य निष्पादित होते हैं। जिसमें अन्य कई घटक भी महत्वपूर्ण होते हैं अर्थात् पत्रिका का प्रकाशन एक सुनियोजित सृजनात्मक कार्य है जिसे पूर्ण रूप से निष्पादित किए जाने का प्रयास निरंतर किया जाता है।



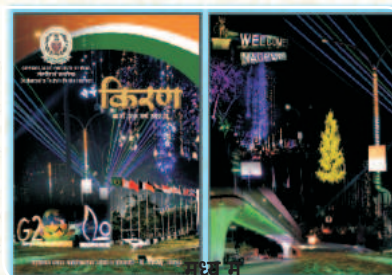
किरण पत्रिका अंक 40 का विमोचन करते हुए मध्य में प्रधान महालेखाकार श्री प्रवीर कुमार सहित वरिष्ठ अधिकारीगण व कर्मचारी



किरण पत्रिका के विमोचन के अवसर पर बनाई गई रंगोली

किरण अंक 40 में मुख्य रूप से G-20 और C-20 जैसे आयोजनों/कार्यक्रमों को ध्यान में रखकर पत्रिका के प्रकाशन का कार्य किया गया है जो इसके मुखपृष्ठ और अंतिम पृष्ठ से भलीभांति

अभिव्यक्त होता है। इस प्रकार कार्यालय



किरण अंक 40 का मुख पृष्ठ व अंतिम पृष्ठ

की गृह पत्रिका 'किरण' विगत चार दशकों से हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

हिन्दी पखवाड़ा-2023 का सफल आयोजन

गत वर्ष हिंदी दिवस-2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन सूरत, गुजरात में किया गया था। इस दो दिवसीय अत्यंत सफल आयोजन में देशभर के 10 हजार से ज्यादा कार्मिकों ने प्रतिभागिता की। राजभाषा विभाग द्वारा किया गया यह आयोजन संविधान सभा द्वारा सौंपे गए संवैधानिक उत्तरदायित्वों और संविधान की भावना के अनुरूप तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना की नीति के साथ राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने और इसके प्रयोग को बढ़ाने के प्रयास था।

अतः पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का संयुक्त आयोजन अत्यंत भव्य एवं गरिमामयी रूप से माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्रीजी की अध्यक्षता में 14 सितंबर, 2023 को हिंदी दिवस तथा 14 एवं 15 सितंबर, 2023 को तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन पुणे, महाराष्ट्र में किया गया। जिसमें कार्यालय के वरिष्ठ उपमहालेखाकार व राजभाषा अधिकारी सहित प्रभारी हिंदी अधिकारी व पर्यवेक्षक ने भाग लिया।

हिंदी का उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करने और इस कार्यक्रम में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्रीजी की गरिमामयी उपस्थिति को देखते हुए यह अनुरोध किया गया था कि सभी विभाग/मंत्रालय/बैंक/उपक्रम आदि हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम 14 से 29 सितंबर के दौरान ही मनाना सुनिश्चित करें और विभिन्न कार्यालयीन प्रतियोगिताएं इसी दौरान ही आयोजित की जाएं। अतः उक्त अनुदेशों को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में दिनांक 18 सितंबर 2023 से 27 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा, 2023 के दौरान विभिन्न लिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसका एकमात्र उद्देश्य हिंदी में मौलिक कार्य जैसे टिप्पणी, मसौदे एवं पत्राचार को बढ़ाना है।



समारोह को संबोधित करती हुई मा. प्रधान महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, महाराष्ट्र, नागपुर में दिनांक 18 सितंबर, 2023 को 'हिंदी पखवाड़ा-2023' के उपलक्ष में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के उद्घाटन समारोह की अध्यक्ष, माननीय प्रधान महालेखाकार सुश्री जया भगत के शुभ हस्ते किया गया। जिसमें वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) व राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय मो. खंडारे सहित वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन लेखा व वीएलसी) डॉ. भूषण बी. भिरुड और प्रभारी कल्याण अधिकारी श्री कार्लटन पिन्हेरो उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन, स्वागत-गीत और सजावटी-पौधों से स्वागत करने के साथ हुआ। कार्यक्रम का उत्कृष्ट संचालन सहायक लेखा अधिकारी श्रीमती सुमन मिश्रा ने तथा आभार प्रदर्शन कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक कु. प्रियंका द्वारा किया गया। कार्यक्रम में स्वागत-गीत की प्रस्तुति कल्याण सहायक श्री सलीम शेख, वरिष्ठ लेखापाल कु. पूनम निमजे, लेखापाल श्रीमती रुपाली गुप्ता और श्रीमती अपर्णा शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विभिन्न समितियों के अधिकारी एवं कर्मचारियों सहित राजभाषा अनुभाग के कर्मियों ने अथक प्रयास किया। इस कार्यक्रम में बहुतायत में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।



गीत प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण



मा. प्रधान महालेखाकार का स्वागत करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार



बहुउद्देशीय सभागृह में उपस्थित अधिकारी व कर्मचारीगण

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्ष माननीय प्रधान महालेखाकार महोदया ने कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी भाषा सभी भाषा-भाषियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है और अन्य भाषाओं के शब्दों के साथ तालमेल बनाकर सदैव आगे बढ़ने का कार्य करती है। इस प्रकार हमें हिंदी में कार्य करने हेतु हमेशा अग्रणी रहना चाहिए। साथ ही उन्होंने कार्यालय की अन्य गतिविधियों जैसे ई-पीपीओ, ई-डाक, ई-वॉउचर आदि के कार्यान्वित होने पर भी बल दिया।

कार्यक्रम के भव्य शुभारंभ के पश्चात ‘निबंध प्रतियोगिता’ का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी



प्रतियोगिताओं के उद्घाटन समारोह के पश्चात निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

भाषियों और हिंदीत्तर भाषियों के पृथक विषय रखे गए जिस पर कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह से भाग लेकर तल्लीनता से निबंध लिखा।

दिनांक 20 सितंबर, 2023 को ‘टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता’ का आयोजन हिंदी भाषियों और हिंदीत्तर भाषियों के लिए पृथक रूप से



प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लेते अधिकारी/कर्मचारी

किया गया जिसमें अधिकारियों और कर्मचारियों ने कार्यालयीन टिप्पणी, परिपत्र और सामान्य आदेशों के प्रारूप को तैयार कर लेखन-कौशल को प्रस्तुत किया।

दिनांक 21 सितंबर, 2023 को ‘चित्र पर आधारित कहानी लेखन’ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जो सभी कार्मिकों के लिए समान थी। इसमें सभी चित्रों पर समग्र रूप से तालमेल स्थापित कर शीर्षक सहित कहानी प्रस्तुत करना था जिसमें सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अपना अलग-अलग दृष्टिकोण अंकित कर कहानी प्रस्तुत की।



प्रोजेक्टर पर चित्र को दिखाते हुए प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 22 सितंबर, 2023 को ‘एक से अनेक शब्द और राजभाषा प्रश्नोत्तरी’ प्रतियोगिता में एक शब्द के अनेक पर्यायवाची और समानार्थी शब्द लिखने थे। साथ ही राजभाषा हिन्दी संबंधी नियमों, अधिनियमों, धाराओं और मुख्य तिथियों, 1963 की धारा 3(3) के द्विभाषी कागजातों संबंधी जानकारी से प्रश्न-पत्रों के माध्यम से अवगत कराया गया।

अंत में, दिनांक 25 सितंबर, 2023 को हिंदी भाषियों और हिंदीत्तर भाषियों के पृथक ‘सरल अनुवाद प्रतियोगिता’ का आयोजन किया गया जिसमें अंक, प्रशासनिक शब्द, लघु-अनुवाद और दैनिक कामकाज में प्रयोग किए जाने वाले वाक्यांशों से कार्मिकों को अवगत कराया गया। सभी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के

प्रतिभाशाली अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर हिंदी पखवाड़ा-2023 के समारोह को सफल, रोचक व सार्थक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

हिंदी पखवाड़े के समापन और पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, नागपुर की महानिदेशक महोदया माननीय सुश्री लता मलिकार्जुन विराजमान थी। समारोह की अध्यक्षता, माननीय वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) व राजभाषा अधिकारी श्री अक्षय मो. खंडारे द्वारा की गई। हिंदी पखवाड़ा के समापन और पुरस्कार वितरण समारोह पर वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री आर. वाय. सेलुकर सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।



समापन समारोह में दीप प्रज्वलीत करती हुई क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, नागपुर की महानिदेशक सुश्री लता मलिकार्जुन



मंच संचालन करती हुई सहायक पर्यवेक्षक सुश्री सुषमा काले



मा. महानिदेशक का स्वागत करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार



मा. गृहमंत्रीजी का संदेश पढ़ते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार



गीत प्रस्तुत करते हुए कल्याण सहायक श्री सलीम शेख



मा. महानिदेशक महोदया समारोह को संबोधित करते हुए।



आभार प्रकट करते हुए कु. प्रियंका, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

राजभाषा चलित शील्ड पुरस्कार योजना:

कार्यक्रम का आकर्षक पक्ष यह भी था कि कार्यालय में प्रतिवर्ष हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले अनुभागों के मध्य चलित शील्ड योजना चलाई जाती है। जिसका एकमात्र उद्देश्य कार्मिकों में हिंदी के प्रति अधिकाधिक कार्य करने की भावना का निर्माण करना ताकि वे अपना दैनंदिन कार्य निरंतर हिंदी में ही करने के लिए प्रोत्साहित हो। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु चलित शील्ड योजना चलाई जाती है।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभागों को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। अतः इस वर्ष अनुभागीय शील्ड पी.आर.-10 अनुभाग को एवं प्रोत्साहन शील्ड निर्माण विविध-1 एवं एल एण्ड एस अनुभागों को प्रदान की गई।



अनुभागीय शिल्ड प्राप्त करते हुए अनुभाग अधिकारी



मा. महानिदेशक द्वारा प्रोत्साहन शिल्ड प्राप्त करते हुए अनुभाग के अधिकारी/कर्मचारी



द्वितीय प्रोत्साहन शिल्ड प्राप्त करते हुए अनुभाग के अधिकारी/कर्मचारी

नकद पुरस्कार योजना:

हिंदी पखवाड़ा के दौरान ही कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाता है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग नई दिल्ली द्वारा वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यालय द्वारा, नकद पुरस्कार योजना को कार्यान्वित किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत कार्यालय कर्मी द्वारा अधिकाधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है जिसका गठित समिति द्वारा निरीक्षण किया जाता है। समिति द्वारा मूल्यांकन करने के पश्चात रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। अतः इस वर्ष 2022-2023 के लिए नकद प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत निम्न कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम पुरस्कार : श्रीमती मीना बोदेले, वरिष्ठ लेखापाल, **द्वितीय पुरस्कार :** श्री धनंजय अर्जुन वराडे, वरिष्ठ लेखापाल, श्री आशीष लक्ष्मण खोत, लेखापाल, श्री सलीम शेख, वरिष्ठ लेखापाल, **तृतीय पुरस्कार :** श्रीमती एस. एस. करगुटकर, लेखापाल, श्री फैय्याज अंसारी, वरिष्ठ लेखापाल, श्री महेश ईशी, लेखापाल, श्री बाल बिहारी प्रजापति, लेखापाल



प्रथम (1) द्वितीय (3) तथा तृतीय (4) नकद पुरस्कार प्रदान करते हुए

मा. महानिदेशक महोदया सहित उपस्थित वरिष्ठ उप महालेखाकार व वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा - 2023 को सफल बनाने में 1) समस्त वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री कार्लटन पिन्हेरो और श्रीमती वंदना तायडे 2) समस्त सहायक लेखा अधिकारी श्रीमती सुमन मिश्रा, श्रीमती शिल्पा जोशी, श्री अनिल वैष्णव 3) पर्यवेक्षक, श्रीमती मंजू श्री नायडू और प्रभारी हिंदी अधिकारी, श्री पी टी कपाले 4) सहायक पर्यवेक्षक श्रीमती सुषमा काले 5) समस्त वरिष्ठ लेखापाल श्रीमती विद्या पटवर्धन, श्री निलेश मत्ते, श्री सुनील मदने, श्री सुशील पवार, श्री संजय नैकैले, श्री अजय ठाकरे, श्री सतीश बांगड़कर, श्रीमती अमृता गुप्ता 6) समस्त लेखापाल कु पूनम निमजे, श्रीमती रुपाली गुप्ता, श्रीमती रिचा, श्री भानु प्रकाश गुलबाके तथा प्रसन्ना साखरे, लिपिक, श्री संजय निमजे, लिपिक श्री योगेश सोरगिले, एम.टी.एस और परोक्ष-अपरोक्ष रूप से अन्य कई अधिकारियों व कर्मचारियों का सक्रीय सहयोग रहा है। इसी के साथ एल एंड एस अनुभाग, कल्याण अनुभाग, मनोरंजन क्लब व कैटीन में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने भरपूर सहयोग दिया जिससे संपूर्ण हिन्दी पखवाड़ा उत्साह वर्धक और रोचक रहा।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करती मा. महानिदेशक महोदया



भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं निर्धारित लक्ष्य
“ख” क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों के लिए

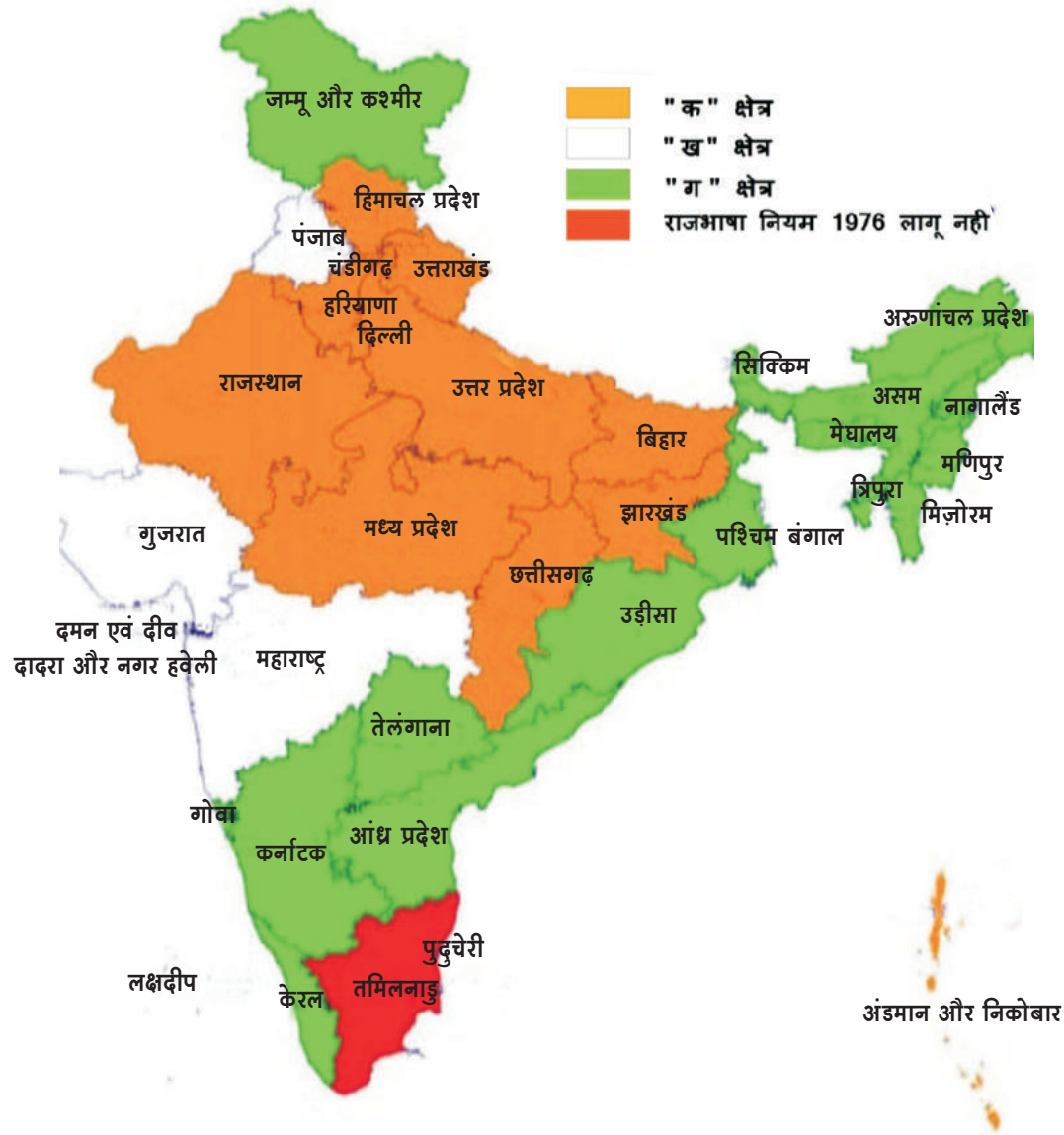
राजभाषा विभाग का वार्षिक कार्यक्रम			राजभाषा अधिनियम धारा 3(3) का अनुपालन
क्र.	विवरण	निर्धारित लक्ष्य	निम्नलिखित कागजात अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जाए :-
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल, फैक्स, संदेश आदि सहित)		(1) सामान्य आदेश (General Order)
	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%	(2) अधिसूचना (Notification)
	2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%	(3) प्रेस विज्ञप्ति (Press Release)
	3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%	(4) संविदा (Contract)
	4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	(5) करार (Agreement)
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	100%	(6) अनुज्ञप्ति (Licence)
3.	हिन्दी में टिप्पण	50%	(7) अनुज्ञा पत्र (Permit)
4.	हिन्दी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	55%	(8) सूचना और निविदा-प्रारूप (Notice & Form of Tender)
5.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	(9) संकल्प (Resolution)
6.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	(10) नियम (Rule)
7.	हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	(11) संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी कागज-पत्र (Official Papers laid down before House or the both the Houses of Parliament-Other than Report)
8.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	(12) संसद के एक या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative and other Reports laid down before House or the both the Houses of Parliament-Other than Report)
9.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	(13) प्रशासनिक प्रतिवेदन (Administrative Report send to higher offices.)

सामान्य आदेश में निम्नलिखित कागजात सम्मिलित हैं

- ✦ वे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और स्थायी प्रकार के हों।
- ✦ वे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में या उनके लिए हों।
- ✦ वे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।



भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य।
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

स्रोत : rajbhasha.gov.in

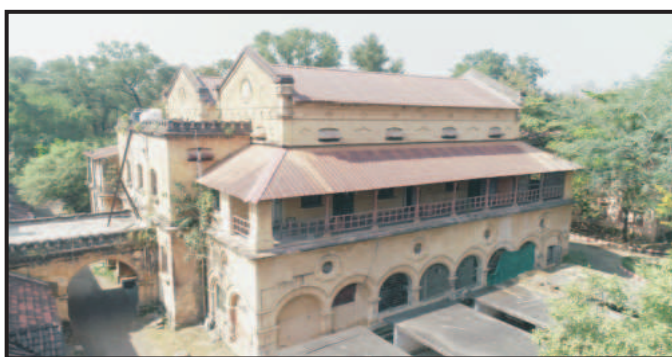
ऐतिहासिक इमारत



नई इमारत



ऐतिहासिक इमारत



नई इमारत



ऑडीट दिवस-2023 के अवसर पर ड्रोन द्वारा खींची गई नई व ऐतिहासिक पेंशन इमारत की फोटो